

भूमिका ।

ज्योतिषं नयनं स्मृतम् ।

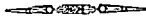
प्रिय पाठकगण ! आप सब महाशयोंको विदितही होगा कि, चारों वर्णोंको शिक्षा मणाठी बनलानेवाला दिव्यपुस्तक वेद है और उसके शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद और ज्योतिष यह छः अंग हैं और पडंग वेद पढ़ना ब्राह्मणोंसे लेकर वैश्यों पर्यंत तीनों वर्णोंका धर्म है उसही हमारे शिरोधार्य वेदका एक अंग ज्योतिष है उसके दो भाग हैं एक व्यक्त कहिये प्रत्यक्ष दृष्टफल ग्रहण अस्तोदयादि दूसरा अव्यक्त कहिये अदृष्ट भविष्यफल जातक और दर्ष-फलादिक. अब यहां अपनेको जातक के निषे विचार कर्तव्य है कि, माणिके यावज्जन्ममें जो शुभ किंवा अशुभ फल होता है कहिये कौन २ समयमें जिसको लाभ किंवा हानि जय किंवा पराजय किससे सुखोत्पत्ति किंवा पीडा और कौन समयमें रोगादिकों से मरण प्रायः संकट और शरीरसुख, कुटुम्बसुख, भ्रातृसुख, मित्रसुख, पुत्रसुख, कलत्रसुख, पितृमातृसुख, इत्यादि बातोंका ज्ञान जिस ग्रंथसे होता है कहिये ज्योतिषोलोग जिस ग्रंथके आधारसे जन्मपत्रिका लिखते हैं उसको जातक ऐसा कहते हैं संस्कृतमें जातक पर बहुत ग्रंथ हैं परंतु सबमें प्रसिद्ध और विद्वन्मान्य ऐसा ग्रंथ केशवाचार्यकृत जातकपद्धति जिसको "केशवीजातक" कहते हैं सो यह ग्रंथ संस्कृतभाषामें है इस वास्ते उसका उपयोग मनुष्योंको बहुत होता नहीं इसवास्ते उसका सान्ध्य भाषाटीका निर्माण किया कारण इसकी सहायतासे केशवीजातकका यथार्थ ज्ञानहोके पत्रिकाका गणित कैसे करना सो खुलासे मालूम होगा, इसमें केशवीजातकके मूल श्लोक लिखके वह सब श्लोकोंका अन्वय और खड़ी भाषामें अर्थ लिखा है और ग्रह और पञ्चल इत्यादि गणित अल्पायाससे करने में आवें इस वास्ते सारणीको योजनाकरके उस सारणीका कैसा उपयोग करना यह स्पष्ट रीतिसे लिखके उनके पृथक् पृथक् उदाहरण लिखे हैं और जन्मपत्रिकाका गणित कैसे करना यह समझनेके वास्ते उत्तम उदाहरण लिखा है इसमें वर्गमूल निकालनेकी रीति और उच्चवत्तीन प्रकारसे करनेकी रीति लिखी है और ग्रहोपरि तथा भावोपरि दृष्टि करनेको तीन प्रकारसे लिखा है और अष्टोत्तरीदशा और विंशोत्तरीदशा और योगिनी यह तीनों दशाओंकी नक्षत्रोंसे उत्पत्ति और उनके पति और वर्षादि दशा अन्तर्दशा कोष्टक प्रत्यंतरदशा लिखके जन्मपत्रिका लिखनेका क्रम बनाया है ।

यह ग्रंथ लोकमें उपयुक्त होनेके वास्ते जो परिश्रमकिया है सो देखनेसे मालूम होगा अब आशा है कि गुणग्राहक सज्जन पुरुष इसको अवलोकन कर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे ।

आशा है कि सज्जन पुरुष मत्सरताको छोडकर मुझसे मनुष्यधर्मानुसार जो भूल हुई है उसको क्षमा करें और मेरेको सूचना दें कि जिससे वह भूल पुनःपुनः दुरुस्त की जायगी ।

श्लोक-विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जनपारिश्रमम् ॥ न हि वंच्या विजानाति गुर्वी प्रसववेदनाम् ॥ १ ॥ करोमि केशवीग्रंथोदाहर्ति लोककाम्यया ॥ वादानां सुखबोधाय न तु पांडित्यगर्वितः ॥ २ ॥ इत्यलम् ॥

अथ केशवीजातकस्य सूचिपत्रम् ।



प्रकरण.	पृष्ठ.	प्रकरण.	पृष्ठ.
मंगलाचरण	पंचताराचक्रम् ...	३२
अहर्गणादिसाधन	भौमशीघ्रफलसारणी ...	३३
अहर्गणोदाहरण	भौममंदफलसारणी ...	४०
मध्यमग्रहसारणीप्रवेश	बुधशीघ्रफलसारणी ...	४६
रविमध्यमसारणी...	बुधमंदफलसारणी ...	४९
चन्द्रमध्यमसारणी	गुरुशीघ्रफलसारणी ...	५६
चन्द्रोच्चमध्यमसारणी	गुरुमंदफलसारणी... ..	५८
राहुमध्यमसारणी... ..	११	शुक्रशीघ्रफलसारणी ...	६१
भौममध्यमसारणी ...	१३	शुक्रमंदफलसारणी ...	६८
बुधकेन्द्रमध्यमसारणी ...	१५	शनिशीघ्रफलसारणी ...	७१
गुरुमध्यमसारणी ...	१७	शनिमन्दफलसारणी ...	७७
शुक्रकेन्द्रमध्यमसारणी ...	१९	प्रथमशीघ्रफल ...	८०
शनिमध्यमसारणी ...	२१	मंदफल... ..	८१
मध्यमसूर्यसाधनोदाहरण... ..	२३	अंतिमशीघ्रफल ...	८१
तात्कालिकमध्यमग्रहगतिसहित ...	२३	गत्युदाहरण ...	८२
मध्यमग्रहसे स्पष्ट ग्रह ...	२४	वक्रमार्ग अस्त उदय ...	८२
स्पष्टसूर्यसारणीप्रवेश ...	२४	सूर्यादिस्पष्टग्रहगतिसहित ...	८३
अयनांशसाधन उदाहरण ...	२४	लंकोदयसे स्वदेशका उदय ल्यावना	८३
चरखंडसाधन उदाहरण ...	२५	लग्नवनावनेकी रीति ...	८४
सूर्यकी स्पष्टगति... ..	२५	लग्नसे अभीष्ट काल करनेकी रीति... ..	८६
दिनमान रात्रिमान ..	२५	नतोन्नतपूर्वकदशमचतुर्थभाव ...	८६
सूर्यस्पष्टसारणीचक्र ...	२६	शेष आठभाव साधन संधि ...	८८
स्पष्टरविसाधनका उदाहरण ...	२७	क्षौर क्षयचय फलसाधन	८८
त्रिफलचन्द्रसंस्कार ...	२७	संधिसहित द्वादशभावचक्र... ..	९०
स्पष्टचन्द्रसारणीप्रवेश ...	२८	जन्मलग्नभावोद्धारचक्र ...	९१
चन्द्रकी स्पष्टगति... ..	२८	ग्रहभावफलचक्र ...	९१
चन्द्रस्पष्टसारणी	२९	ग्रहदृष्टिसाधन ...	९१
स्पष्टचन्द्र साधनेका उदाहरण ...	३०	दृष्टिफलसारणीप्रवेश ...	९२
मंगलादिस्पष्टसारणीप्रवेश	३०	रविचन्द्रबुधशुक्रदृष्टिसारणी ...	९३
शुक्र मंगल इनको विशेष स. ...	३१	भौमदृष्टिसारणी ...	९५
भौमादि ग्रहोंकी स्पष्टगति... ..	३१	गुरुदृष्टिसारणी... ..	९७
भौम बुध शुक्र इनकी गतिमें विशेष	३१	शनिदृष्टिसारणी ...	९९

प्रकरण.	पृष्ठ.	प्रकरण.	पृष्ठ.
दृष्टिका वृद्धाहरण...	१०१	केन्द्रादिवलोदाहरण	१२४
ग्रहदृष्टिक	"	केन्द्रादिवलचक्र	"
भावदृष्टिक	१०२	द्रेष्काणवल्लोदाहरण	"
वलसाधन	"	द्रेष्काणवलचक्र	१२५
ग्रहोंका उच्चादिकोष्ठक	१०३	स्थानवल्लयोगचक्र....	"
ग्रहोंकी तात्कालिक मैत्रीकरण	"	दिग्बलकालवल	"
ग्रहोंकी पंचधाऽधिमैत्री...	"	दिग्बलसारणीप्रवेश	१२६
निसर्ग मैत्री तात्कालिकपंचधामैत्री च	१०६	दिग्बलसारणी	"
पदुर्गचक्रम्	"	दिग्बलोदाहरण	"
उच्चवलसारणी प्रवेश	१०७	दिग्बलचक्रनतोन्नतवल्लोदाहरणचक्रसहित	"
उच्चवलसारणीराशिफल अंशकला...	१०८	वर्षपतिमासपति दिनपति	१२८
उच्चवल्लोदाहरण द्वितीयमकार	१०९	होरापतिवनानेकी रीति	१२९
उच्चवलचक्र	"	पक्षवलसारणीप्रवेश	"
मेपराशिसप्तवर्गपतिचक्र	११०	पक्षवलसारणी	"
वृषराशिसप्तवर्गपतिचक्र	१११	पक्षवल्लोदाहरण	"
मिथुनराशिसप्त०	११२	पक्षवलचक्र	१३०
कर्कराशिसप्त०	११३	दिनरात्रिभिभागवल्लोदाहरण	"
सिंहराशिसप्त०	११४	दिनरात्रिभिभागवलचक्र	"
कन्याराशिसप्त०	११५	वर्षपतिवल्लोदाहरण	"
तुलाराशिसप्त०	११६	मासपतिवल्लोदाहरण	"
वृश्चिकराशिसप्त०	११७	दिनपतिवल्लोदाहरण	१३१
धनराशिसप्त०	११८	होरापतिवल्लोदाहरण	"
मकरराशिसप्त०	११९	वर्षमासदिनहोरापतिवलचक्र	"
कुंभराशिसप्त०	१२०	कालवल्लयोगचक्र	"
मीनराशिसप्त०	१२१	चेष्टावलनिसर्गवल	"
ग्रहसप्तवर्गपतिचक्र	१२२	क्रांतिवनानेकी रीति	१३२
भावसप्तवर्गपतिचक्र	"	क्रांत्यंकचक्र	"
सप्तवर्गवल्लोदाहरण	"	क्रांतिसारणीप्रवेश....	"
ग्रहसप्तवर्गवलचक्र...	१२३	क्रांतिसारणी	१३३
युग्मायुग्मवल्लोदाहरण	१२४	क्रांत्युदाहरण	"
युग्मायुग्मवलचक्र...	"	क्रांतिचक्र	"

प्रकरण.	पृष्ठ.	प्रकरण.	पृष्ठ.
अयनबलसारणीप्रवेश	१३८	सूर्यमरीतिसे कलाकलवनावन ...	१५०
अयनबलसारणी	१३९	सावयवअंककामूलनिकालने ही	
अयनबलोदाहरण	"	सवसेअच्छेरीतिहे	१५१
अयनबलचक्र	१४०	रदम्युदाहरण	१५२
भौमादिकोंका शीघ्रोच्चवनावना ...	"	चेष्टाबलउच्चबलचेष्टार० उच्चर०च०	"
चेष्टाकेन्द्रचक्र	१४१	इष्टोदाहरण इष्टचक्र	"
चेष्टाबलसारणीप्रवेश	"	कष्टोदाहरण	"
चेष्टाबलसारणी	१४२	कष्टचक्र	१५३
चेष्टाबलोदाहरण	"	इष्टकष्टबलोदाहरण	"
चेष्टाबलचक्र	१४३	इष्टकष्टबलचक्र	"
अयनचेष्टाबलयोगचक्र	"	इष्टकष्टदृष्ट्युदाहरण	"
नैसर्गिकबलोदाहरण	"	इष्टकष्टदृष्टिचक्र	"
नैसर्गिकबलचक्र	"	सप्तवर्गशुभाशुभताधन	१५४
भौमादिकोंका शीघ्रांकादिकोष्टक ...	१४५	उच्चमूलत्रिकोणस्वगृहका निर्णय	१५५
शरकरनेकेवास्ते शीघ्रकर्णलगाताहे ...	"	उदाहरण... ..	१५६
उसकी रीति	"	वर्गेशसहितसप्तवर्गशुभ०	१५७
भौमादिकोंका शरवनानेकी रीति ...	"	वर्गेशसहितसप्तवर्गशुभ च०	"
दृग्बलोदाहरण	१४६	उदाहरण... ..	१५८
दृग्बलचक्र	"	शुभाशुभपंक्तिचक्र	"
पञ्चलैक्यचक्र	१४७	उदाहरण... ..	"
भावबलसाधन	"	मध्यमशुभाशुभचक्र	१५९
भावबलोदाहरण	"	इष्टकष्टबलगुणनचक्र	"
भावबलचक्र	"	इष्टकष्टबलगुणनपदचक्र	१६०
रविचन्द्रका चेष्टाबलकेन्द्र	१४९	स्पष्टशुभाशुभचक्र	"
चेष्टाबलोदाहरण	"	अंशायुसाधनार्थचेष्टागुणकउच्चगुणक	"
रदमोष्टकष्टसाधन	"	रहुटगुणक	१६१
वर्गमूलनिकालनेकी रीति	१५०		

इति केशवीजातकस्य मूचिपत्रम् ।

॥ श्री ॥

अथ केशवी जातकम्

भाषा उदाहरण सहितं प्रारभ्यते.

मंगलाचरणादिश्लोकः

स्रग्धरावृत्तम्.

हेरम्बोम्वायवेधोहरिपशुपतयो भास्कराद्याग्रहाद्ये
पंचैतेलोकपालाअथदशगदितादिकु प्रपाये महान्तः ॥
मेपाधाराशयश्चाश्विमुखनुरव वरायाश्चनक्षत्रतारा
योगाविष्कं भकाद्याः सकल सुरवराः पांतुमानत्रकल्पे ॥१॥

नृगिराकेशवंनत्वाकेशवीजातकस्फुटम्.
जगदीशः प्रकुरुते जगदीशानुकम्पया ॥२॥

मूल श्लोक.

नत्वाविघ्नपशारदाच्युतशिव ब्रह्मार्क मुख्यग्रहान्
कुर्वेजातकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये ॥
यंत्रैः स्पष्टतरां ऽत्रजन्मसमयो वैद्योऽत्रखेदाः स्फुटा
यत्पक्षेहि घटंतउद्गमइ हास्तक्षीसपङ्कः सच ॥ १ ॥

अन्वयः- अहं केशवाचार्यः जातकपद्धतिं कुर्वे करोमीत्यर्थः किं कृ-
त्वा विघ्नपशारदाच्युत शिवब्रह्मार्क मुख्यग्रहान्त्वा किं विशिष्टां जातक
पद्धतिं स्फुटतरां अतिशयेन स्फुटेति स्फुटतरातां स्फुटतरां ॥ किमर्थं ज्यो-
तिर्विदां प्रीतये ज्योतिषं विदंति जानंति चेत् ज्योतिर्विदस्तेषां प्रीतये अत्र
ज्योतिश्शब्देन त्रिस्कंधज्ञेयः गणितसहिता जातक इत्यर्थः होराविदमित्य
र्थं च ज्योतिर्विदस्ते एतद्धोरा शास्त्रविदो भवन्त्येवेतिशम् ॥

अर्थभाषाः- गणपती-सरस्वती-विष्णु-शिव-ब्रह्मा- और सूर्यादिनवग्र-
ह इनको नमस्कार करिके ज्योतिर्विदके संतोषार्थ यह स्पष्ट जातक पद्धति
नामक ग्रंथ करते है- इसमें जन्मकाल घटी शंकु चक्र फलक इत्यादि यं-
त्रोंसे सूक्ष्म रीतिसे जानना और स्पष्टग्रह जिस पक्षके प्रत्यक्ष होय उस पक्ष-
के ग्रह लाघवरीत्या लेना. जन्म कालीन लग्न स्वदेशीय उदयसेवनावना

उदाहरणम्.

वारक्रमचक्रम्

शके १८०८ में १४४२ कमकिआ तो शेष-

३६६ इस्को ११ से भाग दिया तो लब्धि

३३ यह चक्रशेष ३ रहा इस्को १२ से गुणातो ३६ हुवा इस्में गतमास०

अन्य युक्त कियातो ३६ भया यह मध्यम मास गणभया इस्को दो स्थान

में स्थापित किया एक जगै चक्र ३३ इस्को दूना कियातो ६६ भया इ-

स्में १० युक्त कियातो ७६ भया इस्को दूसरे अंकमें युक्त कियातो ११२ इ-

स्को ३३ से भागदियातो लब्धि ३ अधिमास आयासो इस्को दूसरामें युक्त

किया तो ३९ हुवा इस्को ३० गुणाकिया ११७० हुवा इस्में गततिथि २१ यु-

क्त करीतो ११९१ हुवा इस्में चक्र ३३ का पचाश ५ युक्त कियातो हुवा

११९६ इस्को दो जगै रखके एकमें ६४ का भाग दिया लब्धी १८ ऊना-

ह इस्को दूसरी जगै ११९६ में हीन कियातो ११७० यह अहर्गणभ-

या जन्मका वार जाननेके लिये इस्में चक्र ३३ को ५ से गुणातो १६५ भ-

यासो अहर्गणमें युक्त कियातो १३५३ भया. इस्को ७ से भाग दिया.

तो शेष ६ रहा. इसलिये रविवार आया तब यह ११७० अहर्गण शुद्ध

भया इस्को वार अहर्गणसे मिले तो कन करना अथवा युक्त करना

टीपः- विशेष जिस वर्षमें अधिक मास आवता उस वर्षमें अधि मा-

सके पूर्ववा परमें अहर्गण बनाना होयतो जो महिना अधिक हो उस मह-

हिनाके पूर्व अहर्गण करना होयतो पूर्व वर्षके अपेक्षा अधिक मास अधिक

आवेतो लेना नहीं अर्थात् अधिमासमें एक घटाये देना जो अधिमासके

आगे अहर्गण साधन करना. होयतो पूर्व वर्षके अपेक्षा अधिक मास

आवे तो लेना नहीं अर्थात् एक युक्त करके अधिमासमें अहर्गण

साधन करना.

मध्यमग्रह साणी प्रवेशः.

अहर्गणको ६० से भाग देनातो लब्धी और शेष एसे २ अंक आवते हैं

सो आंग मध्यम ग्रह साणीमें लब्धीदि प्रहोका १ से ६७ तक शेष ल-

ब्धी कोष्टक है उसके नीचे वह कोष्टक राश्यादिक अंक लिखे हैं वह

शेष कोष्टक ही लब्धी कोष्टक है. परंतु उक्ता फल लेनेकी रीति जु-

दी है वह प्रकार ऐजा है जो लब्धीका अंक होयसो शेष कोष्टकमें

देखना नंतर वह कोष्टक के नीचे राशी सहित जो अंक है तस्में

राशीका त्याग करके अंक लेना. अनंतर पहिला अंक जो होय उसको

६ से भाग दके जो शेष रहे तिसको दूना करना तो लब्धी कोष्टक का राशी अंक होता है. अनंतर उसके नीचेका अंक अंशस्थानमें आता है इसवासे ३० से अधिक होयतो ३० से भागदेके जो अंक आवे उसको राशि स्थानमें जोड़देना तो लब्धीकोष्टक फल तैयार होता है.

सारणीमेंका अभीष्ट शेषकोष्टकके नीचेका अंक होयसो और अभीष्ट लब्धी कोष्टकका जो अंक होयसो दोनोंका योग करना अनंतर उस अंकको चक्र निम्न ध्रुवोन क्षेपक तैयार सारणीमें ऊपरके वाजू चक्रके नीचे अंक है सो अभीष्ट चक्रके नीचेके अंकमें युक्त करना तो प्रातःकालका मध्यम ग्रह होते है.

इष्टकालका मध्यम ग्रह करना होयतो सूर्योदयके अनंतर जो इष्टघटी और पल होय उस्का कोष्टक ग्रह सारणीके पीछे राश्यादि लिखा है. उस्मेंसे अपना जो इष्ट घटी पल होय उस्के नीचेके अंकको प्रातःकालका जो ग्रह उस्में युक्त करना तो इष्टकालका मध्यम ग्रह होता है.

मध्यम राहु बनानेकी रीत कुछ भिन्न है. सो ऐसी हैके शेष लब्धी कोष्टकका योगको १२ में कम करके जो वचे उस्को चक्र निम्न ध्रुवोनक्षेपक मिलाना तो प्रातःकालका राहु होता है इष्टकालका राहु बनाना होयतो जो अभीष्ट घटी कोष्टकके और पल कोष्टकके नीचेके अंकको लब्धी शेष कोष्टकका जो फल सो युक्त करके जो अंक आवे उस्को १२ में कम करना अनंतर चक्र निम्न ध्रुवोनक्षेपक मिलाना तो इष्टकालका राहु होता है.

इति मध्याधिकारः

रविचक्रनिघ्न ध्रुवोनक्षेपक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
१०	१०	१०	१०	१०	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
०७	०६	०४	०२	००	२८	२६	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१४	१२	१०	०८	०६	०५
४९	००	११	२२	३३	४३	५४	०५	१६	२७	३७	४८	५९	७०	२१	३२	४२	५३	०४
४७	३६	२५	१४	०३	५२	४१	३०	१९	०८	५७	४६	३५	२४	१३	०२	५१	४०	२९

रविशेषलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४१	४०
०	८	१६	२४	३२	४०	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	६२	७०	७८	८७	९५	१०३	१११	११९
०	१०	२०	३०	४१	५१	६१	७२	८२	९३	१०३	११३	१२३	१३३	१४३	१५३	१६३	१७३	१८३	१९३	२०३	२१३	२२३
०	१७	३४	५१	०८	२५	४२	०	१७	३४	५१	८	२५	४२	००	१७	३४	५१	८	२५	४३	००	१७
०	८	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०	१८९	१९८

रविशेषलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
४०	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२१	२१
७	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७३	८२	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०	१८९	१९८
५६	६	१७	२७	३७	४८	५८	६८	७८	८८	९८	१०८	११८	१२८	१३८	१४८	१५८	१६८	१७८	१८८	१९८	२०८	२१८
३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१
२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०	१८९	१९८	२०८	२१८	२२८

रविशेषलब्धिकोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	०
२०	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	२	०	०
१५	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७३	८२	९०	९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०	१८९	१९८	०
५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४	१०४	११४	१२४	१३४	१४४	१५४	१६४	१७४	१८४	१९४	२०४	०
८	२६	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	२५	४३	०	१७	३४	५१	८	०
५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६६	७५	८४	९३	१०२	१११	१२०	१२९	१३८	१४७	१५६	१६५	१७४	१८३	०

रविघटीकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
५२	५८	६०	६६	६५	६४	६३	६२	६१	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१
५३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	०	०	०
२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	०	०	०	०

रविपलकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
५३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	०	०	०

चंद्रचक्रनिघण्टुवोनक्षेपक.

१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६
७	३	२८	२६	२२	१८	१४	११	७	३	२८	२६	२२	१८	१४	१०	७	३	२८	२५	२२	१८	१४
२८	४२	५६	८	२३	३७	५१	६	१८	३२	४६	०	१४	२८	४१	५५	८	२३	३७	५१	६	१८	३२
३१	२०	८	५८	४७	३६	२५	१४	३	५२	४१	३०	१८	८	५७	४८	३५	२४	१३	२	५१	४०	२८

चंद्रशेषलब्धिकोष्टक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०
०	३३	२६	८	२२	५	१८	२	१५	२८	११	२४	८	२१	४	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	१८
०	१०	२१	३१	४२	५२	६	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४८	५८	१०	२१	३१	४२	५२
०	३४	८	४४	१८	५४	२८	६	३८	१३	४८	२३	५८	३३	८	४०	१७	५२	२७	२	३७	१२	४७
०	५१	४३	३५	२७	१८	११	३	५५	४७	३८	३०	२३	१५	७	५८	५०	४२	३४	२६	१८	१०	२
०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२

चंद्रशेषलब्धिकोष्टक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	१०	११	११	८	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८
३	१६	२८	३२	३६	४	२०	५	१८	१	१६	२७	११	२४	७	२०	३	१७	०	१३	२६	८	२२
३	१३	२६	३५	४५	५६	६	१७	२८	३८	४८	५८	१०	२०	३१	४२	५२	६	१६	२६	३६	४५	५६
११	५६	३१	६	४१	१६	५१	२५	०	३५	१०	४५	२०	५५	३०	६	२८	१६	४८	२४	२८	३६	८
५८	५६	३८	३०	२२	१६	६	५८	५८	११	३३	२५	१७	८	१	५३	४५	३७	२८	२१	१३	५	५७
२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०

चंद्रशेषलब्धिकोष्टक.

२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
८	८	८	८	८	१०	१०	११	११	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	०
६	१०	२	१५	२८	११	२५	८	२१	४	१७	१	१६	२७	१०	२३	६	२०	३	१६	२८	१२	०
६	१७	२७	३८	४८	५८	१०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८	०
१३	१८	२३	२८	३	३८	१३	२७	२२	५७	३२	७	४२	१७	५१	२६	१	३६	११	१६	२१	५५	०
२८	२०	३२	२६	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४७	३८	३१	२३	१५	७	५८	०
५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	०	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	०

चन्द्रघटी कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
१३	२६	३८	५२	६५	८०	९६	११३	१३१	१५०	१६९	१८९	२१०	२३१	२५३	२७६	३००	३२५	३५१	३७८	४०६	४३६	४६७
१०	२१	३१	४२	५२	६३	७४	८५	९६	१०७	११८	१२९	१४०	१५१	१६२	१७३	१८४	१९५	२०६	२१७	२२८	२३९	२५०
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९
१६	२८	४२	५५	६८	८२	९६	११०	१२४	१३८	१५२	१६६	१८०	१९४	२०८	२२२	२३६	२५०	२६४	२७८	२९२	३०६	३२०
१२	२३	३४	४५	५६	६७	७८	८९	१००	१११	१२२	१३३	१४४	१५५	१६६	१७७	१८८	१९९	२१०	२२१	२३२	२४३	२५४
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	२२	३५	५८	७१	८५	९९	११३	१२७	१४१	१५५	१६९	१८३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१६	२७	३७	४८	५८	६९	८०	९१	१०२	११३	१२४	१३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रपल कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
१३	२६	३८	५२	६५	८०	९६	११३	१३१	१५०	१६९	१८९	२१०	२३१	२५३	२७६	३००	३२५	३५१	३७८	४०६	४३६	४६७
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०
२	१६	२८	४२	५५	६८	८२	९६	११०	१२४	१३८	१५२	१६६	१८०	१९४	२०८	२२२	२३६	२५०	२६४	२७८	२९२	०
१५	२६	३७	४८	५९	७०	८१	९२	१०३	११४	१२५	१३६	१४७	१५८	१६९	१८०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	०	०	०	०	०	०	०	०
५३	६	१८	३२	४५	५८	७१	८५	९९	११३	१२७	१४१	१५५	१६९	१८३	१९७	२११	२२५	२३९	२५३	२६७	२८१	०

चन्द्रोच्चचक्रनिघ्न श्रुवो नक्षत्रपक.

१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	३	६	९	०	३	६	९	०	३	६	९	११	२	५	८	११	२	५	८	११	१	४
२५	२२	१८	७	१६	११	८	६	३	०	२७	२५	२२	१८	१६	१४	११	८	५	३	०	२७	२४
१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८	३	१८	३३	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रोच्चशेषलब्धि कोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६
०	४०	२१	२	४३	२४	५	६६	२६	७	४८	२८	१०	५१	३२	१२	५३	३४	१५	५६	३७	१८	५८
०	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५
०	२५	५१	१७	४२	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६

चन्द्रोच्चशेषलब्धि कोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५
३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०
३८	२०	१	४२	२३	४	६६	२५	६	४७	२८	८	५०	३०	११	५२	३३	१४	५५	३६	१६	५७	३८
४२	३४	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८
५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७	४३	८	३४	०	२६	५१	१७

चन्द्रोच्चशेषलब्धि कोष्ठक.

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७
७	१४	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३
१८	०	४१	२२	२	४३	२४	५	६६	२७	८	४८	२८	१०	५१	३२	१२	५३	३४	१५	५६	३७	०
२५	१७	८	०	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१	४२	३३	२५	१७	८	५१
४३	८	३५	०	२६	५१	१७	४३	८	३५	०	२६	५१	१७	४३	८	३५	०	२६	५१	१७	४३	८

राहुचक्रनिम्न ध्रुवो नक्षत्रक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	०	७	१०	३	८	१	६	११	३	८	१	६	११	३	८	१	७	०	५	१०
०	२५	२५	२५	१८	१६	१३	११	८	५	३	२५	२६	२४	२१	१८	१५	१२	८	७	३	१
५५	८	१०	२०	३०	४०	५०	६	१०	२०	३०	४०	५०	६	१०	२०	३०	४०	५०	६	१०	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुउपलब्धिकोष्ठक.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
०	३	६	८	१२	१५	२०	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५२	५७	०	३	६	९
०	१०	२१	३२	४३	५४	६	१५	२६	३७	४८	५९	६	१०	२१	३२	४३	५४	६	१५	२६	३७	४८
०	१८	२६	३५	४३	५	१०	२०	३१	४२	५३	६	१२	२२	३३	४४	५५	६३	३१	२८	८	१६	२५
०	२५	५०	१६	२१	६	११	५७	२२	३७	१३	२८	३	२०	५४	१८	४४	८	२५	०	२५	५०	१६

राहुशपलब्धिकोष्ठक.

२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
१३	१६	१८	२२	२५	२८	३०	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	१९	२३
८	१८	३०	४०	५१	६	१३	२४	३५	४६	५६	६	१८	२८	३८	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६
२३	२७	३०	५०	६७	३५	२६	१२	१	१८	३७	२६	१६	३	५१	४०	२८	१६	५	५३	४२	३०	१८
४१	६	२७	५७	२२	१७	१३	३०	३	२०	५४	१८	४४	८	३४	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुउपलब्धिकोष्ठक.

५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
२६	२८	३२	३५	३८	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२६	२९	३३	०
१७	२७	३८	४८	०	११	२१	३२	४३	५४	६	१६	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३१	४२	५३	६	०
७	१५	२६	३२	३९	८	१७	२६	३५	४४	११	०	१०	२६	२५	१३	२	१०	२०	२७	३५	४	०
२२	२७	३३	३८	३	३०	५४	१८	४४	१०	३५	०	२५	५१	१६	४१	६	३२	५७	२०	४७	१३	०

राहु घटी कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	६	९	१२	१५	१८	२३	२५	२८	३२	३५	३८	४१	४६	४७	५०	५२	५७	०	३
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
६	८	१२	१६	२०	२२	२५	२८	३१	३५	३८	४१	४६	४७	५०	५२	५७	०	३	७
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
१०	१४	१७	२०	२३	२६	२८	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५३	५५	५८	१	४	७	११

राहुपल कोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३

मंगलचक्रनिघ्न ध्रुवो नक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
७	७	५	३	१	११	१०	८	६	४	२	०	११	८	७	५	३	१	११	१०	८	६
६	१०	१५	२८	२७	२८	३	७	१२	१६	२१	२५	०	४	८	१३	१७	२२	२६	१	५	११
२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	८	३६	६	३२	०	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलशेषलधिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२
३१	२	२६	५	३७	८	४०	११	४२	१४	४५	१७	४८	२०	५१	२३	५४	२५	५७	२८	०	३१	३
२६	५३	१८	४६	१२	३५	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३७	६	३०	५७	२३	५०	१६	४३	८
३१	२	३३	६	३५	६	३७	८	३८	१०	४१	१२	४३	१४	२५	१६	४८	१८	५०	२१	५२	२३	५४
३	७	११	१४	१८	२१	२५	२८	३२	३६	३९	४३	४७	५०	५४	५७	१	५	८	१२	१५	१८	२३

मंगलशेषलधिकोष्ठक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२४
२५	६	३७	८	४०	११	४३	१४	४६	१७	४८	२०	५१	२३	५४	२५	५७	२८	०	३२	३	३४	६
३६	२	२८	५५	२२	४८	१५	४२	८	३५	१	२८	५६	२१	४७	१६	४०	७	२३	०	२६	५३	१८
२५	५६	२७	५८	२८	०	३३	२	३३	६	३६	७	३८	८	४०	११	४२	१३	४४	१५	५२	१७	४८
२६	३०	३६	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५८	२	६	८	१३	१७	२०	२४	२७	३१	३५	३८	४२	४५

मंगलशेषलधिकोष्ठक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०
२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	०	०	१	१	२	३	३	४	४	५	५	०	०
३७	८	४०	१२	४३	१५	४६	१७	४८	२०	५१	२३	५४	२५	५७	२८	०	३२	३	३४	६	०	०
२६	५३	१८	५	३२	५८	२५	५१	१८	४४	११	३७	६	३१	५७	२४	५०	१७	४३	१०	३६	०	०
१८	१०	२१	५३	२४	५५	२६	५७	२८	५९	३०	१	३२	३	३४	५	३६	७	३८	८	४१	०	०
४८	५२	२६	०	३	७	१०	१४	१७	२१	२५	२८	३२	३६	३७	४३	४७	५०	५६	५७	१	०	०

मंगल घटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	२	३४	५	३६	७	३८	९	४०	११	४२	१३	४४	१५	४६	१७	४८	१९	५०	२१
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३१	२	३४	५	३६	७	३८	९	४०	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१
२८	०	३१	२	३४	५	३६	७	३८	९	४०	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९

मंगल घटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०

बुधकेन्द्र घटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	६	८	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६
६	१२	१८	२५	३१	३८	४४	५०	५७	६	१०	१७	२३	२८	३६	४२	४८	५५	६	८
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	६	६
१५	२१	२७	३४	४०	४६	५३	६०	६	१२	१८	२४	३१	३७	४३	५०	५६	६	८	१६
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३	६
२२	२५	३१	३८	४६	५४	०	७	१३	२०	२७	३३	३९	४६	५१	५८	६	११	१७	२४

बुधकेन्द्र घटी कोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	६	८	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२
५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	६	६
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	०	३	६

शुक्रकेन्द्रचक्रनिघ्नध्रुवनक्षेपक.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
२	८	११	८	८	६	५	४	२	१	११	१०	८	७	५	४	२	१	११	१०	८	७
८	२५	११	२७	१३	२८	१५	१	१७	३	१८	५	२१	७	२३	८	२४	१०	२६	१२	२८	१०
२८	२७	२५	२३	२१	१८	१७	१५	१३	११	९	७	५	३	१	५९	५७	५५	५३	५१	४९	४७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रकेन्द्रशीषलधिकोष्टक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४
३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	८	४६	२३	०	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०
५८	५८	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५३	५३	५३
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४१	२१	१	४२	२२	२	४२	२२
६	१३	२०	२१	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	१८	२६	३३	३८	४६	५३	५८	६	१३	१८	२६	३३
३८																						

शुक्रकेन्द्रशीषलधिकोष्टक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८
४७	२५	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०	७७	२४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१
५२	५१	५१	५१	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४५	४५	४५	४५	४५
२	४२	२२	२	४३	२३	३	४३	२३	३	४३	२३	३	४४	२४	४	४४	२४	४	४४	२४	४	४५
३८	४६	५२	५९	६	१२	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२५	३२	३८	४६	५२	५९	५

शुक्रकेन्द्रशीषलधिकोष्टक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	०
०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
२८	२९	०	०	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	१०	१०	११	०	०
५८	३५	१०	४८	२६	२	४०	१७	५४	३१	८	२५	२०	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	०	०
४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३८	३८	०
२५	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४६	२६	६	४६	२६	६	४६	२६	८	४७	२७	७	४७	०	०
१२	१८	२५	३२	३८	४५	५१	५८	५	११	१८	२५	३१	३६	४४	५१	५८	५	११	१८	२५	०	०

शुक्रकेन्द्रघटीकोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३
३७	१६	५१	२०	५	४२	१८	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२०	५७
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१५	१६	१६	१८	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२५
५७	३४	११	४८	२५	२	३९	१६	५३	३०	७	४४	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०	१७
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३६	३७
१७	५६	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२७	४	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	६०	३७

शुक्रकेन्द्रपलकोषक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१३
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१२	१३	१४	१५	१६	१६	१८	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२५
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२५	२६	२७	२७	२८	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३३	३४	३५	३५	३६	३६	३७

शनिचक्रनिघ्न ध्रुवो नक्षेपकः.

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१
३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
१	१५	२९	४३	५७	७१	८५	९९	११३	१२७	१४१	१५५	१६९	१८३	१९७	२११	२२५	२३९	२५३	२६७	२८१	२९५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिशेषलब्धिकोष्ठक.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	१०	१४	१८	२२	२६	३०	३४	३८	४२	४६	५०	५४	५८	६२	६६	७०	७४	७८	८२	८६	९०
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११
२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७१	७४	७७	८०	८३	८६	८९
९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०

शनिशेषलब्धिकोष्ठक.

२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
६८	७०	७२	७४	७६	७८	८०	८२	८४	८६	८८	९०	९२	९४	९६	९८	१००	१०२	१०४	१०६	१०८	११०	११२
८	८	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०
१३	१६	१९	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७१	७४	७७	८०
५१	५६	६०	६५	६९	७३	७७	८१	८५	८९	९३	९७	१०१	१०५	१०९	११३	११७	१२१	१२५	१२९	१३३	१३७	१४१

शनिशेषलब्धिकोष्ठक.

४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८
१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
६	२७	५०	७३	९६	११९	१४२	१६५	१८८	२११	२३४	२५७	२८०	३०३	३२६	३४९	३७२	३९५	४१८	४४१	४६४	४८७	५१०
२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१

मध्यम रवि साधनका उदाहरण.

इहां अहर्गण ११७८ आया है. इस्को ६० से भाग देनेसे लब्धी १८ शेष २८ तो यह शेष को एक इस्के नीचेका अंक १।७।२७।१०।२० इस्की लब्धी अंक १८ तो लब्धी अंकके नीचे अंक राशी छोड़के यह १०।२३।२५।१५।२५ अंक है. इस्के ऊपरका अंक १८के ६ से भाग दिया तो शेष ० अर्न्त्य राहा दूना किया तो अर्न्त्य राहा यद्वा राशी अंक भया. अब भाग स्थानमें २३ आया ये ३० से अधिक है इसवास्त इस्के ३०का भाग दिया तो लब्धी १ यह राशीमें युक्त किया तो १।१३।२५।१५।२५ यह अंक भया इस्का शेष ३० को एकका पल युक्त किया तो २।२१।२।२५।५५ यह अंक भया. इस्को चक्र ३३ सारणीमें इस्के नीचेका अंक ८।१८।३७।५७ यह युक्त किया तो ०।१०।४०।२३ यह प्रातः कालका मध्यम सूर्य्य बुध युक्त भया. अब इस्का इष्टकालका मध्यम करना है. इसवास्त इष्ट घटी ३२ यह इस्के सारणीमेंका पल ०।०।३१।३३ और पल ०१ इस्का पल पल सारणीका ०।०।०।१ यह दोनूफल प्रातः कालके मध्यम ग्रहमें युक्त किया तो ०।११।११।५६ यह सूर्य्य इष्टकालका मध्यम ग्रह भया. इसी रीतीसे प्रातःकालका इष्टकालका मध्यम सब ग्रह करना.

प्रातःकालिकसूर्यादि मध्यमग्रह.

अथ ताल्कालिक मध्यमाग्रहाः ८

सू.	चं.	चंड.	रा.	मं.	कुके	वृ.	शुक्र	श.	सू.	चं.	चंड.	रा.	मं.	कुके	वृ.	शुक्र	श.
०	८	८	४	५	७	५	७	२	८	८	८	४	५	७	५	७	२
१०	२६	३७	२१	२१	५	१२	१३	१६	११	३	२५	२१	२२	७	१२	१३	१६
२०	२६	५८	४१	५०	२३	१५	१२	३८	११	२५	१	४०	७	३	१७	२२	३८
३३	२८	१०	५०	३८	५१	११	२८	३३	५६	२०	२३	५	२४	११	५१	१५	३७
श्लोकः-	जगद्गोत्रं न रचितं केन्द्रं तदाख्यं बुधैः केन्द्रे स्यात्स्व- मृणफलं क्रिय तुलाद्य इति. दोस्त्रिभौ न त्रिभौ द्वै विशेप्यं रसे- श्वक्रतौ काधिकः स्याद्भुजानं त्रिभकोटिर केक त्रिभि मीस्या- त्पदं सूर्य्यमंदोच्चमष्टाद्रि योशा भवेत् ॥								५८	७०	६	३	३१	१८	५	३७	२
									३८	३५	४१	११	२६	२४	०	०	०.

अथ सप्तधाधिकारः

श्लोकः

मंदोच्चं ग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रं तदाख्यं बुधैः केन्द्रे स्यात्स्व-
मृणफलं क्रिय तुलाद्य इति. दोस्त्रिभौ न त्रिभौ द्वै विशेप्यं रसे-
श्वक्रतौ काधिकः स्याद्भुजानं त्रिभकोटिर केक त्रिभि मीस्या-
त्पदं सूर्य्यमंदोच्चमष्टाद्रि योशा भवेत् ॥

टी०- मंदोच्चं ग्रह कम करनेसे मन्दकेन्द्र होता है. वह केन्द्र मेष राशीसे
६ राशीतक होयतो फल धन और तुलादि ६ राशी होयतो फल ऋण जानना.

केन्द्र अथवा ग्रह ३ राशीसे कम होयतो वही भुज जानना. और नीनसे ३ अधिक होयतो ६ राशीमें कमकरनातो भुज होय. ६ से अधिक होय तो ६ राशी घटायेदेतो भुज होय ८ से अधिक होयतो १२ में कमकरना तो भुज होय इस प्रकारसे केन्द्रका वा ग्रहका भुजकरना.

स्पष्टसारणी प्रवेश.

२ राशी १० अंश० कला० विकला यह सूर्यका मंदोच्च है. इसमें मध्यम सूर्यकमकरना तो सूर्यका मंद केन्द्र होता है. वह केन्द्रका भुजकरके उस्का अंश करना अनंतर जो अंश आवितो अंश कोष्टके नीचे स्पष्ट ग्रह सारणीमें लिखा है सो देरवके भागादि फल लेना. अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होय उस्को इष्ट भुजांश कोष्टके नीचे गुण लिखा है. उस्से गुणके वही कोष्टके नीचे जो हर लिखा है. उस्से भागदेके जो फल आविसो भुज भाग फलके विकलामें जोड़ देनातो सूर्यका मंद फल होता है. वह फल धन होय तो मध्यम सूर्यमें युक्त करना. और ऋण होयतो मध्यम सूर्यमें कमकरना. तो सूर्य मंद स्पष्ट होता है.

अयनांशाः

श्लोकः- वेदाब्ध्यब्ध्यूनः रवरसंज्ञतः शकोयनांशाः ॥

टीकाः- इष्टशालिवाहन शकमें से ४४४ लब्धि यह कमकरना जो बाकी रहे. उस्को ६० का भाग देना जो भागाकार लब्धि आवे वह अयन अंश होता है. उदाहरणम्:- शके १८०० इस्सेसे ४४४ यह कमकिया तो १३६४ यह बचा तो कला जानना. इस्को ६० से भाग दिया तो लब्धि अंश २२ कला ४४ विकला० अब महिना प्रति ५ विकला युक्त करे तो यह अयनांश आया. २२।४४।०३

चरवण्ड.

श्लोक.

मेपादिगसायनभागसूर्ये दिनार्द्धजाभापलभापवेत्ता ॥

त्रिषाहतास्युर्दशानिभुजगैर्दिग्निश्वराधीनिगुणोधृतात्यात् ॥१॥

टीकाः- मेपका सायन सूर्य अन्वराशि० अंश० कला० विकला इतना सूर्य जिसदिन होय उसदिन मध्याह्नमें सम भूमिपर अंगुलका शंकरख के जो छाया आवे सो पल भा जानना. अगिजो पल भा आवे उस्को ३ जंगरखके क्रमसे १०।८।१० यह अंकसे गुणदे जो गुणाकार आवे उस्को क्रमसे १।१।३ यह अंकसे भाग देना जो भागाकार आवे सो क्रमसे पहला दूसरा तीसरा चरवण्ड होता है.

उदाहरणम्.

पलभा ७ अंगुल इस्को १० से गुणातो ७० भया १ से भाग देनेसे ७० यह पहला चरखंड-पलभा ७ अंगुल इस्को ८ से गुणातो ५६ भया १ से भाग दिया-तो ५६ यह दूसरा चरखंड-पलभा ७ अंगुल इस्को १० से गुणातो ७० भया ३ से भाग देनेसे २३ यह तीसरा चरखंड इस प्रकारसे क्रम करके चरखंड ७०।५६।२३ यह हुवा.

टीका.

मंद स्पष्ट सूर्यमें अयनांश युक्त करनेसे सायन सूर्य होता है. उस्का भुज करना अनंतर भुजका जो ०।१।२ इसमेंसे राश्यंक होय उस्के समान चर खण्डका योगकरना अनंतर भुज राशीके नीचे अंशादिक जो होय उस्को चरखण्डसे गुणके जो गुणाकार आवै उस्के घट्यादिकमें ६० का भाग दे अंशमें ३० का भाग देना जो लब्धी आवै उस्को पहले किया जो योग तिस्में युक्त करना तो चरस्पष्ट होता है. वह सायन सूर्य मेषादि ६ राशिमें होय तो फल ऋण तुलादि ६ राशिमें होय तो फल धन जानना सायंकालका ग्रह करना. होय तो चर विपरीत देना सो ऐसा सायन सूर्य मेषादि पट्टकमें होय तो धन तुलादि पट्टकमें होय तो ऋण जानना वह आया जो चर उस्को मंद स्पष्ट सूर्यके विकलामें धन होय तो युक्त करना ऋण होय तो कम करना तो स्पष्ट सूर्य होता है.

सूर्यकी स्पष्ट गती.

केन्द्र भुजभाग कोष्ठके नीचे गति फल लिखा है. वह केन्द्र कंकादि ६ राशि तक होय तो धन इसवास्ते पहिली रवीकी जो मध्यम गति उस्में युक्त करना और केन्द्र मकरादिक ६ राशितक ऋण जानना इसवास्ते मध्यम गतिमें कम करना तो सूर्यकी स्पष्ट गती होती है.

दिनमान— रात्रिमान.

टीका.

तब सायन ग्रह मेषादि ६ राशिमें होय तब उत्तर गोलमें जानना. और सायनग्रह तुलादि ६ राशीमें होय तब दक्षिण गोलमें जानना. जो चर आ होय उस्को पलजानके उत्तर गोलमें होय तो १५ घडीमें युक्त करना और दक्षिण गोलमें कम करना. तो दिनार्द्ध होता है. वह दिनार्द्ध ३० में कम करना तो रात्र्यर्द्ध होता है अनंतर दिनार्द्ध और रात्र्यर्द्ध इस्को दूना करना तो दिनमान रात्रिमान होता है.

॥ स्पष्टग्रह ॥ स्पष्ट सूर्य साधनका उदाहरणम् ॥

यह सूर्यका मंदोच्च २१८।०० इस्में मध्यम सूर्य ००।११।११।५६ कम किया तो २।६।१८।४ यह शेषरहा इस्कानानकेन्द्र अब इस्का भुज २।६।१८।४ तोयही रहा भाग किया तो ६६।१८।४ यह जया इसवास्ते इहां सारणी कोष्ठक ६६ इस्के नीचेका अंक १।५८।२३ इस्को गुण ११ से १८ जो गुणा तो ५२० फल ४ को गुणा तो ४४ इस्के ६० का भाग दिया तो ० लब्धि हुई अब गुणके नीचे हर १२ से ५२० में भाग लिया तो ४४ लब्धि हुवा इस्को विकलामें युक्त किया तो २।००।७ यह सूर्यका मंदफल जया अब केन्द्र मेपादि ६ राशिमें है इसवास्ते फल धन यह मध्यम सूर्यमें युक्त किया तो ०।१३।१२।३ यह मंदस्पष्ट सूर्य जया इस्में अचनंश २२।१४।३ युक्त किया तो यह १।५।५६।०६ सायन सूर्य इस्का भुज १।५।५६।६ यही रहा यहां भुज राशी अंक १ है इसवास्ते चरखंड ७० भोग्यखंड ५६ भुजभाग ५।५६।६ इस्से पूर्वगती करके आया फल ११ यह युक्त करके ८१ यह चर जया अब सायन सूर्य मेपादिक है इसवास्ते मंदस्पष्ट सूर्यके विकलामें कम किया तो यह ००।१३।१०।४२ स्पष्ट सूर्य जया इहां केन्द्र मकरादिक है इसवास्ते भुजभाग कोष्ठक ६६ इस्के नीचे गतिफल ०।५४ यह है तो ५८।०० मध्यम गतिमें कम किया तो यह ५८।१४ स्पष्टगती भई सायन सूर्य मेपादिक है इसवास्ते उत्तर गोल ऊपर आया जो पलात्मक चर ८१ यह १५ घटीमें युक्त किया तो १६।२१ यह दिनाई जया इस्की ३० घटीमें कम किया तो १३।३८ यह रात्रिदल जया दिनमान ३२।१४२ रात्रिमान २।७।१८ दिनूका योग ६५।०० अहोरात्र जया.

त्रिफल चंद्र संस्कार.

प्रथमफल अपने देशसे दक्षिणोत्तर रेरवा कितने योजन है वह देशके जो योजन होय उसको ६ से भाग देकरके जो भागाकार आवे वह कला होगी तो अपना देश दक्षिणोत्तर रेरवाके पश्चिम होय तो फल धन और पूर्वमें होय तो फल ऋण जानना दक्षिणोत्तर रेरवाके ऊपरके देशलंका, देवकन्या, कांची, उतपर्वत वत्स गुल्म, पुरली, उज्जैन, नगराट, कुरुक्षेत्र, मेरु, द्वितीयफल पहिले जो चर किया है उसको २ से गुणके ८ से भाग देना जो भागाकार आवे सो कलादि जानना और चर जैसा धन ऋण होय वैसा वह फल धन ऋण जानना तृतीय फल सूर्यका जो मंदफल आया है उसको २७ से भाग दे-

आवे सो धन ऋण जानना अथ तीनों फलोंका एकीकरण जो धन किंवा
 ण आवेगा वह मध्यम चन्द्रमें धन होयतो युक्त करना ऋण होयतो कम
 रना तो त्रिफल संस्कृत चन्द्र होता है.

उदाहरण.

इस उदाहरणमें मध्य रेखाका अंतर ५ योजन है इस्को ६ से भाग दिया
 तो ० कला ५० विकला यह फल धन कारण अंतर पश्चिम है. चर ८१ इस्को ३
 से गुणा तो १६२ यह इस्को ८ से भाग दिया तो १८।०० यह कलादि द्विती
 य चर फल ऋण है इसवास्ते ऋण सूर्य्य फल २।००।७ इस्को २७ से भा
 ग दिया तो ०।१।२६ यह अंशादि तृतीय फल धन है इसवास्ते धन
 यह तीनों फलोंका एकीकरण ००।१२।१४ अंशादि ऋण यह मध्यम
 चंद्र ८।३।२८।२१ इस्में कम किया तो ८।३।१५।३० यह त्रिफल संस्कृ
 त चंद्र भया अथवा देशांतर कला और चर फल और सूर्य मंद फल य
 ह तीनों फलोंको अलग अलग ऋण धन समत्व कर मध्यम चंद्रमें ऋण
 धन करना तो पूर्व तुल्य चन्द्र त्रिकर्म संस्कृत होता है.

स्पष्टचन्द्र.

चंद्रोच्चमें त्रिफल चन्द्र कम करना तो चन्द्रका मंद केन्द्र होता है अनंतर
 वह केन्द्रका भुज करना भुजका अंश करना अंश करके जो अंशांक
 आवे सो अंशकोषकके आगे स्पष्ट सारणीमें देखना और उसके नीचे का
 भागादिक फल लेना. अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला होव उ
 स्को इष्ट भुजांश कोषकके नीचे जो गुण लिखा है. उस्से गुणकर वही कोष
 कके नीचे जोहर लिखा है उस्से भाग देनेसे जो भागाकार आवेगा सो
 भुज भाग फलके विकलामें युक्त करना तो चन्द्र मंद फल होता है वह फ
 ल धन होयतो त्रिफल चंद्रमें युक्त करना और ऋण होयतो त्रिफल चंद्रमें
 कम करना तो स्पष्ट चन्द्र होता है.

चंद्रकी स्पष्ट गति:- पूर्वकि केन्द्र भुज कोषकके नीचे गति फल लि
 खा है वह लेना अनंतर भुज भागके नीचे जो कला विकला उस्को गति फ
 लके नीचे गुण लिखा है उस्से गुण करके ६० से भाग दे जो फल आवे सो वि
 कलात्मक वह लिया जो गति फल उस्में कम करके वह गति फल सूर्य्यके
 एसाकेन्द्र परसे चंद्रके मध्यम गतीमें धन होयतो धन करना किंवा ऋण
 होयतो ऋण करना तो चंद्रकी स्पष्ट गति होती है.

स्पष्टचंद्र साधनेका उदाहरण.

चंद्रोच्च ८२८।१।४४ इस्में त्रिफलचंद्र ८।३।१५।३० कम करके बाकी ००।
२६।४६।०६ यह केन्द्र इस्का भुज भाग किया तो २६।४६।०६ इस वास्ते
हां सारणीकोष्ठक २४ इस्के नीचे अंशादिफल २।२।५० इस्को गुण
हर फल २१८ विकला युक्त किया तो २।६।२८ यह चंद्र फल तथा यह
केन्द्र मेषका है इस वास्ते फल धन यह त्रिफलचंद्र ८।३।१५।३० इस्में
युक्त किया तो ८।५।२२।७ यह स्पष्टचंद्र भया अब इहां केन्द्र भुज भाग
कोष्ठक २४ इस्का गति फल कलादि ५८।१६ इस्में गति फलके नीचे
गुण ३१ इस्से भुज भागके नीचे की कला ४६।०६ विकला इस्को गु
णके यह १४२६।१०६ इस्को ६० से भाग दिया तो फल २४ यह विक
लामें कम किया बाकी ५८।५२ यह केन्द्र मेषका है इस वास्ते मध्य
नगति ७८०।३५ में कम किया तो ७३१।४३ यह स्पष्टचंद्र गति
भई.

मंगल बुध गुरु शुक्र शनि स्पष्ट सारिणी प्रवेश.

मध्यम सूर्यमें मध्यम ग्रह भौम गुरु शनि कम करना तो भौम गुरु
शनि इनका प्रथम शीघ्र केन्द्र होता है. मध्यम बुध और शुक्र इन
का केन्द्र पूर्वमें मध्यम ग्रहके बराबर लिरवा है. अभीष्ट ग्रहका के
न्द्र ६ राशिसे अधिक होय तो १२ में कम करना अनंतर ६ से अल्प
जो केन्द्र उस्का अंश करना जो अंश आविसो आगे लिरवा शीघ्र
फल ग्रह सारिणीका अंशकोष्ठक तैयार होता है. अनंतर अभीष्ट को
ष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेना अनंतर अंश फलके नीचे ६० फल
विकला कोष्ठक लिरवा है उस्मेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय
तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका कलाका फल कलादि वैसा विकलादि ए
क करके धन किंवा अण सारिणीमें लिरवा है उस्के प्रमाण लिया
जो अंश फल युक्त करना किंवा कम करना तो ग्रहोंका प्रथम शीघ्र फ
ल होता है. शीघ्र फलका अर्ध करके केन्द्रके प्रमाण मध्यम ग्रहमें युक्त
करना किंवा कम करना तो दल संस्कृत ग्रह होता है. भौमादि ग्रहोंका
राश्यादि मंदोच्च भौमका ४ बुधका ७ गुरु ६ शुक्रका ३ शनिका ८
अब अभीष्ट ग्रहका मंदोच्च लेकरके दल संस्कृत ग्रहमें कम करना
तो मन्द्रकेन्द्र होता है. वह केन्द्रका पूर्वोक्त रीति करके भुज करना.
भुजका भाग करना जो अंश आवि सो आगे लिरवा मंद फल सारि

णीका अंशकोष्ठक तयार हैं अनंतर अर्धोष्ठ कोष्ठकके नीचेका अंश-
 आदि फल लेना. अनंतर फलके नीचे ६० कला विकला कोष्ठक लिखे
 हैं उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्प्रमित कलाका कला-
 दि और विकलाका विकलादि फलको एकत्र करिके उसको पूर्व फलमें युक्त
 करना तो उन ग्रहोंका मन्दफल होता है. ऋणधन मन्दकेन्द्र परसे जानिके
 उस फलको मध्यम ग्रहोंमें धनवा ऋणकरना तो मन्द स्पष्ट ग्रह होगा और
 उसी मन्द फलको प्रथम शीघ्र केन्द्रमें विलोम अर्थात् धन होय तो ऋण
 और ऋण होय तो धन करना तो द्वितीय शीघ्र केन्द्र होता है. उस शी-
 घ्रकेन्द्र परसे प्रथम शीघ्र फलके रीतिसे फल आनिकर मन्द स्पष्ट में
 ऋण धन करना तो वह स्पष्ट होता है. यही रीति भौमादिकोंकी है ॥ ॥
 मंगल शुक्रका विशेष ॥ ॥ शुक्रारयोश्चल भवोन्त्यगतो यदाङ्ग-
 इति ॥ टीका:- जय भौम और शुक्रका अंतिम शीघ्र केन्द्रको पङ्क-
 भात्य करिके अंश करते हैं तो वह अंश यदि १६५ से १८० तक होय तो सं-
 स्कार करनेका पृथक् पृथक् सारिणी लिखी है उत्कानाम अन्त्याङ्क फल
 सारिणी है. उसमेंसे शीघ्र फलके सदृश फल ले आना और उस फलको
 केन्द्रके वशा करिके ऋण धन करना तो स्पष्ट शुक्र० भौममें तो वह ठीक
 २ स्पष्ट होते हैं ॥ भौमादि ग्रहोंकी गति स्पष्ट करनेका प्रकार ॥
 मन्द फल सारिणीमें दहनी तरफ गति फल लिखा है पन्द्रह २ कोष्ठका
 उसको कर्कादि मकरादि केन्द्र बसकर धन ऋण जानना. और शीघ्र सा-
 रिणीमें दहिनी तरफ १५ कोष्ठका गति फल धन वा ऋण लिखा है उन दो-
 नों गति फलोंको एकत्र करना अर्थात् दोनों धन होय वा ऋण होय तो ये
 ग करना और एक धन एक ऋण होय तो अनंतर करना तो उस फलके
 सदृश ग्रह गति स्पष्ट होती है जब योग वा अनंतर ऋण वचै तो वक्र-
 गति जानना यह स्पष्ट गतिको मध्यम गतिका कारण लगता नहीं.

भौमबुधशुक्र इनकी गतिमें विशेष.

भौमबुधशुक्र इनका पञ्चाल्प अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १६५ से १८०
 तक अंश आवे तो यह संस्कार करनेके वास्ते वह ग्रहोंका शीघ्र फल सा-
 रणीके अंत्यमें पृथक् अंत्यांक गति फल सारणी लिखी है अनंतर यह
 सारणीमें जो अर्धोष्ठ अंश आवे तत्प्रमित कोष्ठकके नीचेका कलादि
 ऋण फल लिखा है वह लेकरके अंश फलके नीचे ६० कोष्ठक लिखा है
 उसमेंसे अंशके नीचे जो कला विकला होय तत्प्रमित कोष्ठकके
 नीचेका कलाका फल कलादि वही कलादि फल विकलाका विकलादि

फल एकत्र करके वह सर्वकाल क्रण है इस वास्ते लिपाजी अंश फल
उस्में युक्त करना तो शीघ्र गति फल तैयार होता है. अनंतर यह फलका
पहिले प्रमाण मंद स्पष्ट गति फलको संस्कार करना तो भीम बुध भृगु
इनकी स्पष्ट गति होती है.

प्रथमशीघ्रकेन्द्रम्.

आशुफलं भौमादि.

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
६	७	६	७	८		२०	१७	६	६५	५	
१८	७	२०	१३	२४	फ.	८	२२	२२	५६	१	फ.
४	३	५४	४२	३२		०	५३	४८	४०	७	
३२	१८	५	१३	१८							

आशुफलाईम्.

आशुफलाई संस्क्रता भौमादि

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
१४	८	३	२२	२		५	०	५	११	२	
४	४१	११	४०	३०		८	२	८	१८	१४	
०	२६	२४	२०	३३		३	३०	६	१३	८	
						२४	३०	२७	३६	४	

मन्दकेन्द्रम्.

मन्दफलम्.

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
१०	६	०	३	५		७	१	१	१	५	
२१	२७	२०	११	१५		१२	५६	५४	३०	४७	
५६	२८	५३	४६	५०		१४	५८	३९	०	३२	
३६	३०	३३	२४	५६		३६	३६	२६	०	१५	

मन्दस्पष्टभौमादि.

द्वि० शीघ्रकेन्द्रम्

द्वि० शीघ्रफलम्.

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
५	०	५	०	२		६	७	६	७	८		३३	१७	५	४५	५
१६	९	१६	१२	१८		२६	८	२६	१२	२२		५०	५४	५९	४५	५
५५	१४	१२	४१	२७		१६	०	५९	१२	४४		५४	५	५३	५२	२४
१०	५८	३०	५६	८		४६	१७	२६	१३	४७		७	११	५	५४	४
												३८	८	०	३८	२४
												ध.	ध.	क.	ध.	ध.

स्पष्टग्रह भौमशीघ्र फल सारिणी.

श्री	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.ध.
फ०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	०
क०	०	२३	४६	६९	९२	११५	१३८	१६१	१८४	२०७	२३०	२५३	२७६	२९९	३२२	४३
ध.	०	२३	४६	६९	९२	११५	१३८	१६१	१८४	२०७	२३०	२५३	२७६	२९९	३२२	४३
१६	१७	३०	४२	५०	५९	६८	७७	८६	९५	१०४	११३	१२२	१३१	१४०	१४९	३०
१६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३
११	३६	५७	७९	९९	११९	१३९	१५९	१७९	१९९	२१९	२३९	२५९	२७९	२९९	३१९	३२
३३	३३	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०
४०	८	३२	५५	७८	१०१	१२४	१४७	१७०	१९३	२१६	२३९	२६२	२८५	३०८	३३१	५७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	०	०	०	०	०	०
२०	६३	६	२८	५३	७८	१०३	१२८	१५३	१७८	२०३	०	०	०	०	०	०
श्री	१५	३६	५७	७८	९९	१२०	१४१	१६२	१८३	२०४	२२५	२४६	२६७	२८८	३०९	ग.ध.
फ०	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	१०	१०	१०	११	११	४३
क०	४८	११	३५	५८	८२	१०६	१३०	१५४	१७८	२०२	२२६	२५०	२७४	२९८	३२२	४३
ध.	०	२३	४६	६९	९२	११५	१३८	१६१	१८४	२०७	२३०	२५३	२७६	२९९	३२२	४३
१६	१७	३०	४२	५०	५९	६८	७७	८६	९५	१०४	११३	१२२	१३१	१४०	१४९	३०
१६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३
१७	६१	६	२८	५३	७८	१०३	१२८	१५३	१७८	२०३	२२८	२५३	२७८	३०३	३२८	३५
३३	३३	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१८	१८	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	०	०	०	०	०	०
२०	६३	६	२८	५३	७८	१०३	१२८	१५३	१७८	२०३	२२८	२५३	२७८	३०३	३२८	३५

भौमशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गण
फं०	११ ४२ ०	१२ ४ ४८	१२ १७ ३६	१२ ५० २६	१२ १३ १२	१३ ३६ ०	१३ ५८ ४८	१५ २१ २६	१६ ४५ २६	१५ ७ १२	१५ ३० ०	१५ ५२ ४८	१६ १५ ३६	१६ ३८ २६	१७ १ ३१	४२ ५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
५	२८	५०	१३	३६	५८	२२	४६	७	३०	५३	१६	३८	१	२६	४७	१०
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८
३२	५५	१८	४८	६	२६	४८	१२	३५	५८	२०	४३	६	२८	५२	१४	३६
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१८	१८	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	०	०	०	०	०	१
०	२३	४६	१८	३१	५४	१७	४०	२	५	४८	०	०	०	०	०	०
श्रीको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फं०	१७ २६ ०	१७ ४५ ३६	१८ १७ १२	१८ २८ ४८	१८ ५० २६	१९ १२ ०	१९ ३३ ३६	१९ ५५ १२	२० १६ ४८	२० ३८ २६	२१ ० ०	२१ २१ ३६	२१ ४३ १२	२२ ६ ४८	२२ २६ २६	४२ १४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
४६	७	२८	५०	१२	३६	५५	१७	३८	०	२२	४३	५	२८	४८	१०	३१
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
५३	१६	३६	५८	१८	४१	२	२६	४६	७	२८	५०	१२	३६	५५	१७	३१
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१८	१८	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	०	०	०	०	०	०
०	२३	४६	५	२६	४८	१०	३१	५२	१६	३६	०	०	०	०	०	०

भौमशीघ्रफलसारिणी.

क्र०	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गण.
फ०	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२७	२७	४१
	६८	८	२८	४८	८	३०	५०	१०	३१	५१	१२	३२	५२	१३	३३	४१
	०	२६	४८	१२	३६	०	२६	४८	१२	३६	०	२६	४८	१२	३६	३८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
	०	२०	४१	१	२२	४२	२	२३	४३	४	२४	४४	५	२५	४६	६
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०
२६	४७	७	२८	४८	८	२८	४९	१०	३०	५०	११	३१	५२	१२	३२	४२
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
१३	३६	५६	१४	३५	५५	१६	३६	५६	१७	३७	५८	१८	३८	५८	१०	४०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६६	६६
१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	२०	२०	०	०	०	०	०	०
०	२०	४१	१	२२	४२	२	२३	४३	४	२४	०	०	०	०	०	०
अंकी	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गण.
फ०	२७	२८	२८	२८	२८	२८	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	४०
	५६	१२	३०	४८	७	२६	४६	२	२१	३८	५६	१६	३६	५३	११	४०
	०	२६	४८	१२	३६	०	२६	४८	१२	३६	०	२६	४८	१२	३६	३८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४
	०	१८	३७	५५	१४	३२	५०	८	१७	४६	४	२२	४१	५८	१८	३६
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
५६	१३	३१	५०	८	२६	४५	३	२२	४८	५८	१७	३५	५६	१२	३०	४८
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
७	२६	४६	२	२१	३८	५८	१६	३५	५३	११	३०	४८	७	२५	४३	२
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	०	०	०	०	०	०
३०	३८	५७	१५	३६	५२	११	२८	४७	६	२६	०	०	०	०	०	०

भौमशीघ्रफल सारिणी.

श्रीको	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गण
फ०	३०	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	४
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
४	४	५	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८
६६	३२	३८	४	२०	३६	५२	७	२६	४०	५६	७२	८८	०	१६	३२	४८
३३	३६	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
८	८	८	८	९	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
४८	४	२०	३६	५२	६८	८४	१००	११६	१३२	१४८	१६४	१८०	१९६	२१२	२२८	२४४
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	०	०	०	०	०	०
२७	२६	५२	८	२४	४०	५६	७२	८८	०	०	०	०	०	०	०	०

श्रीको	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	गण
फ०	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६
५८	१०	२६	४२	५८	७४	९०	१०६	१२२	१३८	१५४	१७०	१८६	२०२	२१८	२३४	२५०
३३	३६	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
८	८	८	८	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०	०	०	०	०
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

भौमशीघ्रफलसारिणी-

श्रीको	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.घ.
फ०	३८ १८ ०	३८ २० ४८	३८ २३ ३६	३८ २६ २४	३८ २८ १२	३८ ३२ ०	३८ ३४ ४८	३८ ३७ ३६	३८ ४० २४	३८ ४३ १२	३८ ४६ ०	३८ ४८ ४८	३८ ५१ ३६	३८ ५४ २४	३८ ५७ १२	३२ ५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	३	६	९	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१	३४	३६	३८	४२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४५	४८	५०	५३	५६	५८	६	६	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४	२७	३०
३३	३६	३९	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
३२	३५	३८	४१	४३	४६	४८	५२	५५	५८	०	३	६	९	१२	१६	१७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०	०	०	०	०	०
२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	०	०	०	०	०	०

श्रीको	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	ग.घ.
फ०	४० ०	३८ १७ १२	३८ २४ २६	३८ २१ २६	३८ १८ ४८	३८ १५ ०	३८ १२ १२	३८ ९ २४	३८ ६ ३६	३८ ३ ४८	३७ ०	३७ १२	३७ २४	३७ ३६	३७ ४८	२५ २
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	१३	२६	३९	५१	६४	७७	९०	१०२	११५	१२८	१४१	१५४	१६७	१८०	१२
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
२५	३८	५०	६३	७६	९०	१०२	११५	१२८	१४१	१५४	१६७	१८०	१९३	२०६	२२०	५०
३३	३६	३९	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४८
७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९
२	२५	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०	१०
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	०	०	०	०	०	०
५०	५३	६	१८	३१	४४	५७	७०	८३	९६	१०९	०	०	०	०	०	०

अन्त्यांकफलसारिणी.

अंकी	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
क०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३	४	५
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१	२	३	४	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४
३३	३६	३९	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९
३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०	०	०	०
१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	अन्त्यांकगतिफलसारिणी.					
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०						
अंकी	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
क०	३	५	६	७	८	१०	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२२	२३	०
क०	३५	०	२५	५१	१७	४३	८	३४	०	२५	५१	१७	४३	८	३५	०
क०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३४	३६	३७	३८	४०	४१	४३	४४	४६	४७
३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
४८	५०	५१	५३	५४	५५	५७	५८	०	१	३	५	६	७	८	१०	११
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०
१३	१४	१६	१७	१८	२०	२२	२३	२४	२६	०	०	०	०	०	०	०

भौममंदफल सारिणी.

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
फं.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	५
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	०
	०	१२	२३	३४	४५	५६	६७	७८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	०	०
५४	६	१७	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४	१०५	११६	१२७	१३८	१४९	१६०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	०
०	४०	०	११	२३	३४	४५	५६	६७	७८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	०
०	५५	६६	७७	८८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०
०	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	४२	५६	५	१७	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४	१०५	११६	१२७	१३८	१४९
अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फं.	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	०
कं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फं.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	०
	०	११	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	०
०	४०	५६	१०	२२	३३	४४	५५	६६	७७	८८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	०
०	३५	४६	५७	६८	७९	९०	१०१	११२	१२३	१३४	१४५	१५६	१६७	१७८	१८९	१९०
०	४५	५६	६७	७८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	३५	३५	४६	५७	६८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९

भौममंद फल सारिणी.

श्रंको	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	प.क.
५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८		५
४२	५३	६	१५	२६	३८	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	०	३६
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८		
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
फ०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	०
	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	६३	७४	८५	९६	
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	०
	४८	५८	१०	१२	१३	१४	१५	६	१८	२८	४०	५१	६२	७३	८४	
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८
२६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४
४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०	०	०
४६	५८	१०	२०	३०	४२	५४	६	१६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४	
श्रंको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	प.क.
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	१०	४
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	४
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	०
	०	१०	२०	३०	४०	५०	६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
फ०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	०
	२६	३६	४७	५८	०	१२	२३	३४	४५	०	१०	२१	३२	४३	५४	
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	०
१८	५८	८	१७	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०	०
३२	३३	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	७	१६	२६	३६			

भौममंदफल सारिणी.

अंको	६०	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
फ०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
क०	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
क०	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८
फ०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
क०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
फ०	२०	२६	३२	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	११०	११६	१२२	१२८
क०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
फ०	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क०	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४
फ०	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४
अंको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
फ०	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
फ०	०	२	५	७	१०	१२	१६	१७	२२	२६	२६	२६	२८	३१	३६	३६	३६	३६	३६
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
फ०	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	१	५	७	१०	१२	१६	१७	२२
क०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
फ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
क०	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५
फ०	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
क०	५२	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१६	१७	२२	२६	२६	२६	२८	३१	३६	३६

बुधशीघ्रफलसारिणी.

अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	गण
कं.	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१०२
धं.	५	२०	२६	३८	३	१८	२२	६५	१	१५	३०	४६	५८	१३	२७	३५	२०
कं.	०	१	२	२	६	५	६	७	८	८	१०	११	१२	१३	१६	१६	०
धं.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	०
कं.	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२६	२५	२६	२७	२८	२८	२८	०
धं.	३	३	६	६	६	६	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	०
कं.	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	२८	२८	३०	३१	३२	३३	३६	३६	०
धं.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	०
कं.	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५६	५५	५६	५७	५८	५८	५८	६०
धं.	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१६	१६	१६
कं.	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५८
अं.	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५६	५५	५६	५७	५८	५८	५८	गण
कं.	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१६	१६	१६	१६	१६	१६
धं.	४२	५५	८	११	२६	४८	१	१६	२७	४०	५६	७	२०	३३	४६	६८	६८
कं.	०	१	२	३	६	५	६	७	८	८	१०	११	१२	१३	१६	१६	०
धं.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	०
कं.	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२६	२५	२६	२७	२८	२८	२८	०
धं.	१	३	३	३	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	६	६	०
कं.	२०	२१	२२	२३	२६	२५	२६	२७	२८	२८	३०	३१	३२	३३	३६	३६	०
धं.	८	८	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०
कं.	४५	४६	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५६	५५	५६	५७	५८	५८	५८	६०
धं.	८	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
कं.	५५	५६	५७	५८	५८	५०	५१	५२	५३	५६	५५	५६	५७	५८	५८	५८	६०

सप्तग्रह बुध शीघ्र फल सारिणी.

६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	०	ग.घ.
१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	क०	८२
११	२२	३३	४४	५५	७	१०	२०	३०	४०	५२	६	१६	२५	३६	४८	४४
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	घ०	०
१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	क०	०
२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	घ०	०
४०	५०	६०	७०	८०	९०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	क०	०
२०	३१	४२	५३	६४	७५	८६	९७	१०	१०	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	घ०	०
२६	३७	४८	५९	७०	८१	९२	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	१२	घ०	०
६५	७६	८७	९८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	६०	०
८	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०
२६	३५	४६	५८	६	२०	३१	४२	५३	६	१२	२३	३४	४५	५६	१	१२
७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८८	ग.घ.	ने.श्री.
१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	क०	८४
६८	७९	९०	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	३७	६५
०	२६	३७	४८	५९	७०	८१	९२	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	२०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	घ०	०
०	०	१७	२५	३६	४७	५८	७	१६	२७	३८	४९	६०	७१	८२	५८	०
१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	क०	०
२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	घ०	०
६	१६	२७	३८	४९	६०	७१	८२	९३	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०
२०	३१	४२	५३	६४	७५	८६	९७	१०	१०	१०	११	१२	१३	१४	क०	०
४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	घ०	०
१२	२०	३०	४०	५०	६०	७	११	१८	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४	०
४५	५६	६७	७८	८९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	०
६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	०
१६	२६	३५	४६	५७	६८	७९	९०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	०

बुधशुद्धफल सारिणी.

१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	गण	शुद्धि
२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१८	१८	१८	१८		
१२	५	५८	५१	४४	३८	३१	२४	१७	१०	४	५७	५०	४३	३६	२८	५०
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५०	५०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
शुद्धि	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
शुद्धि	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	०
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
शुद्धि	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
शुद्धि	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
शुद्धि	६	१२	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०
शुद्धि	२३	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
क०	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१६	१५	११
शुद्धि	३०	१७	५	४	३	२	१	०	०	०	५०	३६	१८	२	२६	८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
शुद्धि	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	०
क०	०	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	७२	८८	१०४	०
शुद्धि	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
क०	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	०	०
शुद्धि	०	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	७२	८८	१०४	०
क०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
शुद्धि	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	०	०
क०	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	७२	८८	१०४	०	०
शुद्धि	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
क०	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	०
शुद्धि	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	७२	८८	१०४	०	०

बुधशीघ्रफल सारिणी.

शंकी	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५
फ०	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६
क०	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
श०	६	७	७	७	८	८	८	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
श०	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
श०	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६
क०	६०	६१	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४
श०	८	८	७	७	६	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
श०	८	८	७	७	६	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९
क०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
श०	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६
क०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
श०	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३४
क०	६०	६१	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४

अत्यांकगतिफलसारिणी.

अंज	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
फ०	३७	३८	४०	४२	४३	४५	४६	४७	४८	५०	५२	५३	५५	५६	५७	५८
श०	५२	५८	६३	६८	७५	८१	८६	९२	९८	१०३	१०८	११५	१२१	१२८	१३५	१४१
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
श०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	२३	२४	२६	२७	२८	३०	३१	३३	३४	३६	३७	३८	४०	४१	०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
०	४३	४४	४६	४७	४८	५०	५१	५३	५४	५६	५७	५८	०	१	३	०
०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२०	२१

बुध मंदु फलसारिणी.

अंकी	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	४
श०	०	४	८	१४	१८	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	६२	६७	७४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	०
०	१३	१७	२२	२६	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	८	१३	१८	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
०	२६	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	६२	६७	७२	७७	८२	८७	९२	०
०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
०	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०

बुधमंद फल सारिणी.

शंको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	गफ
फ०	१ १२ ०	१ १५ ३६	१ १८ १२	१ २२ ४८	१ २६ २४	१ ३० ०	१ ३३ ३६	१ ३७ १२	१ ४० ४८	१ ४४ २४	१ ४८ ०	१ ५१ ३६	१ ५५ १२	१ ५८ ४८	२ ६० २४	३ ६३ ३६	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	५४	५८	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१	४५	४९	५३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ६	२ ९	२ १०	२ १३	२ १६	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	३ ४०	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	२ ४२	२ ४६	२ ४८	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २५	३ २८	३ ३२	३ ३६	०
शंको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ	
फ०	२ ६ ०	२ ८ ४८	२ ११ ३६	२ १४ २४	२ १७ १२	२ २० ०	२ २२ ४८	२ २५ ३६	२ २८ २४	२ ३१ १२	२ ३४ ०	२ ३६ ४८	२ ३९ ३६	२ ४२ २४	२ ४५ १२	३ ४८ ४८	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	४२	४६	४८	५०	५३	५६	५९	६	७	१०	१३	१६	१८	२१	२३	०	
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	१ २४	१ २७	१ ३०	१ ३२	१ ३५	१ ३८	१ ४१	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५२	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	३ ६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	२ ६	२ ८	२ १२	२ १४	२ १७	२ २०	२ २३	२ २६	२ २८	२ ३१	२ ३४	२ ३७	२ ४०	२ ४२	२ ४६	३ ४८	०

बुध मंदफल सारिणी.

श्रीको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गफ.
०	२ ४५ ०	२ ५० ०	२ ५२ ०	२ ५४ ०	२ ५६ ०	२ ५८ ०	३ ० ०	३ २ ०	३ ४ ०	३ ६ ०	३ ७ ०	३ १० ०	३ १२ ०	३ १४ ०	३ १६ ०	३ १८ ०	३ २० ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	०
श्रीको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गफ.	
फ०	३ ३८ ०	३ ४० ०	३ ४२ ०	३ ४४ ०	३ ४६ ०	३ ४८ ०	३ ५० ०	३ ५२ ०	३ ५४ ०	३ ५६ ०	३ ५८ ०	३ ६० ०	३ ६२ ०	३ ६४ ०	३ ६६ ०	३ ६८ ०	३ ७० ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	०

गुरुश्रीघ्नफलसारिणी.

श्रेणी	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गण
फ०	२ ३० ०	२ ३८ ६८	२ ४७ ३६	२ ५६ २४	३ ६ १२	३ १४ ०	३ २२ ४८	३ ३१ ३६	३ ४० २४	३ ४९ १२	४ ५८ ०	४ ६७ ६८	४ ७६ ३६	४ ८५ २४	४ ९४ १२	१२ २०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ८	० १८	० २६	० ३५	० ४४	० ५३	१ २	१ ११	१ २०	१ २९	१ ३८	१ ४७	१ ५६	२ ६५	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ १२	२ २८	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ६	३ १४	३ २२	३ ३१	३ ४०	३ ४९	३ ५८	४ ६७	४ ७६	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ २४	४ ३३	४ ४२	४ ५०	४ ५९	५ ६	५ १७	५ २६	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ ६२	६ ७१	६ ८०	६ ८९	०
०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
०	६ ३६	६ ४५	६ ५४	७ २	७ ११	७ २०	७ २९	७ ३८	७ ४७	७ ५६	८ ६	८ १५	८ २४	८ ३३	८ ४२	८ ५१
श्रेणी	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गण
फ०	४ ४२ ०	४ ५० २४	४ ५८ ४८	५ ६ १२	५ १५ ३६	५ २४ ०	५ ३३ २४	५ ४२ ४८	५ ५१ ३६	५ ६० २४	६ ६९ ०	६ ७८ २४	६ ८७ ४८	६ ९६ ३६	६ १०५ २४	१२ ३६ ०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	० ०	० ८	० १८	० २६	० ३५	० ४४	० ५३	१ ६	१ १५	१ २४	१ ३३	१ ४२	१ ५१	१ ६०	१ ६९	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२ ६	२ १५	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४९	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३९	३ ४८	३ ५७	४ ६५	४ ७४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३७	४ ४६	५ ५५	५ ६	५ १५	५ २४	५ ३३	५ ४२	५ ५१	५ ६०	५ ६९	६ ७८	०
०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
०	६ १८	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ६	७ १५	७ २४	७ ३३	७ ४२	७ ५१	७ ६०	७ ६९	७ ७८	८ ८७	८ ९६

गुरुश्रीघ्नफलसारणी.

श्रीको	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	ग.घ.
फं०	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	९	१०
०	६८	५६	१	८	१५	२२	२८	३५	४२	४९	५६	६	६	१६	२३	३०	४०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
०	०	७	१६	२०	२६	३१	३८	४६	५४	६	८	१५	२२	२८	३५	४२	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	०
०	६३	६८	५६	२	८	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	६	१०	१७	२४	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	०
०	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	०
०	२६	३१	३८	४६	५१	५८	६	१२	१८	२५	३२	३८	४६	५२	५९	६६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	०
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३	११०	०

श्रीको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
फं०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९
०	३०	३५	४०	४५	५०	५६	६	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
०	०	१५	१०	१६	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५३	५७	६	११	१६	२२
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
०	१८	२३	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८२	८८	९४	१००	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
०	३६	४१	४७	५३	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०१	१०७	११३	११९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
०	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०१	१०७	११३	११९	१२५	१३१	१३७	१४३

गुरुशीघ्र फल सारिणी.

श्रीको	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग-ध-
फ०	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	७
०	४८	५१	५४	५७	०	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९	३२	४०
०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	४०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	३	६	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३३	३६	३९	४२	४५	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
०	३६	३८	४२	४६	४८	५२	५५	५८	६	५	८	११	१६	१८	२२	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
०	२४	२७	३०	३४	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	६	६	६	१२
श्रीको	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	१	२	३	१०४	ग-ध-
फ०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५
०	३६	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	५
०	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	४०
फ०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०	१०	१०	११	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२	२२	२३	२३	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२४	२५	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	३६	३७	३८	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४६	४७	४८	४८

गुरुश्रीघ्न फल सारिणी.

श्रंको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	गण
फ०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	३
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
स०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	६०	६३	६५	६८	७०	७३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
०	१२	१४	१७	१८	२२	२४	२६	२८	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४८	०
०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	०
०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०	६८	७०	७३	७५	७८	०	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१८	२२	२४	०

श्रंको	१००	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	गण
फ०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
स०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	६०	६३	६५	६८	७०	७३
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
०	१२	१४	१७	१८	२२	२४	२६	२८	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४८
०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
०	६८	७०	७३	७५	७८	०	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१८	२२	२४

स्यष्टमह गुरुतीव्र फल सारिणी.

श्रीको	१३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	गक्र.
फं०	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
क्र०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	०
श्रीको	१५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	गक्र.
०	६	६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
क्र०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
क्र०	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	०

गुरुशीघ्र फल सारिणी चक्रम्.

श्रंको	१६५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	गफ.
क०	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	०	७
क०	२६	२१	७	५२	३८	२६	८	५५	६०	२६	१२	५७	६३	२८	१६	२६	०
क०	०	२६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०	०
क०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	०
क०	०	१६	२८	६३	५८	१२	३६	६१	५५	१०	२६	३८	५३	७	२२	०	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
क०	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	०
क०	३६	५०	५	१८	३६	६८	२	१७	३१	४६	०	१६	२८	५३	५८	०	०
क०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	०
क०	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	१०	१०	१०	१०	०
क०	१२	३६	६१	५५	१०	२३	३७	५१	६	२१	३६	५०	५	१८	३६	०	०
क०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	६०
क०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४
क०	६८	२	१७	३१	६६	०	१६	३८	६३	५८	१२	२६	६१	५५	१०	२६	०

गुरु मंद फल सारिणी.

श्रंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ.
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
क०	०	५	११	१६	२२	२८	३३	३८	४४	५०	५६	१	७	१२	१८	२८
क०	०	२६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०	३६	१२	६८	२६	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
क०	०	६	११	१७	२२	२८	३६	३८	४५	५०	५६	२	७	१३	१८	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
क०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
क०	२६	३०	३५	४१	४६	५२	५८	६	८	१६	२०	२६	३१	३७	४२	०
क०	०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	०
क०	०	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	०
क०	५८	५६	५८	५	१०	१६	२२	२७	३३	३८	४६	५०	५५	१	५	०
क०	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
क०	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५
क०	११	१७	२२	२८	३६	४०	४६	५७	६	१६	२८	३५	३०	३	५	५

स्पष्टग्रहगुरुमंदफलसारिणी.

श्रीको	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ.
०	१ २६ ०	१ २८ १२	१ २६ २६	१ ३८ ३६	१ ४४ ४८	१ ५० ०	१ ५५ १२	२ ० २६	२ ५ ३६	२ १० ४८	२ १६ ०	२ २१ १२	२ २६ २६	२ ३१ ३६	२ ३६ ४८	० २६ २६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३३	१ ३८	१ ४४	१ ४९	१ ५४	२ ०	२ ५	२ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ५६	३ ५८	४ ०	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

गुरुमंदफलसारिणी.

श्रीको	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ.
०	२ ४२ ०	२ ४६ ४८	२ ५१ ३६	२ ५६ २६	३ १ १२	३ ६ ०	३ १० ४८	३ १५ ३६	३ २० २६	३ २५ १२	३ ३० ०	३ ३६ ४८	३ ३८ ३६	३ ४४ २६	३ ४९ १२	० २६ २६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	० ०	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१ १२	१ १७	१ २२	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५०	१ ५५	२ ०	२ ५	२ १०	२ १६	२ २१	०
०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
०	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ २	३ ७	३ १२	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ४९	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३ ५६	३ ५८	४ ०	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२

स्पष्टग्रहगुरुमंडफलसारिणी.

श्रं.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
क०	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३८	३९	४०	४१	४२
ध०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
०	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१

स्पष्टशुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.ध.
फ०	०	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७४
क०	०	२५	५०	१५	४०	६५	९०	११५	१४०	१६५	१९०	२१५	२४०	२६५	२९०	५३
ध०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
०	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रींकी	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गण
फ०	३० १२ ०	३० ३२ ४०	३० ५३ २६	३१ १४ २४	३१ ३६ १२	३१ ५६ ०	३२ १६ ४०	३२ ३७ ३६	३२ ५० २६	३३ १८ १२	३३ ४० ०	३४ ० ४०	३४ ३१ ३६	३४ ४२ २४	३५ १ १२	७२ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	५ ३३	५ १२	५ ५४	६ १४	६ ३५	६ ५६	७ १७	७ ३०	७ ५०	८ १८	८ ४०	८ १	८ २२	८ ६२	९ ३	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	१० २४	१० ४५	६ ११	११ २६	११ ४७	१२ ८	१२ २८	१२ ५०	१३ १०	१३ ३१	१३ ५२	१४ १३	१४ ३४	१५ ५५	१५ १५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१५ ३६	१५ ५७	१६ १८	१६ ३९	१६ ५९	१७ २०	१७ ४२	१८ २	१८ २२	१९ ४३	१९ ६	१९ २६	२० ४६	२० ६	२० २७	२० ४८

शुक्रशीघ्रफल सारिणी.

श्रींकी	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	१००	१०१	२	३	१०४	गण
फ०	३५ २६ ०	३५ ४३ १२	३६ ४ २४	३६ २१ २६	३६ ४० ४०	३७ ० ०	३७ १८ १२	३७ ३७ २६	३७ ५७ ३६	३८ १६ ४८	३८ ३६ ०	३८ ५५ १२	३८ १४ २८	३९ ३३ ३६	३९ ५३ ४८	७१ ८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	४ ४८	५ ७	५ २६	५ ४५	६ ६	६ २६	६ ४३	७ २	७ २२	७ ४०	८ ०	८ १८	८ ३८	८ ५७	९ १७	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	८ ३६	८ ५५	१० १६	१० ३६	१० ५३	११ १२	११ ३१	११ ५०	१२ ११	१२ ३८	१२ ४८	१३ ७	१३ २६	१३ ४६	१४ ५	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	१६ ६	१६ ४३	१५ २	१५ २२	१५ ४१	१६ ०	१६ १८	१६ ३६	१६ ५८	१७ १७	१७ ३६	१७ ५५	१८ १४	१८ ३६	१८ ५३	१८ ८

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	ग.घ
फ०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	
०	१२	२७	४२	५७	७२	८७	१०२	११७	१३२	१४७	१६२	१७७	१९२	२०७	२२२	६८
०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	०
०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	०
०	१६	३७	५८	७९	१००	१२१	१४२	१६३	१८४	२०५	२२६	२४७	२६८	२८९	३१०	०
०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	०
०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
०	७	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	११	११	०
०	५१	६	२२	३७	५२	६७	८२	९७	११२	१२७	१४२	१५७	१७२	१८७	२०२	०
०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
०	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	०
०	३८	५८	७८	९८	११८	१३८	१५८	१७८	१९८	२१८	२३८	२५८	२७८	२९८	३१८	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	ग.घ
फ०	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	६४
०	०	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	६७	७५	८४	९२	१००	१०८	११६	२३
०	०	२४	४८	७२	९६	१२०	१४४	१६८	१९२	२१६	२४०	२६४	२८८	३१२	३३६	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
०	०	८	१७	२६	३५	४४	५३	६२	७१	८०	८९	९८	१०७	११६	१२५	०
०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
०	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	०
०	६	१६	२३	३१	४०	४८	५६	६५	७३	८२	९०	९८	१०७	११६	१२५	०
०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
०	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	०
०	१२	२०	२८	३७	४६	५५	६४	७३	८२	९१	१००	१०९	११८	१२७	१३६	०
०	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
०	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	०
०	१८	२६	३५	४३	५२	६०	६८	७६	८४	९२	१००	१०८	११६	१२४	१३२	०

शुक्रशीघ्रफलसारिणी.

अंक	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१०८	गफ
फ०	२२	२०	२८	२६	२३	२१	१८	१७	१५	१३	१०	८	६	४	२	०
३३६	२६	२५	१५	६	५४	४४	२३	२३	१२	२	५२	४१	३१	२०	१०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
क०	०	२	६	६	८	१०	१३	१५	१७	१८	२१	२३	२६	२८	३०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	२२	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४७	४८	५२	५४	५६	५८	६०	६३	०
	३६	४६	५७	७	१८	२८	३८	४८	५८	१०	२०	३०	४०	५१	२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	६५	६७	६८	७१	७३	७६	७८	८०	८२	८४	८६	८८	९१	९३	९५	०
	१२	२१	३३	४३	५४	६	१४	२५	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	८७	८८	१०२	१०४	१०६	१०८	११०	११३	११५	११७	११९	१२१	१२३	१२६	१२८	१३०
	४८	५८	८	१८	३०	४०	५०	१	११	२२	३२	४२	५३	६३	१४	२६

अंत्र्यांकफलसारिणी.

अंक	१६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१०८	गफ
फ०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०
ध०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	२०
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

अंशंकगतिफल सारिणी.

अंश	१६५	१६६	१६७	१६८	६८	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	१७८	१८०
५	०	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	४३	
८	६८	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५२	
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	४३	४७	०	
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
५०	५३	५७	०	२	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	०	
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०	
१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
६०	६३	६७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	०	
६५	६६	६७	६८	६९	७०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
३०	३३	३७	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	

शुक्रमंद फल सारिणी.

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	६	७	८	१२	१६	१९	२१	२४	२६	२८	३१	३३	३६	३९	४२
०	२६	४८	१२	३६	०	२६	४८	१२	३६	०	२६	४८	१२	३६	४८	२६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	२	६	७	१०	१२	१६	१७	१८	२२	२६	२६	२८	३१	३६	३९	४२
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	०	
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
१२	१६	१७	१८	२२	२६	२६	२८	२१	२६	२६	२८	३१	३३	३६	३९	४२
५५	५६	५७	५८	५९	६०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
६८	५०	५३			०	२	५	७	१०	१२	१६	१७	१८	२२	२६	

शुक्रमंदफल सारिणी.

श्रिका	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	गफ
फ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	२
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०

शुक्रमंदफल सारिणी.

श्रिका	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	गफ
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	६	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	०

शुक्रमंदफलसारणी.

श्रमिक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गक	
फ०	१ ३०	१ २६	१ ४८	१ १२	१ ३६	१ ०	१ २०	१ २४	१ ४८	१ १२	१ ३६	१ ०	१ २२	१ २४	१ ४८	१ १२	१ ३६	० २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	६	६	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	०

शुक्रमंदफलसारणी.

श्रमिक	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गक		
फ०	१ २४	१ २४	१ ४८	१ १२	१ ३६	१ ०	१ २०	१ २४	१ ४८	१ १२	१ ३६	१ ०	१ २२	१ २४	१ ४८	१ १२	१ ३६	० २४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	०
ध०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	६	६	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	०

शुक्रमंदफलसारिणी.

अंक	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिशीघ्रफलसारिणी.

अंक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ.
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	०
	०	०	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
	३०	३६	४२	-	०	६	१२	१८	२४	-	३०	३६	४२	४८	५४	०

शनिशीघ्रफल सारिणी.

श्रक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फ०	१ ३० ०	१ ३५ १२	१ ४० २४	१ ४५ ३६	१ ५० ४८	१ ५६ ०	२ १ १२	२ ६ २४	२ ११ ३६	२ १६ ४८	२ २२ ०	२ २७ १२	२ ३२ २४	२ ३७ ३६	२ ४२ ४८	०
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	२ ५४	२ ५९	२ ६४	२ ६९	२ ७४	२ ७९	२ ८४	२ ८९	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५२	२ ५७	३ ६२	३ ६७	३ ७२	३ ७७	३ ८२	३ ८७	३ ९२	३ ९७	३ १०२	३ १०७	३ ११२
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
	३ ५८	४ ६	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ ६१	५ ६६	५ ७१	०

शनिशीघ्रफल सारिणी.

श्रक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग०
	२ ४८ ०	२ ५२ २४	२ ५६ ४८	३ १ १२	३ ५ २६	३ १० ०	३ १६ २४	३ २१ ४८	३ २६ ७२	३ ३१ ९६	३ ३६ १२०	३ ४१ १४४	३ ४६ १६८	३ ५१ १९२	३ ५६ २१६	६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
ध०	०	६	८	१३	१८	२२	२६	३०	३५	४०	४६	४९	५३	५७	६२	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	१ ६	१ १०	१ १५	१ २०	१ २६	१ ३१	१ ३६	१ ४१	१ ४६	१ ५१	१ ५६	१ ६१	१ ६६	१ ७१	२ ७६	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	२ १२	२ १६	२ २१	२ २५	२ ३०	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५१	२ ५६	३ ६१	३ ६६	३ ७१	३ ७६	३ ८१	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३ ६	३ ११	३ १६	३ २१	३ २६	३ ३१	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५१	४ ५६	४ ६१	४ ६६	४ ७१	४ ७६	४ ८१

स्पष्टग्रहःशनिशीघ्रफल सारिणी.

श्रीको	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गण
फ०	३ ५४	३ ५७	४ १	४ ४	४ ८	४ १२	४ १५	४ १८	४ २२	४ २६	४ ३०	४ ३३	४ ३७	४ ४०	४ ४४	५ २६
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	५४	५८	१	५	८	१२	१६	१९	२३	२६	३०	३४	३७	४१	४४	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	४८	५२	५५	५८	२	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	४२	४६	४९	५३	५६	०	४	७	११	१४	१८	२२	२५	२८	३२	३६

शनिशीघ्रफल सारिणी.

श्रीको	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गण
फ०	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	०
	३६	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	०
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१२	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२८	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	०
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१६	१७	१९	२२	२४

शनिशीघ्रफल सारिणी-

शक्र	१०५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
फ.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४८	५०	५१	५३	५४	५६	५८	५९	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१२	१४	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३१	३३	३६	३६

शनिशीघ्रफल सारिणी-

शक्र	१२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
फ.	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४८	५१	५४	५८	६	६	७	१०	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३६
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	३६	३९	४२	४६	४९	५२	५५	५९	६	८	११	१६	१८	२१	२४	२७
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	२६	२७	३०	३६	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	६	६	६	६

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१
फं०	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
शु०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१२	१७	२२	२६	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	८	१३	१८	२३	२८
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	२४	२८	३३	३८	४२	४७	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०३
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४

शनिशीघ्रफलसारिणी.

श्रीको	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६
फं०	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
शु०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४
	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४

शनिशीघ्रफलसारिणी.

वर्ष	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	गण
फ.	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	५
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
मं.	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५७	६४	७१	७८	८५	९२	९९	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
	४८	५५	२	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	०
	३६	४३	५०	५७	६	१२	१९	२६	३३	४१	४८	५५	६	१०	१७	०	०
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	६०
	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
	२४	३१	३८	४६	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५७	६	१२	०

शनिमंदफलसारिणी.

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गण	
फ.	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	५	
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	०
मं.	०	७	१४	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६८	७६	८४	९२	९९	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	०
	५४	२	९	१७	२४	३२	४०	४७	५५	६	१०	१८	२५	३३	४०	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	०
	४८	५६	६	११	१८	२६	३४	४१	४८	५६	६	१२	१९	२७	३४	०
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
	४२	५०	५७	६	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५७	६	१३	२१	२८	३६

शनिमंदफलसारिणी.

अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	१२	२०	२९	३७	४६	५६	६६	७६	८६	९६	१०६	११६	१२६	१३६	१४६	१५६	१६६
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
	१८	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	६७	७५	८४	९२

शनिमंदफलसारिणी.

अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
क.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१५	२४	३३	४२	५१	६०	६९	७८	८७	९६	१०५	११४	१२३	१३२	१४१	१५०	१५९
	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	२४	३३	४२	५१	६०	६९	७८	८७	९६	१०५	११४	१२३	१३२	१४१	१५०	१५९

शनिमंदफल सारिणी.

श्र.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
क.	०	०	१३	२०	२७	३४	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	४२	४९	५६	६३	७०	७७	८४	९१	९८	१०५	११२	११९	१२६	१३३	१४०	१४७
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३	११०	११७	१२४	१३१
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३	११०

शनिमंदफल सारिणी.

श्र.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
क.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
क.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	१२	१७	२२	२७	३३	३९	४५	५१	५७	६३	६९	७५	८१	८७	९३	९९
	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३	११०	११७	१२४	१३१
	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	३६	४३	५०	५७	६४	७१	७८	८५	९२	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३४	१४१

शनिमंदफलसारिणी.

अ.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
फ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
क०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ०	०	२	३	५	६	८	१०	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	०
क०	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०
घ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२४	२६	२७	२८	३०	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४२	४३	४५	४६	०
	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	०
	४८	५०	५१	५३	५४	५६	५८	५९	६१	६२	६४	६६	६७	६८	६९	०
	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	१२	१४	१५	१७	१८	२०	२२	२३	२५	२६	२८	३०	३१	३३	३४	३६

॥ इति पंचतारा स्पष्टी करण सारिणी संपूर्णम् ॥

प्रथमशीघ्रफल.

यह मध्यम सूर्य्य ००।११।११।५६ इस्मेंसे मध्यम भौम ५।२२।०७।२४ कमकियातो यह ०६।१२।०४।३२ भौमका प्रथमशीघ्रकेन्द्र भया यह ६ राशिसे जादा है इसवास्ते १२ में पतित किया ५।१०।५५।२८ यह भया इसके अंश १६०।५५।२८ इसवास्ते इहां भौमशीघ्र फल सारिणी कोषक १६० के नीचेका अंश २८।५२।०० इस्को और अंशके नीचे कला ५५ है. इसवास्ते ५५ कला विकला कोषकके नीचेका कलादि फल ४३।३८ अब अंशकलाके नीचे विकला २८ है. इसवास्ते २८ कला विकला कोषकके नीचेका विकलादि फल २२।१३ यह ऋण सारिणीमें लिखा है. इसवास्ते लियाजो फल २८।५२।०० इस्में फल ००।०८।०० यह प्रथम शीघ्र फल भया इस्का अर्द्ध किया तो ०।४।००। अबकेन्द्र तुलका है इसवास्ते ऋण यह मध्यम भौम ५।२२।०७।२४ इस्में अर्द्ध कम किया तो ५।८।३।२४ यह दल संस्कृत भौम भया इसी रीतिसे और ग्रहकरनाकेन्द्रादि सहित सब ग्रह ३२के पत्रमें लिख दिये हैं.

भौमादिमंदोच्चम्.

मं	बु	रु	शु	श.
४	७	६	३	८
०	०	०	०	०
०	०	०	०	०

मंदफल.

भौमका मंदोच्च राशी ४।०।०।० इ-
स्से दल संस्थित भौम ५।८।३।२४
कमकिया तो बाकी १०।२।१।५६।३६
यह भौमका मंदकेन्द्र भया इस्का

शुज १।८।३।२४ इस्के अंश ३८।३।२४ हैं. इसवास्ते इहा भौम मन्दफल सारिणी कोष्ठक ३८ इस्के नीचेका अंक ७।११।३६ अब अंशके नीचे कला ३ है इसवास्ते ३ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल कलादि ०।३६ अब अंशकलाके नीचे विकला २४ है इसवास्ते २४ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल विकलादि ४।२८ एकत्र करके पूर्व फलमें युक्त किया तो यह ७।१२।१४ भौमका मंदफल भया. यह मंदकेन्द्र तुलादि क है इसवास्ते ऋणतो यह मध्यम भौम ५।२२।७।२४ इस्में कम किया तो ५।१६।५५।१० यह मंदस्पष्ट भौम भया. इसी रीति से बुधादिक ग्रह करना + अब यहि मंदफल ७।१२।१४ विपरीत कहिये धन इसवास्ते प्रथम शीघ्र केन्द्र ६।१२।४।३२ इस्में युक्त किया तो ६।२६।१६।४६ यह भौमका अंतिम शीघ्र केन्द्र भया.

अंतिमशीघ्रफल.

यह केन्द्र षडाधिक है इसवास्ते १२में पतित किया ५।३।४३।१४ यह हु-
वा अब इस्के अंश १५३।४३।१४ इस्का पूर्वोक्त शीघ्र फल सारिणी कोष्ठ-
क १५३ का नीचेका अंशादि फल ३४।२५।१२ यह अब अंशके नीचे कला ४३ है इसवास्ते ४३ कला विकला कोष्ठकके नीचेका फल कलादि ३४।७ यह अंशकलाके नीचे विकला १४ है इसवास्ते १४ कला विकला कोष्ठकमेंका विकलादि फल ११।६ यह सब फल क्रम सारिणीमें लिखा है इ-
सवास्ते प्रथम जो फल ३४।२५।१२ इस्में कम किया तो ३३।५०।५४ यह अंतिम शीघ्रफल भया यह केन्द्र तुलाका है इसवास्ते ऋण मंदस्पष्ट भौम ५।१६।५५।१० इस्में कम किया तो ४।११।४।१६ यह स्पष्ट भौम भया.

भौमशुक्र अंतिमशीघ्रकेन्द्रका अंश १६५ से ३८० तक अंश आवते हैं जद उस्का शीघ्रफल लेनेके खातर और उदाहरण कहते हैं मंगल का अंतिम शीघ्रकेन्द्रका अंश १७०।२०।२२ कल्पना करके अब मंगल शीघ्रकेन्द्र सारिणीमें अंशोंक सारिणीमें १७० अंशके नीचे अंशादि फल १।०।० यह अब अंशके नीचे कला २० इस्का फल ४।०।० और क-

लाफे नीचे विकला २२ इस्का फल १।२४ एकत्र करके १।४ इस्को पूर्वमें लियो जो फल सो सारणीमें धन लिखा है इसवास्ते कला विकला फल युक्त करके १।४।४ यह फलकेन्द्रका वससे ऋण धन ग्रहमें करना-

गल्युदाहरणम्.

भौमका अंतिम शीघ्र केन्द्रका अंश १५३ आया है इसवास्ते १५३ को एकका गतिफल ७।३० कलादि धन यह और मंद फल सारिणी को एक ३० इस्का गतिफल ५।३६ कलादि यह मंदकेन्द्र मकरादिक है इसवास्ते ऋणसो पूर्व गतिफलमें घटाया तो बाकी २।२ यह धनफल आया यही मंगलकी स्पष्टगति भई इस्के प्रमाण ऊपरके सारिणी परसे स्पष्ट बुधगुरु शुक्र शनि इनकी स्पष्टगति वनावना राहू जो अर्धम है वही सर्वदा स्पष्ट समझना विशेष यह उस्में ६ राशी युक्त करना तो केनू होता है

श्लोक.

जगदीशेनरचिते केशवीग्रंथटिप्पणे ॥
स्पष्टाधिकारपूर्णे च तद्वाच्यार्थप्रकाशकः ॥

इति स्पष्टाधिकारः

भौमादिकोंका द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश परसे अस्तादि जाननेका प्रकारः

श्लोक

त्रिवृषैः शरत्त्रिषुभिः शरत्केर्नगमूपैस्त्रिषु वैः क्रमालुक्ताद्याः ॥
चलकेन्द्रलवैः प्रयातिवक्रं मगणान्तैः पतितैर्भ्रजंति मार्गम् ॥
द्विगिज्ञोष्ठयमिरुदेति पूर्व गुरु रश्मि रविजस्तु सप्त चन्द्रेः ॥
स्यस्योदयभागसंविहाने मगणा शरपरत्रयातिचास्तम् ॥
स्यस्यैश्चजिनैः परेडात्तृणैरुदयोस्तोः क्षादिनेर्नगाद्रिभूमिः ॥
उदयोदनस्यैश्चहीन्दुभिः प्रागस्तोदिग्दहनैश्चपटसुरैः स्यात् ॥

टीका:- अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश क्रमसे भौमका १५३ बुधका १६५ गुरु का १७५ शुक्रका १६७ शनिका १९३ इतने अंश होयतो क्रमसे वकी ग्रह होतें। अंतर क्रमसे भौम १५३ बुध १६५ गुरु १७५ शुक्र १६७ शनि १९३ इतने अंश अंतिम शीघ्र केन्द्रके अंश होयतो क्रमसे वही ग्रह मार्ग होतें हैं।

अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे भीमका २८ गुरुका १४ और शनिका १७ होय तो भीमगुरु शनि इनका उदय पूर्वमें होता है - और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश अनुक्रमसे ३३२।३४६।३४३ इतने होयतो भीमगुरुशनि इनका अस्त पश्चिममें होता है और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश बुधका ५० शुक्रका २४ यह होयतो बुधशुक्र इनका पश्चिममें उदय होता है और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे १५५।१७७ यह होयतो बुधशुक्र इनका अस्त पश्चिममें होता है और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे २०५।१८३ यह होयतो बुधशुक्र इनका पूर्वमें उदय होता है + और अंतिमशीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे ३१०।३२६ यह होयतो बुधशुक्र इनका पूर्वमें अस्त होता है.

वक्रोदयादिगदितांशकतोऽधिकाल्याः केन्द्रांशकाः क्षि-
 श्लोक } तिसुताद्विगुणास्त्रिभक्ताः सांकाशकादशहतांगहताः कु-
 भक्तावक्राद्यमासदिवसैः क्रमतो गवैष्यम् ॥

टीका:- ग्रहोंका वक्र- उदय- अस्त-मार्ग इन्होंके जो अंतिमशीघ्रकेन्द्रांशक है वह उक्त शीघ्रकेन्द्रांश और अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रांश इनका अंतर करके अंतरांश क्रमसे भीमका दूना करना और बुधको ३ से भाग देना गुरुको १० से गुणके ८ से भाग देना और शुक्रको १० से गुणके ६ से भाग देना और शनिको १ से भाग देना तो भागाकार आवे सो वह दिन भया अनंतर उक्त शीघ्रकेन्द्रसे अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रांश अधिक होयतो वक्र उदय अस्त और मार्ग यह होयके उतने दिन भये ऐसा जानना. और जो उक्त शीघ्रकेन्द्रसे अभीष्टकेन्द्रांशकमती होयतो वक्र- उदय- अस्त और मार्ग यह होनेका इतने दिन आगे होगा ऐसा समझना.

रवगाः स्पष्टाः सजवाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	रा.	के.	लंकोदयल.		
१३	५	११	११	५	१०	२	४	१०	ग.	२७८	मं.
१०	२३	१६	२३	१२	२६	१३	२१	२१	रि.	२८८	कु.
४३	३५	१६	२०	३७	५६	२१	४०	४०	कि.	३२३	ग.
५८	७३१	२	५३	३७	४	४५	८	८	फं.	३२३	घ.
१६	४३	२	४४	२६	३८	३८	११	११	कि.	२८८	ख.
									कं.	२७८	ग.

लग्नबनानेकेलिए लंकोदयसे स्वदेशोदयल्यादनेकि रीति ॥

श्लोक } लङ्गोदयानागतुरङ्गदस्त्रा २७८ गोङ्गाग्निनो-
 २८८ रामरदा ३२३ विनाडयः ॥ क्रमोक्रमस्थाश्चर-
 खण्डकैः स्वैः क्रमोक्रमस्थाश्चविहीनयुक्ताः ॥

लंका में मेष राशीका उदय २७८ पल वृषभ राशीका उदय २८८ पल. मिथुन

राशीका उदय ३२३ पल. कर्क राशीका उदय ३२३ पल सिंह राशीका उदय २८८ पल कन्या राशीका उदय २७० पल रहता है और लंका में तुला राशीसे मीन राशी तक उदयके पल कन्या राशीसे उलटा मेष राशी तक लिखा है सो जानना. जिस देशका उदय करना होय उस देशका चरखंडालेके क्रमसे मेष वृष मिथुन इनका पलात्मक जो उदय उस्में कम करना और वही चरखंडा उलटा कर्क सिंह कन्या इनका जो पलात्मक उदय उस्में युक्त करना तो स्वदेशका उदय मेषसे कन्या तक होता है. और वही उदय उलटा तुलासे मीन तक होता है.

स्वदेशोदय बनानेका उदाहरण कहते हैं:

टी०- मेषका पलात्मक उदय २७० इस्मेंसे प्रथम चरखण्ड ७० यह कम किया तो २०० यह पलात्मक स्वदेशका मेषका उदय वृषभका पलात्मक उदय २८८ इस्में द्वितीय चरखण्ड ५६ यह कम किया तो २४३ यह स्वदेशका वृषभका उदय मिथुनका उदय ३२३ इस्में तृतीय चरखंड २३ यह कम किया तो ३०० यह मिथुनका स्वदेशी उदय कर्कका उदय ३२३ सिंहका उदय २८८ कन्याका उदय २७० इन सबमें क्रमसे ३३, ५६, ७० यह युक्त किया तो क्रमसे कर्कका ३५६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४० यह पलात्मक स्वदेशका लग्न बनाय यह उलटे रीतिसे तुलाका ३४० राशिकका ३५५ धनका ३४६ मकरका ३०० कुंभका २४३ मीनका २०० यह पलात्मक स्वदेशका उदय बना

लग्न बनानेका प्रकार:

राशि	११	१२	१३	१४	१५	१६	तात्कालिकः सायनः स्वोदयघ्ना
२४०	२५५	३५६	३००	२६३	२००	३००	भोग्यांशाः स्वशुद्धता भोग्यकालः
७५	१५	५	५	५५	५	५	॥ एवंपातांशे न वेद्यात्कालो भोग्यः
							गोचर्योऽतीतनाडी पलेभ्यः ॥

तदनुर्वाहप्रहोदयांश्वशेषंगगनगुणध्रमशुद्धत्त्वलवाद्यम् ॥
 महितमजादिष्टहेरशुद्धपूर्वेतिविलभमदोचनांशहीनम् ॥
 भोग्यतोत्प्रेकालात्परा माहतात्स्वोदयांशांशुग्भास्कर-
 स्स्यात्तनुः निशितुसपृष्ठाकात्स्यात्तनूरिष्टकालः ॥

टीका- जिस कालका लग्न करना होय उस कालका स्पष्ट सूर्य करके उ-
 स्में अयनांशा युक्त करना जो अंक अर्धे उस्मेंसे राशीका आंग करके
 जो अंशादिक फल रहे सो युक्त होता है और जो युक्त होयो ३० अंशमें
 कम फलसे अंशादि भोग्यफल होता है. अनंतर पूर्वमें जिस राशिका ल्या

गकिया है उसमें १ युक्त करके नत्परिमित राशीके उदयसे भुक्त और भोग्य गुण देना जो गुणाकार आवै उसको ३० से भाग देना जो भागाकार आवै सो क्रमसे भुक्त काल और भोग्य इनका पल होता है अब अभीष्ट घटिका जो होय उसका पल करके उसमें भोग्य कालका पल कम करना जो शेष रहै उसमें से जिस उदयसे गुणन किया होय उसके आगेके जितने पलात्मक उदय कम होय उतने कम करना और जो पलात्मक शेष रहै उसको ३० से गुणके जो गुणाकार आवै उसको जो उदय कम न भया होय वह उदयसे भाग देको फल अंशादि आवेगा उसमें अष्ट राशीसे जितना राशीका उदय कम भया होय उतनी राशी युक्त करना जो फल आवै उसमें से अथनांशा कमती करना तो अभीष्ट कालका राश्यादिल होता है

भुक्त कालसे लग्न करना होय तो अभीष्ट काल रखते बखत जो इष्ट घड़ी पल होय उसको ६० में घटायकर जो शेष रहै उसको अभीष्ट काल रखना भुक्त घटायकर जब लग्न घटावै उस बखत उलटा लग्न घटावै जैसे मेषका उदयसे गुणतो मीनकुंभादिक कमती करै और सब क्रिया भोग्यवत् करै.

रात्रीका लग्न करना होय तो स्पष्ट सूर्यमें ६ राशी युक्त करना अनंतर पूर्वीरिति प्रमाण लग्न बनावना परंतु अभीष्ट काल रखते बखत जो इष्ट काल होय उसमें दिनमान कम करके जो शेष रहै सो अभीष्ट रखना.

जन्म काल सूर्योदयसे ३२ घटिका १ पल उस बखतका लग्न साधन कर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य ००।१३।१०।४२ इस्में अथनांशा २२।४४।०३ यह युक्त करके १५।५४।४५ यह सायन सूर्य इस्की राशी त्याग करके ५।५४।४५ यह भुक्त भया यह ३० अंशमें कम करके अंशादि २४।०५।१५ यह भोग्य भया इस्की त्याग किया जो राशी उसमें १ युक्त करके एषके उदय २४३ से गुणके अंशादि फल ५८५३ कला १५ विकला ४५ इस्को ३० से भाग देके १८५।३।१५।४५ यह पलात्मक भोग्य काल भया इसही प्रकार भुक्त काल साधन करना अब सूर्योदयसे अभीष्ट घटी ३२ पल ०१ इस्का पल किया तो १२२। इस्में भोग्य काल १८५।३।१५।४५ यह कम करके शेष १७२५।२६।४४।१५ यह इस्में मियुनोदय ३०० कर्कोदय ३४६ सिंहोदय ३५५ कन्योदय ३४८ तुलोदय ३४८ यह कम करके शेष २८ पल इस्में चत्त्रिकोदय कम होतानहीं इसवास्ती शेष पल २८ इस्को ३० से गुणके नीचेका अंक २६ युक्त करके ८६६ यह इस्को चत्त्रिकोदय ३५५ से भाग देके अंश २ लब्ध भया शेष १५६ इस्को ६० से गुण तो २३६० इस्में कला ४४ युक्त करी तो यह २४०४ इस्को ३५५ से भाग देने से

कला २६ शेष १७४ इस्को ६० से गुणातो १०४४० इस्में विकला १५ युक्त किये
यातो १०४५५ यह इस्को द्वात्रिंशद्विंशद्विंशत् ३५५ से भाग देनेसे २८ विकला प्राप्त
भई अब पूर्वमें प्राप्त भया अंशदि ०२।२६।२८ यह इस्में भेदादि शुद्ध पर्यं
त राशी ७ युक्त कियातो ७।२।२६।२८ इस्में अयनांशा २२।४४।३ कम किये
यातो राश्यादिक लग्न स्पष्ट भया. ६।८।४२।२६ इस्में ६ राशी युक्त करी-
तो यह ००।८।४२।२६ सप्तम भाव भया.

अभीष्ट कालमें भोग्य काल कमती न होयतो लग्न बन-
वने की रीति.

पलात्मक अभीष्ट काल ३० से गुणके उसको सायन ग्रह की जो राशी हो-
यवहराशीके उदयसे भाग देके अंशदि फल आवेगा वह स्पष्ट सूर्यमें
युक्त करना तो इष्ट काल का लग्न होता है.

लग्नसे अभीष्ट काल करने की रीति

श्लोकः } अर्कभोग्यस्तनो भुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टका-
लो भवेत् ॥ यदि तनुदिननाथावेकराशीतदंशान्तरहत उदयः
स्यात्स्वामिह विष्टकालः इत उदय ऊनश्चेत्स शीघ्रोद्युरात्रात् ॥

टीका- लग्नमें अयनांशा युक्त करके जो अंक आवे उससे भुक्त काल करना.

और स्पष्ट सूर्यसे भोग्य काल करना अनंतर सायन लग्न और सायन सूर्य
इनके मध्यके जो उदय होय उतका अंक लेके उसमें भुक्त काल और भोग्य
काल इस्का अंक युक्त करना तो पलात्मक अभीष्ट काल होता है.

सायन लग्न और सायन सूर्य एक राशीमें होय तो लग्नसे अभीष्ट काल
साधने सायन लग्न और सायन सूर्य इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके
उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवे सो पलात्मक अभीष्ट का-
ल पलात्मक होता है. जो सायन सूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होय तो
पूर्व प्रमाण साधन किया जो कला सो ६० में से कम करना तो इष्ट काल होता है. ऊ-
पर कहावैसा प्रमाण जन्म काल का लग्न ६।८।४२।२६ यह इस्में ६ राशी
युक्त कियातो यह सप्तम भाव हुवा ०।८।४२।२६

नतीन्नत पूर्वकदशमचतुर्थ भाव साधन.

श्लोकः } रात्रेः शेषमितं युतं दिनदले नान्हीगतं शेषकं विश्ले-
ष्यं स्वलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिशच्युतं चोन्नतम् ॥ पत्पूर्वे-
न्नतपडु युक्तरवितः पश्चान्नतादित्यतो यल्लोकोदयके-
श्च लग्नमिव तन्माध्यसपडु भसुरवम् ॥ २ ॥

अन्वयः- रात्रिः शेषं वागतं दिनार्द्धेन युतं अन्ही दिनस्य गतं वा शेषं दिनदले
न विच्छेद्यं खल्विति निश्चयेन क्रमेण पूर्व पश्चिम नतं स्यात् तन्नतं त्रिंशद्युतं च
पुन उन्नतं स्यात् ॥ पूर्वोन्नतषड्युक्त रावितः लंको दयै लं न भिवयलुं नतन्मा
व्यं दशमं स्यात् एवं पश्चान्नता दित्यतः केवलार्कालं को दयकै लं न भिवयलुं न
तदशमं स्यात् सचः पडाडी युक्तं सुखं चतुर्थं स्यात्.

भाषा- दिनमें पूर्व नत दिनमें पश्चिम नत रात्रीमें पूर्व नत रात्रीमें पश्चिम नत ऐ
सा चार प्रकारका नत होता है. मध्यरात्रिके अनंतर जो शेष रात्र होय उसमें
दिनार्द्ध युक्त करना. तो रात्रीका पूर्व नत होता है. और मध्यरात्रके पूर्वमें जो
गत रात्र हो उसमें दिनार्द्ध युक्त करना तो रात्रीका पश्चिम नत होता है और म
ध्यान्हके पूर्व जो दिनगत घटिका होय वह दिनार्ध घडीमेंसे कम करना
तो दिनका पूर्व नत होता है. और मध्यान्हके अनंतर जो दिन शेष होय वह
दिनार्द्धमेंसे कम करना तो दिनमेंका पश्चिम नत होता है. यह नत ३० में
कम करनेसे उन्नत होता है यह पूर्व नत कम करे तो पूर्वोन्नत होता है और
पश्चिम नत कम करे तो पश्चिमोन्नत होता है. पूर्वोन्नत आया होय तो उन्नत
को इष्टकाल कल्याण करके तात्कालिक सूर्यमें ६ राशी युक्त करके लंको
दयसे पूर्व रीति प्रमाण लग्न साधनके ऐसा लग्न साधन करे और पश्चिम
नत आया होय तो नतको इष्टकाल कल्याण करके तात्कालिक सूर्यमें
लग्नके प्रमाण लंको दयसे लग्न साधन करे तो दशम भाव होता है. दशम
भावमें ६ राशी युक्त करे तो चतुर्थ भाव होता है.

टिप्पणः- वरोवर मध्यान्हमें जन्म होय तो तात्कालिक सूर्य दशम
भाव होता है. अथवा वरोवर मध्यरात्रीमें जन्म होय तो तात्कालिक
सूर्य चतुर्थ भाव होता है.

उदाहरणम्.

मध्यान्हके अनंतर शेष ०१११ दिन इस्को दिनार्द्ध १६।२१ इस्में कम करके
१५।४० यह पश्चिम नत भया. इस्को ३० में कम किया तो पश्चिमोन्नत १५।२० भ-
या. अत्र नत १५।४० को इष्टमान कर तात्कालिक सूर्य ००।१३।१०।४२ इस्में अ-
यनांशा २२।४५।०३ युक्त करके ०१।५।५५।४५ यह भुक्तांश भया इस्को
३० में कम किया तो २५।५।१५ यह भोग्यांश भया इस्को लंको दय रूपाका
मान २९९ से गुणा तो ७३०२।८।४५ इस्को ३० से भाग दिया तो २४०।२।८
।४५ यह भोग्यकाल पलात्मक भया इस्को नत १५।४० इस्की पल ८५०
में कम किया तो ६९९।२७।५०।१५ इस्में तिथि नोदय ३२३ कर्को दय ३२३

यह कम करके शेष ५३२७।५०।१५ इस्में सिंहोदय २८८ कम नहीं होता
इसवासे शेष ५३ को ३० से गुणातो १५८० इस्में नीचेका अंश २७ युक्त
कियातो १६।१७ इस्को सिंहोदय २८८ से भाग दियातो अशादि ५।२४
।३८ इस्में मेषादि शुद्ध पर्यंत राशी ४ युक्त करीतो ४।५।२४।३८ इस्में
अयनांशा २२।४४।३ हीन कियातो यह ३।१२।४०।३४ दशमभया इस्में
६ राशी युक्त करीतो ८।१२।४०।३४ यह चतुर्थ भाव भयाः

शेष आठ भाव साधन संधी और क्षय चय फल साधनम्.

श्लोकः

अंशो व्यस्तरवभस्य भूय महतो योज्यस्तनो द्विच्युतो बंधी
द्वेषिचसांगभास्तनुमुरवाः संधिर्द्वियोगोर्द्वितः ॥ शून्यसंधि-
षु भावगेखिलफलस्याद्भावसंध्यंतरेणासंसंधिखगांतरंदा-
यचयं भावाधिकत्येखगे ॥ ३ ॥

अन्वयः- व्यस्तरवभस्य अंशो भूय महता नो योज्यस्तदा द्वितीय
तृतीय भावो भवतः विगतमस्तं यस्मात्खभात्त इत्यस्तरवभंतस्येत्यर्थः
स एव अंशो द्विच्युतो द्वाभ्यां अच्युतो भूय महतश्चतुर्थ भावे योज्यस्त-
दा पंचषष्ठ भावो भवतः एक गुणित युक्ते पंचम भावः द्विगुणित युक्ते ष-
ष्ठ भावः स्यादित्यर्थः तेऽनंतरानीताश्चत्वारो भावाः सांगभाः षड्भाषि सहि
तास्तदा ऽष्टमनयमैकादशद्वादशभावाः स्युः अपिच शब्दावनुक्त बंध-
कोचत्वारो भावाः प्रथमं साधितास्तद्बोधकमित्यर्थः अथ संधिः संधिर्द्वि-
योगो ऽर्द्वितः द्वयोर्योगो द्वियोगो ऽर्द्वितो द्वयामः सन् संधिः स्यात्प्रथम
भावस्य विरामसंधिर्द्वितीयस्यारामसंधिर्भवतीति ॥ संधिसमेग्रहे
शून्यं फलं स्यात् भावगेभावांशादिसमे अखिलं संपूर्णं रूपफलमित्य-
र्थः भावाधिके ग्रहे सति संधि खगयो रंतरं भाव संध्यंतरेण भक्तं क्षया-
ख्यं फलं स्यात् भावात्ये खगे संधि खगांतरं भाव संध्यंतरेणासं भाक्तं
सञ्चयाख्यं स्यात् तयोरवरो हारो ह संज्ञाच स्यात् ॥

अर्थभाषा.

दशम भावमेसे सप्तम भाव कम करके जो शेष रहे उसका तृतीयांश लग-
नं युक्त करना तो द्वितीय भाव होता है. वही तृतीयांश दुना करके लग्नगे युक्त
करे तो तृतीय भाव होता है और वही तृतीयांश २ राशीमें कम करके जो शेष
रहे सो चतुर्थ भावसे युक्त करना. तीपंचम भाव होता है. वही शेष दुना
करके चतुर्थ भावसे युक्त करना तो षष्ठ भाव होता है अब यह भावमे

द्वितीय तृतीय पंचम षष्ठ्यः राशी युक्त करे तो क्रमसे अष्टम नव एकादश
द्वादश और पूर्वोक्त प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम यह तन्वादि द्वादश भाव होते हैं
दो भावको युक्त करके उसका अर्द्ध करे तो संधि होती है सो ऐसी प्रथम द्वि-
तीय भावको योगः अर्द्ध करे तो प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भाव-
की आरंभ संधि होती है. इसी प्रमाण द्वादश भावकी संधि होती है.

विशेष.

यह संधि करनेके वरवत भाव योग १२ से अधिक आवे तो उसमेंसे
१२ कम नहीं करना अथवा भाव ०० होय तो योग करनेके वरवत ० के द-
दले में १२ लेना नहीं. संधितुल्य ग्रह होय तो अन्य फलवा भाव तुल्य ग्रह
होय तो पूर्ण फल ग्रह भावसे कमती होय तो वह ग्रहमेंसे आरंभ संधिकम-
करना वा ग्रह भावसे अधिक होय तो वह ग्रहमेंसे विराम संधिकम कर-
ना अनंतर जो अंतर आवे उसको भाव मंधीके अंतरसे भाग देना तो ग्रह
भाव फल होता है वह ग्रह भावसे अधिक होय तो क्षय अवरोह रफल अ-
थवा ग्रह भावसे कमती होय तो चय आरोह फल जानना.

टीप-१- ग्रह आरंभ संधिसे कमती होय तो पीछेके भावका फल देता
है और विराम संधिसे अधिक होय तो आगेके भावका फल देता है.

टीप-२- चतुर्थ भावमेंसे प्रथम भाव कम करके जो शेष रहे उसका ष-
ष्ठांश प्रथम भावमें युक्त करना तो प्रथम भावकी विराम संधि और द्वि-
तीय भावकी आरंभ संधि होती है. और यह संधिमें यही षष्ठांश यु-
क्त करे तो घन भाव होता है. इसी प्रमाण षष्ठांश युक्त करनेसे संधि
सह चतुर्थ भावतक भाव होते हैं अनंतर यह षष्ठांश १ में कम करके
जो शेष रहे सो चतुर्थ भावमें युक्त करे तो चतुर्थ भावके विराम संधितक
भाव होते हैं. अनंतर यह ६ भावकी और संधिको ६ + ६ राशीक्रमसे
युक्त करे तो आगेके सर्व भाव संधि सुगम रीतिसं होते हैं.

उदाहरणम्.

यह दशम भाव ३१२।१०।३४ इस्मेंसे सप्तम भाव ०।१।१२।२६
कम करके ३।२।५०।० यह इस्का तृतीयांश १।०।५१।२२।१० इस्में लग्न
६।०।१२।२६।० युक्त करके ७।१।०।११।१०।१० यह द्वितीय भाव भया
तृतीयांशको दूना २।१।५०।१५।२० इस्में लग्न ६।०।१२।२६।० युक्त क-
रके ०।११।११।११।२० यह तृतीय भाव भया यह तृतीयांश १।०।५०।
१२।१० इस्को २ राशीमेंसे कम करके शेष ००।२०।०।३०।२० यह इ-

स्मै चतुर्थ भाव ८।१२।४०।३४।० युक्त करके १०।११।४१।११।२० यह पंचम भाव भयावही शेष दूना १।२८।१।१४।४० इस्की चतुर्थ भाव ८।१२।४०।३४।० युक्त करके ११।१०।४१।४८।४० यह षष्ठ भाव तथा अष्टम तीर्थ तृतीय पंचम षष्ठ यह भावोंमें ६ राशी क्रमसे युक्त करे तो अष्टम नवमेकादश द्वादश यह स्पष्ट भाव होते हैं।

लग्न ६।८।४२।२६।० द्वितीय भाव ७।१०।४१।४८।४० इनका योग १३।२०।२४।१४।४० इसका अर्द्ध ६।२५।१२।०।७।२० यह प्रथम भावकी विराम संधि और द्वितीय भावकी आरंभ संधि होती है इसी प्रमाण सर्व भावकी संधि करना. अथवा चतुर्थ भाव ८।१२।४०।३४।० इस्में लग्न ६।८।४२।२६।० कम किया तो ३।२।५८।८ यह इस्का षष्ठांश ०।१५।२८।४१।२० इस्से लग्न ६।८।४२।२६।० युक्त किया तो ६।२५।१२।०।७।२० यही रीतिसे क्रमसे युक्त करना तो संधि कर कर सहित चतुर्थ भाव होता पुनः षष्ठांशकी १ में हीन करना चतुर्थ भावसे युक्त करना तो सप्तम भाव तक संधि सहित होता है आगे पूर्वोक्तवत्.

१	०	२	०	३	०	४	०	५	०	६	०	सा.
४१	२५	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	
४२	२५	४१	२६	४१	२७	४२	२७	४१	२६	४०	२५	
२६	७	४८	३०	४१	५२	३४	५२	४१	३०	४८	७	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	
७	०	८	०	८	०	१०	०	११	०	१२	०	सा.
४०	२५	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	
४२	१२	४१	२६	४१	२७	४२	२७	४१	२६	४०	२५	
२६	७	४८	३०	४१	५२	३४	५२	४१	३०	४८	७	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	

क्षयचयउदाहरणम्

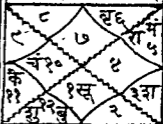
जन्मलग्नमिदम्.

सूर्य ०।१३।१०।४२ यह निकट भाव सप्तम ०।८।४२।२६ इस्से अधिक है इसवास्ती सूर्य यह भावकी विराम संधि ०।२५।१२।०।७ इस्में कम करके ०।१२।०।१।२५ इस्की विकला ४३२८५ यह अंतर इस्को सप्तम ०।८।४२।२६ और विराम संधि ०।



२५।१२।०७ इस्का अंतर ०।१५।२८।४१ इस्की
विकला ५५७०१ इस्से भाग देके ००।४६।३३
यह सूर्य्य भाव फल भया यह फल सूर्य्य निकट
भावसे अधिक है इसवास्ते क्षय जानना इसी
प्रमाण सर्व ग्रहोंका भाव फल करना इ०

भावोद्धारचक्रमिदम्



ग्रहभावफलचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	लु.	र.	शु.	श.	ग्रहः
०	०	०	०	०	०	०	
४६	३१	५७	१५	६८	३६	५३	फ०
३३	४४	२७	५६	६२	६	३१	
क्षय	चय	चय	क्षय	चय	चय	क्षय	

श्लोकः } जगदीशेन रचिते केशवीग्रंथटिप्पणे
भावाधिकारः पूर्णोयंतद्भाषार्थप्रकाशकः ॥
इति भावाऽध्यायः

टिप्पण- भावोनकः स्वर्गः पूर्व संधिना रहित स्तदा ॥ अधिकश्चेद्दिरा-
मारव्य संधेः शीघ्रस्तदंतरम् ॥ भावसंध्यंतरेणाप्तं तद्भावफल मुख्य
ते क्षयचैव तदाज्ञेयमधिके ऽत्येचयं भवेत् ॥ १ ॥

अथदृष्टीसाधनाध्यायः

श्लोकः } रैकान्निद्विरववेदरामयमभूरवाभ्राभ्रमेकादि-
भेद्रष्टावर्जित दृश्यकस्यगुरुणाचेदष्टवेदे रुताः
मंदेनांकयमसृजानगगुणकाप्तादिजाः संस्कृता-
भागघ्नक्षयद्विरवानललेवेनावधुद्धतादृग्भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः- पश्यतीति दृष्टा दर्शनयोग्यो दृश्यः द्रष्टावर्जित दृश्य कस्यैकादि
एकादिराशिषुशेषेपुरैकान्नित्यादयोकाः ०।१।३।२।०।४।३।२।१।०।०।०।० स्युःत-
त्रैकभेदोपेखंशून्यं द्वित्तद्विद्विधे एक इत्यादि द्वादशभेदे ऽर्थात् शून्यशेषे ऽभ्र-
शून्यं किं भूताएते अंकाप्तादिजागदभादिजाः गुरुशानिभीमाना विशेषश्चे-
दितिचे दुरुणा दृष्टावर्जित दृश्यकस्याष्टवेदेभशेषेरुताश्चत्वारोंकास्युत्तदा
पूर्वोक्तंनेत्यर्थः मंदेनांकयमेषुत्वारोंकाः असृजाभीमेन द्रष्टावर्जित
दृश्यकस्यनगगुणेभेचत्वारोंकास्तुः पूर्वोक्तानेतिभावः एवंपराशर्यादायंकानुक्ता

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशी	का नीचेका अंकलेके अंतर करे जो अंतर आवे उस्से नीचे जो भागादिक होय तो गुणदेना फिर उस भाग देना पावे सो फलक में संस्कार करना सो ऐसा कि आगेका अंकजादा होय तो युक्त करना पिछला में आगाको कमती होय तो पिछलायमें घटाव देना तो दृष्टी होती है. यह दूजरा प्रकार होगा.
०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	०	०	०	कला	

डा. म. च. म. च. डा.
 ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६०

दोना पावे सो फलक में संस्कार करना सो ऐसा कि आगेका अंकजादा होय तो युक्त करना पिछला में आगाको कमती होय तो पिछलायमें घटाव देना तो दृष्टी होती है. यह दूजरा प्रकार होगा.

दृष्टा दृष्टनमें कम करके जो १ राशी रहै तो अंशादिक आधा करे तो दृष्टी होय और २ राशी वचे तो अंशमें १५ युक्त करे तो दृष्टी होय और तीन राशी रहै तो अंशादिक आधा करे अंशाने १५ में घटाव दे तो दृष्टी होय और चार राशी रहै तो अंशादिकाने ३० में घटाव दे दृष्टी होय.

रविचंद्रबुध शुक्र दृष्टी सारिणी.

राशि	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मिथु	२	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५
वृष	३	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०
मिथु	४	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५
वृष	५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०
मिथु	६	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५
वृष	७	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००
मिथु	८	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००	३१५
वृष	९	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००	३१५	३३०
मिथु	१०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००	३१५	३३०	३४५
वृष	११	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	२७०	२८५	३००	३१५	३३०	३४५	३६०

और ५ राशी रहै तो अंशादिक दूणा करे दृष्टी होय और ६-७-८-९ राशी वचे तो राश्यादिक १० में अंशों आधा करे पीछे आधा करे तो दृष्टी होय और १०-११-१२ राशी वचे तो दृष्टी नहीं होय और मंगलकी करे जब ३-७ राशी वचे तो अंशाने ६० में घटाव दे जब दृष्टी होय और २ राशी वचे तो अंशादिक आधा करे फिर उतीने आधा जोडे और १५ जोडे दृष्टी हो. और ६ राशी ऊपर होय तो १०० दृष्टी होय और गुरु दृष्टी करे जब ३ राशी वचे तो अंशादिक आधा करे अंशमें १५ जोडे दे तो दृष्टी होय और चार राशी ऊपर होय तो अंशादिक दूणा करे पीछे ६० में घटाव दे तो दृष्टी होय.

गुरुदृष्टी.

रा.	अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
रघु	१	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
मि.	२	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
कर्क	३	४५	४५	४६	४६	४७	४७	४८	४८	४९	४९	५०	५०	५१	५१	५२
सिं.	४	०	०	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११
कन्या	५	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
तुल	६	०	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११
वृ.	७	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
धन	८	०	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११
मकर	९	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२
कुंभ	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

दृष्टी उदाहरण.

द्रष्टाचन्द्र ८।५।२२।३५ यह दृश्य सूर्य ००।१३।१०।४२ इस्सेसे कम करके ३।७।४८।७ यह है. इसवास्ते चंद्र दृष्टी फल सारिणीमें ३ तृतीय राशी कोष्टकके सामने ७ अंशके नीचेका फल ०।४१।३० इस्को इष्ट अंशके नीचे कला ४८ विकला ७ है. इस्को राशीकोष्टक ३ इस्के सामनेका गुण १ इस्से गुणके कला ४८ विकला ७ इस्को गुणके नीचेका हर २ से भाग देको २४।०३ यह विकलादि फल सारिणीमें ऋण लिखा है इसवास्ते पूर्वमें लिखा जो फल ०।४१।३० इस्सेसे कम करके ०।४१।०६ यह चन्द्रकी सूर्यके ऊपर दृष्टी भई. इसीप्रमाण सर्वग्रहोंकी दृष्टीग्रहोंपर और भाव पर वह वह ग्रह दृष्टी फल दूसरी रीति दृष्टी उदाहरण.

सारिणी परसे करना.

दृष्टादृश्यसे कम करके

३।७।४८।७ इसवास्ते

३ राशीके नीचेका अंक

४५ आगेकी राशी ४ इ-

स्के नीचेका अंक ३० इस्का

अंतर १५ इसे भागादि

गुणके ११७।१।४५ इ-

स्को ३० से भागदियातो

३।५४ अब अगली राशी

का अंक कमती है. इसवा-

स्ते ४५ में ३।५४ कम किया

तो ४१।६ यह चंद्रकी दृष्टी

भई. उपर राशीका स्थान

नमें ०० धर देना तीसरी

विधि दृष्टीकी अंशादिक

७।४८।७ अर्द्ध किया तो

३।५४।३ इस्को ४५ में

कम किया तो ००।४१।०६

पूर्व मुख्य चन्द्र दृष्टी

भई.

सू.	चं.	मं.	बु.	शु.	मृ.	शनि	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	सूर्यः
०	१०	३१	०	४	०	१५	
०	५४	३	०	५८	०	११	
०	०	०	०	०	०	०	चंद्रः
४१	०	४२	३०	२८	१०	१५	
६	०	८	५८	३५	४७	५८	
०	०	०	०	०	१	०	मंगलः
२८	५	०	४८	०	०	०	
५७	४२	०	४३	०	०	०	
०	०	०	०	०	०	०	बुधः
०	७	१०	०	३३	०	३७	
०	५८	१७	०	४३	०	१	
०	०	०	०	०	०	०	बृह.
४७	५८	०	५३	०	३७	१२	
२८	३५	०	२६	०	२७	२५	
०	०	०	०	०	०	०	शुक्रः
०	०	२८	०	५४	०	३६	
७	०	३६	०	२२	०	४७	
०	०	०	०	०	०	०	शनिः
०	४८	५५	४४	४७	४३	०	
२४	५८	२५	२	३४	३४	०	
१	१	१	१	१	०	१	शुभैक्यः
३६	६	२०	२४	५६	४८	४२	
४२	२४	४२	२४	४०	१४	११	
०	१	१	१	०	१	०	पापे.
०	१३	२६	३३	५२	४३	१५	
२९	३५	०	४५	३२	३४	११	

ग्रहोका उच्चादिकोषकः

ग्रहः		स्वः	चः	मं	बुः	शुः	शुः	शुः
उच्च	रा. अ.	० १०	१ ३	८ ३८	५ १५	२ ५	११ २७	६ २०
नीच	रा. अ.	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	८ ५	५ २७	० २०
मूलत्रि कोण	रा. अ.	४ २०	१ नं. ३	० २०	५ नं. १५ ५	८ २०	६ २०	१० २०
स्वग्रह	सिंह	कक	मे वं	मि कं	ध मी	र तु	म कुं	
नैसर्गिक मित्र	र. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	
नैसर्गिक सम	बु.	मं. शु.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.	
नैसर्गिक शत्रु	श. शु.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	
लिंगः	पु.	स्त्री.	पु.	नपुं.	पु.	स्त्री.	नपुं.	

१ ग्रहोंकी तात्कालिक मैत्री.

जिस ग्रहकी तात्काल मैत्री देखना होयतो वह ग्रह जिस स्थानमें होय उसस्थानसे २-३-६-१०-११ और १२ यह स्थानमें जो ग्रह होय सो अप्रीष्ट ग्रहके तात्काल मित्र होते हैं और १-५-६-७-८ और ९ यह स्थानमें जो ग्रह होय सो अप्रीष्ट ग्रहके शत्रु होते हैं.

२ ग्रहोंकी पंचधा अधिमैत्री.

ग्रहोंका नैसर्गिक मैत्र्यादि और तात्कालिक मैत्र्यादि इस्से ग्रहोंकी पंचधा अधिमैत्री उत्पन्न होती है सो इस प्रकार अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक मित्र होयतो अप्रीष्ट ग्रहका अधिमित्र होता है. अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिकमें सम और तात्कालिक मित्र होयतो अप्रीष्ट ग्रहका मित्र होता है. अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक मित्र और तात्कालिक शत्रु होयतो अप्रीष्ट ग्रहका सम होता. अप्रीष्ट ग्रहका जो ग्रह नैसर्गिक सम और तात्कालिक शत्रु होयतो अप्रीष्ट ग्रहका शत्रु होता है. और अप्रीष्ट ग्रहका नैसर्गिक शत्रु वा तात्कालिक शत्रु होयतो अप्रीष्ट ग्रहका अधिशत्रु जानना + अत्रेदं ध्येयम्. सम-मित्र-मित्र+ मित्रमित्र अधिमित्र + मित्रशत्रुसम-समशत्रु शत्रु-शत्रुशत्रु अधिशत्रु ॥ इति ॥

श्लोक } नीचोनोन्नतगणान्मुतः षडधिकश्चेत्षडहदोच्चं बलं
 स्वर्क्षेर्द्धिसमभेष्टमास्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे बलं ॥
 मित्रक्षेत्रे धिरधीष्टभेष्टत्रयद्विजांशा वैरिभेष्टयंशको-
 दंजांशो ध्यरिभेष्टहादिपवसात् खेटस्य समैक्यजम् ॥५॥
 सप्तवर्गबलमिदम् .

स्वक्षेत्रं	ऽमित्रं	मित्रं	सम	शत्रु	ऽशत्रु	मूलत्रि-	
३०	२२ ३०	१५	७ २०	३ ४५	५ ३०	४५	बलं

अन्वयः- नीचो नोन्नतगणान्मुतः षडधिकश्चेत्षडहदोच्चं बलं स्यात् उच्च संबन्धी बलमित्यर्थः अत्रैदं ध्येयं उच्चोन्नतगणेशोपषड्
 राशिस्तदा षडभागे रूपं बलं पूर्णबलमिति चेत्षड्भ्राल्पस्तदा रूपस्थाने शून्यं
 स्थाप्य पुनः शेषं राश्यादिकं षष्ट्यासंगुण्योपरि पडुक्तः संलब्धकला स्यात्
 नि स्थाप्यः पुनः शेषं षष्ट्यासंगुणा पडुभिर्भागे विकला स्थाने स्थाप्यः ए
 वं अंशा यं मुच्चबलं स्यात् + स्वर्क्षेर्द्धमित्यस्यार्थः स्वर्क्षे स्वगृहे भ्रहे संति
 अर्द्धं रूपार्द्धं बलं लेख्यम् समराशिस्थे ऽष्टमांशो बलम् मूलत्रिकोणे त्रय
 श्वरणाः मित्रक्षेत्रे चतुर्थांशो बलं अधिमित्रक्षेत्रयो ऽष्टमांशाः शत्रुराशिस्थेषो
 ऽंशांशवलं अधिशत्रुराशिस्थे द्वात्रिंशदंशो बलं स्यादिति सर्वत्र क्रिया पदस-
 र्वैत्ररूपस्यैवादीदिकं ग्राह्यं अत्र स्वर्क्षे मित्युपलक्षणं किंतु स्वराश्यादि
 स्थिते ऽप्यर्द्धं बलं ग्राह्यं कुतः इत्यतः आह ग्रहादिपवसादिति आदिश-
 द्वाद्द्वाराद्रेष्काणादयो ग्राह्याः गृहादीन् याति येते गृहादियाः गृहादि
 सप्तवर्गस्वामिनो ये सन्ति नहृशाल्त्वर्क्षेर्द्धमित्यादीनि खेटस्य सप्तवर्ग
 बलानि ग्राह्याणि सप्तानामेक्याज्जायत इति समैक्यजम् .

अर्थः- जिस ग्रहका उच्चपल यगाना होय उस ग्रहमें उली
 उली ग्रहकानीच घटाय देना शेषको ६ से भाग देना तो उच्च संबन्धी
 बल होता है. कदाचित् शेष ६ राशीसे अधिक होय तो १२ राशीमें
 टायके शेषको ६ से भाग देना यदि शेष ठीक ६ बचे तो ६ राशीमें
 पूर्णबल अर्थात् रूप १ बल होगा जब ६ राशीसे कम रहेगा तब रा-
 शीसे ६ से भाग देनेसे अंशस्थानमें शून्यफल आवेगा पुनः
 राशीको ६ से गुण देना अंश बना करके युक्त करना फिर ६ से
 भाग देना जो पावेना कला स्थानमें रखना. शेषको ६ से

देना विकला दूना युक्त करना ६ से भाग देना लब्धि विकला होगी अथवा नीच ग्रहांतरका कला करना १८० से भाग देना तो कलादि सुगम रीतिसे उच्चबल होगा. अथवा नीच ग्रहांतर जो होय उसकी राशीको १० से गुणना अशकला विकलाको २० से गुणनातो उच्चबल होता है.

जो ग्रह स्वग्रहमें होय उसका अर्द्ध ०।३०।० बल समके ग्रहमें होयतो अष्टमांश ०।७।३० मूल त्रिकोणका होयतो चतुर्थांश त्रिगुणित ०।४५।० मित्रग्रहका होयतो चतुर्थांश ०।१५।० अधिमित्रका होयतो अष्टमांश त्रिगुणित ०।२२।३० शत्रुग्रहमें होयतो षोडशांश ०।३।४५ अधिशत्रुका होयतो वतीसावांश ०।१।५२ यह बल ग्रह होरादि सप्तवर्गके स्वामीके अनुरोधसे कहिये स्वामी अपने ग्रहमें होयतो अर्द्धबल और स्वामी समग्रहमें होयतो अष्टमांश बल इत्यादि जानना. यह सप्तवर्गज बल एकत्र करनेसे ग्रहोंका सप्त योगज बल होता है.

टीपः- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ मीन यह १२ राशी हैं. इस्मेंसे मेष मिथुन सिंह तुला धन कुंभ यह विषम ६ राशी और वृष कर्क कन्या वृश्चिक मकर मीन यह ६ राशी सम होती हैं. यह सप्तवर्गग्रह होराद्रेष्काण सप्तमांश नवमांश द्वादशांश और त्रिंशांश होते हैं. १ ग्रह (राशी कहिये ३० अंश इसके स्वामी पूर्वमें कहे हैं होरा कहिये राश्यर्द्ध १५ अंश) विषम राशीमें प्रथम होराका स्वामी सूर्य और द्वितीय होराका स्वामी चंद्र और समराशी प्रथम होराका स्वामी चंद्र द्वितीय होराका स्वामी सूर्य ३ द्रेष्काण कहिये राशीका तृतीयांश ३० अंश इसवास्ते यह तीन है. प्रथम द्रेष्काणका स्वामी ग्रहाधिप द्वितीय द्रेष्काणका स्वामी ग्रहसे पंचम राश्य धिप तृतीय द्रेष्काणका स्वग्रहसे नवम राश्य धिप. ४ सप्तमांश कहिये राशीका सप्तमांश ४ अंश १७ कला विषम राशीमें अपने ग्रहसे ७ राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांशपती होते हैं. और समराशीमें अपने ग्रहके सप्तमराशीसे सात राशिके स्वामी क्रमसे सप्तमांशपती होते हैं. ५ नवमांश कहिये राशिका नवमांश ३ अंश २० कला मेष सिंह धन यह ग्रह होयतो मेषसे ८ राशिके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं. वृष कन्या मकर यह ग्रह होय. तो मकर राशीसे ८ राशिका स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं.

मिथुनतुलाकुंभ यह राशी होयतो तुला राशीसे ८ राशीके स्वामी क्रमसे नवमांशाधिपती होते हैं. कर्क वृश्चिकमीन यह राशी होयतो कर्क राशीसे ८ राशीका स्वामी नवमांशाधिपती होते हैं.

६ द्वादशांशकहिये राशीका द्वादश भाग २ अंश ३० कला सवराशीमें स्वस्वग्रहसे १२ राशीके स्वामी क्रमसे द्वादशांशपती होते हैं.

१७ त्रिंशांशकहिये राशीका त्रिंशद्भाग १ अंश विषमराशीमें प्रथम ५ अंशका स्वामी भौम आगे ५ अंशका स्वामी शनि आगे ८ अंशका स्वामी गुरु आगे ७ अंशका स्वामी बुध आगे ५ अंशका स्वामी शुक्र समराशीमें उलटे रीतिसे ५ का शुक्र ७ का बुध ८ का गुरु आगे ५ का शनि आगे ५ का भौम यही रीतिसे जानना.

हौरालम्बम्.	द्विष्काणलम्बम्.	सप्तमांशक.																																																
<table border="1"> <tr><td>६</td><td>५</td><td>४</td><td>३</td></tr> <tr><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td></tr> <tr><td>११</td><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td></tr> <tr><td>१५</td><td>१६</td><td>१७</td><td>१८</td></tr> </table>	६	५	४	३	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	<table border="1"> <tr><td>८</td><td>७</td><td>६</td><td>५</td></tr> <tr><td>९</td><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td></tr> <tr><td>१३</td><td>१४</td><td>१५</td><td>१६</td></tr> <tr><td>१७</td><td>१८</td><td>१९</td><td>२०</td></tr> </table>	८	७	६	५	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	<table border="1"> <tr><td>१०</td><td>९</td><td>८</td><td>७</td></tr> <tr><td>११</td><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td></tr> <tr><td>१५</td><td>१६</td><td>१७</td><td>१८</td></tr> <tr><td>१९</td><td>२०</td><td>२१</td><td>२२</td></tr> </table>	१०	९	८	७	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
६	५	४	३																																															
७	८	९	१०																																															
११	१२	१३	१४																																															
१५	१६	१७	१८																																															
८	७	६	५																																															
९	१०	११	१२																																															
१३	१४	१५	१६																																															
१७	१८	१९	२०																																															
१०	९	८	७																																															
११	१२	१३	१४																																															
१५	१६	१७	१८																																															
१९	२०	२१	२२																																															
नवमांशक ल.	द्वादशांशक ल.	त्रिंशांशक ल.																																																
<table border="1"> <tr><td>३</td><td>२</td><td>१</td><td>०</td></tr> <tr><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td></tr> <tr><td>८</td><td>९</td><td>१०</td><td>११</td></tr> <tr><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td><td>१५</td></tr> </table>	३	२	१	०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	<table border="1"> <tr><td>११</td><td>१०</td><td>९</td><td>८</td></tr> <tr><td>१२</td><td>१३</td><td>१४</td><td>१५</td></tr> <tr><td>१६</td><td>१७</td><td>१८</td><td>१९</td></tr> <tr><td>२०</td><td>२१</td><td>२२</td><td>२३</td></tr> </table>	११	१०	९	८	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	<table border="1"> <tr><td>१२</td><td>११</td><td>१०</td><td>९</td></tr> <tr><td>१३</td><td>१४</td><td>१५</td><td>१६</td></tr> <tr><td>१७</td><td>१८</td><td>१९</td><td>२०</td></tr> <tr><td>२१</td><td>२२</td><td>२३</td><td>२४</td></tr> </table>	१२	११	१०	९	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३	२	१	०																																															
४	५	६	७																																															
८	९	१०	११																																															
१२	१३	१४	१५																																															
११	१०	९	८																																															
१२	१३	१४	१५																																															
१६	१७	१८	१९																																															
२०	२१	२२	२३																																															
१२	११	१०	९																																															
१३	१४	१५	१६																																															
१७	१८	१९	२०																																															
२१	२२	२३	२४																																															

उच्चनीचवराह. अजरयपत्तमृगांगनाकुलीराङ्गपवणिजोच्चदियाकरादि तुंगाः दशशिखिमनुयुक्तिथीं द्विषांशोस्त्रिनवक विंशतिभिश्चतेस्तनीचाः

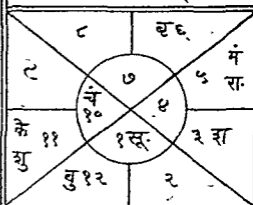
निसर्गमैत्रीचक्रम्.

च.	च.	म.	कु.	रु.	शु.	अ.	ग्रह.
१	२	३	४	५	६	७	८
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२

तात्काल मैत्रीचक्रम्

सू.	चं	मं	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
शु	सू	श	सू	मं	सू	मं	मि
बु	बु	वृ	वृ	श	बु	बु	त्र
चं	शु	शु	शु	चं	चं	वृ	
मं	श	शु	मं	सू	मं	शु	श
वृ	मं	वृ	वृ	चं	श	चं	शु

जन्मलग्नम्.



पंचघ्रा मैत्रीचक्रम्.

सू.	चं	मं	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहः
बु.	शु.	श.	श.	श.	०	वृ.	मित्रः
चं.	सू. बु.	वृ.	सू. शु.	मं.	बु.	बु.	५ धिमित्र
श. मं. वृ.	सू. बु.	सू. चं.	चं.	सू. चं.	सू. चं. श.	सू. शु. मं.	सम
०.	वृ. मं. श.	शु.	मं. वृ.	०.	मं. वृ.	०.	शशु
०.	०.	बु.	०.	बु. शु.	०.	चं.	५ धिशत्रुः

बलाध्याय-उच्चबल सारिणी प्रवेश.

सूर्यादि ७ ग्रहोंका १२ राशी कोष्टक लिखके वह वह ग्रहके सामने राशीकोष्टकके नीचे रूपकलादिबल लिखा है उसमेंसे ग्रहका जो इष्ट राशीकोष्टक होय उसके नीचेका फल लेके राशीकोष्टकके नीचे ३० अंशकोष्टक और ६० कलाकोष्टक लिखा है उसमेंसे ग्रहके जो इष्टांश और कला होय उसके नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके वह धन किंवा अणराशीफलमें लिखा है उसके प्रमाणलिया जो राशीफल उसमें युक्त करना किंवा कम करना तो उच्चबल होता है परंतु जब ग्रहकी उच्चनीच राशी आदती है तब फल लेनेकी जुदीरीति है सो ऐसी कि पृथक् पृथक् ग्रहोंका उच्च राशीफलमें उक्तोच्चांश लिखे हैं उतने अंशतक मात्र वह फल अंशादि धन आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका सारिणीमेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण उच्च राशीफलमें युक्त करके रूप (८१) बलमें कम करना तो उच्चबल होता है. तैसे ही नीचराशीफलमें उक्त नीचांश लिखे हैं उतने अंशतक मात्र वह फल अण आगे जो अंशादि अधिक आवे उतना अंशादिकोंका सारिणीमेंका फल लेके वह ऊपर कहनेके प्रमाण नीचराशीफलमें कम करते जो फल आवे वही उच्चबल जानना.

उच्चफल सारिणी राशीफल.

रा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	रा.
सू.	५६१० ४० घ.	५३ २० घ.	४३ २० घ.	३३ २० घ.	२३ २० घ.	१३ २० घ.	३ २० घ.	६ ४० घ.	१६ ४० घ.	२६ ४० घ.	३६ ४० घ.	४६ ४० घ.	सू.
मं.	४८ ० घ.	५८ ० घ.	५९ ० घ.	६९ ० घ.	३९ ० घ.	२९ ० घ.	१९ ० घ.	९ ० घ.	८ ० घ.	१८ ० घ.	२८ ० घ.	३८ ० घ.	मं.
मं.	३८ २० घ.	२८ २० घ.	१८ २० घ.	८-२८ २० घ.	० ४० घ.	१० ४० घ.	२० ४० घ.	३० ४० घ.	४० ४० घ.	५० ४० घ.	५८ २० घ.	६८ २० घ.	मं.
बु.	५ ० घ.	१५ ० घ.	२५ ० घ.	३५ ० घ.	४५ ० घ.	५५ ० घ.	६५ ० घ.	७५ ० घ.	८५ ० घ.	९५ ० घ.	१५ ० घ.	२५ ० घ.	बु.
सू.	२८ २० घ.	३८ २० घ.	४८ २० घ.	५८ २० घ.	६९ ४० घ.	७९ ४० घ.	८९ ४० घ.	९९ ४० घ.	१९ ४० घ.	१५ ४० घ.	८ २० घ.	१८ २० घ.	सू.
शु.	५८ ० घ.	६८ ० घ.	३८ ० घ.	३८ ० घ.	१८ ० घ.	८-३८ ० घ.	९ ० घ.	११ ० घ.	२१ ० घ.	३१ ० घ.	४१ ० घ.	५१ ० घ.	शु.
श.	६-२० ४० घ.	३ २० घ.	१३ २० घ.	२३ २० घ.	३३ २० घ.	४३ २० घ.	५३ २० घ.	६३ ४० घ.	६६ ४० घ.	३६ ४० घ.	२६ ४० घ.	१६ ४० घ.	श.

अशफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८	३०	०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८	१०	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

कलाफल.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४
१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२८
५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	८	८	८
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३८	४०	४१	४२	४३	४४
१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
४५	४७	४८	४८	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५८	५८
१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

उदाहरणम्.

इहां सूर्य ०।१३।१०।४२ है इसवास्ते ०० राशीकोष्ठके नीचेका सूर्यका फल ०।५६।४० यह लेके अनंतर १३ अंशकोष्ठके नीचेका कलादि फल ४।२० और कला १० कोष्ठके नीचेका फल ३ यह विकलाभियुक्त करके यह राशीफलमें धन लिखा है इसवास्ते ०।५६।४० यह राशीफलमें युक्त करके ०।१।०।१।३ अब इहां रवि उच्च राशीका है इसवास्ते उपर १ नुक्त करके ०।१।३ यह इस्को रूप १ में कम करके ०।५८।५७ यह सूर्यका उच्च बल इसी प्रमाण चंद्रादि द्वितीय सारिणी प्रवेश. जिस ग्रहका उच्च बल बनावना होय उस ग्रहमें उसी ग्रहकानीचे कम करना जो ६ राशीसे ज्यादा होय तो १२ राशीमें कम

उच्च राशीफल.

०	१	२	३	४	५	६	रा.
०	०	०	०	०	०	१	
१०	२०	३०	४०	५०	०	०	फ.

करके जो दोष राश्यं क हीय उसके नीचेका अंशादि फल लेके उसके नीचे जो अंशकला होय उसका फल लेकर एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंका उच्च बल होता है. अंशकला विकलाका फल पूर्वोक्त सारिणीमेंसे ना.

उदाहरणम्

सूर्य ०।१३।१०।४२ यह इस्में इस्का नीचे ६।१०।०० कम किया तो ६।३।१०।४२ यह ६ से अधिक है इसवास्ते १२ में कम करके ५।२६।४८।१८ है. इसवास्ते राशीकोष्ठके नीचेका फल ०।५०।० पहलेके अनंतर २६ अंशके पूर्वोक्तके नीचेका कलादि फल ८।४० और कला ४८ का नीचे विकलादि फल १६।२० यह एकत्र करके ८।५६ यह राशीफल १५०।० इस्में युक्त किया तो ०।५८।५६ यह सूर्यका उच्च बल मयस्ती रीतीसे चंद्रादिकोंका करना तो स्पष्ट बल होता है राशी फलमें अंशकला फल सदा युक्त करना.

उच्च बल चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रहः
०	०	०	०	०	०	०	
५८	२०	६	२	३८	४८	१७	फल
५६	४७	२३	७	५५	५८	४७	

यह चक्रों में सप्तवर्गपति मेषादि १२ राशीका जुदाजुदा अंशोंका तीस तीसक
लाके अंतरसे ६० कोष्ठक लिखके उसके नीचे सप्तवर्गके सामने उनके स्वामी
लिखके उनके स्वग्रहके स्पष्टताके वास्ते ग्रहके प्राप्त स्वग्रहका राश्यंक लिखा
है इसपरसे सुलभरीतिसे सप्तवर्गपति मालूम होते हैं।

उदाहरणम्

इहां सूर्य्य ००।१३।१०।४२ है इसवास्ते मेष राशीका १३ अंश १०
कला कोष्ठककी नीचेके सप्तवर्गपति आये-

गृ.प. हो.प. द्वे.प. स.प. न.प. द्वा.प. त्रि.प. इसी प्रमाण चंद्रादिकोंका
मं. ख. सू. चं. चं. बु. व. राश्यादिकसे चक्र परसे सप्त
वर्गपति होते हैं। इसी रीतिसे भाव सप्तवर्गपति जानना।

ग्रहसप्तवर्गपतिचक्रम्. आश्रयगुणार्थः...

ग्र.	सूर्य्यः	चन्द्रः	मीमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	४ग्रहाः
स्वग्रह	मं	स	श	श	ख	स	व	श
हारा	ख	ग	चं	ख	ख	स	ख	मि
द्रेष्का	ख	ख	श	श	व	मि	मं	श
सप्त	च	मि	ख	मि	श	श	मि	म
नवमा	चं	मि	श	श	च	स	श	मि
द्वाद	ख	मि	व	श	व	मि	मं	श
त्रिंशा	व	ख	बु	मि	व	मि	श	मि

भावसप्तवर्गपतिचक्र.

भावा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वग्रह	शु	मं	व	श	श	व	गं	शु	बु	चं	ख	ख
हारा	ख	चं	ख	चं	ख	चं	ख	व	ख	चं	ख	चं
द्रेष्का	शु	व	मं	शु	बु	चं	मं	ख	शु	मं	व	श
सप्त	व	चं	श	ख	मं	मं	ख	श	ख	व	शु	शु
नवमा	व	शु	चं	मं	श	शु	बु	मं	श	शु	चं	मं
द्वाद	गं	व	मं	ख	बु	चं	चं	ख	शु	व	व	श
त्रिंशा	श	व	व	व	व	श	श	व	व	व	व	व

सप्तवर्गवल्लोदाहरणम्.

- सूर्य्यका गृहपति मीम समके क्षेत्रमे है इसवास्ते गृहवल अष्टमांश ०।७
- १२० होगपति सूर्य्य समके क्षेत्रमे है इसवास्ते होगवल अष्टमांश ०।७।३० द्वे
- पला गपति सूर्य्य समके क्षेत्रमे है इसवास्ते द्रेष्काणवल अष्टमांश ०।७
- १२० मममांशपति चन्द्रशुशु क्षेत्रमे है इसवास्ते सप्तमांशपठत्रोडशांश ०।

३।४५ नवमांशपतिचन्द्रशत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते नवमांशबल षोडशांश ०३।
 १४५ द्वादशांशपतिबुधशत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते द्वादशांशबल षोडशांश
 ०।३।४५ त्रिंशांशपतिगुरु अधिशत्रु क्षेत्रमें हैं इसवास्ते त्रिंशांशबल ०।१।
 ५२॥ सूर्यके सप्तवर्गका बलका योग ०।३५।३७॥ इसी प्रमाण चन्द्रदि
 कोका सप्तवर्ग बल होता है।

अथ- ग्रहसप्तवर्गबलचक्रम्.

सू.	चं.	म.	बु.	शु.	श.	ग्रहः
मं ० स ३०	श २२ ३०	सू ० स ३०	बु १ ५२॥	शु ३ २०	श ३ ४५	ग्रहः गृह
सू ० स ३०	चं ३ ४५	सू ० स ३०	स ३ ४५	चं ३ ४५	चं ३ ४५	सू ० स ३०
सू ० स ३०	श २२ ३०	बु १ ५२॥	मं ० स ३०	बु १ ५२॥	शु ० स ३०	शु ० स ३०
चं ३ ४५	सू ० स ३०	शु ० स ३०	श २२ ३०	न ० स ३०	सू ० स ३०	बु ३ ४५
चं ३ ४५	श २२ ३०	चं ३ ४५	श २२ ३०	बु १ ५२॥	बु ३ ४५	श २२ ३०
बु ३ ४५	बु ३ ४५	बु १ ५२॥	म ० स ३०	बु १ ५२॥	बु १ ५२॥	मं ० स ३०
बु १ ५२॥	बु ३ ४५	बु १ ५२॥	श २२ ३०	बु ३ ४५	शु ० स ३०	म ० स ३०
३५ ३७॥	२४ २२॥	३९ ५२॥	३९ ५२॥	०६ ५	५४ २२॥	१ ०

श्लोक

शुक्रेण समभांशकेहि विषमन्येद्युरंघ्रिवलम्
 केन्द्राद्येभुचरूपकार्दचरणान्यच्छंतिखेटाः क्रमात् ॥
 स्त्रीखेटोचरमेनराः प्रथमके क्लीबोच्चमध्ये तथा
 द्वेष्काणेधितरतिपादमुदितस्थानारव्यवीर्य्यखिदम् ॥६

अन्वयः- समभांशके स्थितौ शुक्रेन्दु हीति निश्चयेनाधिचतुर्थांशबलं च
 चाता अन्येखि भौग बुध गुरु शनयो विषमभांशे स्थितास्तदांघ्रिवलंदपुः म
 आंशश्चभांशम् विषमा राशयः १।३।५।७।९।११ शेषाः समा इति केन्द्राद्ये
 बुकेन्द्रपणफरापोक्लिमेभुस्थिताः खेटाः क्रमाद्रूपकार्दचरणान्वलानियच्छंति
 ददन्ति एतदुक्तं भवति केन्द्रे ग्रहे रातिरूपं ? बलंपणकरे आर्द ०।३०। बलं
 आपोक्लिमे चतुर्थांशं ०।१५। बलं यच्छंति स्त्रीखेटौ शशिशुक्रौ तृतीय द्वेष्का

णे वर्तमानो पादं बलं दत्तः नराः सूर्य्य मंगल गुरु वः प्रथम द्रेष्काणे पादं बलं
वितरंति कर्त्तव्यौ बुधशनि मध्ये द्रेष्काणे स्थितौ पादं बलं दत्तः इदं यत्पंचधा
बलमुदितं तत्स्थानारख्यं वीर्य्यं पंचानां योगे स्थान बलं स्यादित्यर्थः ॥

अर्थः- शुक्र चंद्र यह समराशीमें किंवा समांशमें होयतो और सूर्य्य मं-
गल बुध गुरु शनि यह विषम राशीमें वं विषमांशमें होयतो चरण ०११५१०
बल देते हैं. यह केन्द्रमें कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानमें होयतो
रूप १ बल देते हैं. यह पणफरमें कहिये द्वितीय पंचम अष्टम एकादश स्थान-
में होयतो अर्ध ०३०१० बल देते हैं यह आपोर्किलममें कहिये तृतीय षष्ठ नवम
द्वादश स्थानमें होयतो चरण ०११५१० बल देते हैं. पुरुष ग्रह प्रथम द्रेष्काणमें
होय और नपुंसक ग्रह द्वितीय द्रेष्काणमें होय और स्त्री ग्रह तृतीय द्रेष्का-
णमें होयतो चरण बल ०११५१० देते हैं यह ५ स्थान बलोंके योगकी सी स्था-
न बल ऐसा कहते हैं.

युग्मायुग्म बलोदाहरणम्.

इहां सूर्य्य भौम और शनि यह विषम राशीमें है इसवास्ते इनका
चरण बल चन्द्र समराशीमें है इसवास्ते चन्द्रका चरण ०११५१० बल शुक्र
समराशीमें किंवा सम नापांशमें नहीं इसवास्ते इस्का बल ०१०१० बुध
गुरु विषम राशीमें किंवा विशमांशमें नहीं. इनका बल ०१०१०

युग्मायुग्म बलम्							अथ केन्द्रादि बलोदाहरणम्.	
सूर्य	चं	मं	बु	शु	श	प्र		
०	०	०	०	०	०	०	सूर्य्य चन्द्र केन्द्रमें है इसवास्ते इनका	
१५	१५	१५	०	०	०	१५	रूपबल भौमशुक्रपणफरमें है इसवास्ते	
०	०	०	०	०	०	०	इनका अर्ध ०३०१० बुधगुरुशनि यह आपो	
							र्किल में है इसवास्ते इनका चरण बल	

इहां गुरु प्रथम द्रेष्काणमें है इसवास्ते
चरण बल शुक्र तृतीय द्रेष्काणमें है इस
वास्ते चरण बल शनि द्वितीय द्रेष्काणमें
है इसवास्ते चरण बल सूर्य्य मं प्रथम द्रे-
ष्काणमें नहीं और बुध ६११५ द्रेष्का-
णमें नहीं और चंद्र तृतीय द्रेष्काणमें
नहीं इसवास्ते इनका बल शून्य-
०१०१०

द्रेष्काण बलोदाहरणम्.

केन्द्रादि बलम्.

सूर्य	चं	मं	बु	शु	श	प्र
१	१	०	०	०	०	०
०	०	३०	१५	१५	३०	१५
०	०	०	०	०	०	०

द्रेष्काणवलचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	शनिः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	रविः	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	ग्रहाः
०	०	०	०	१५	१५	१५	वलः
०	०	०	०	०	०	०	

स्थानवलयोगचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	शनिः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	रविः	ग्रहाः
५८	२०	०	०	३०	०	०	उच्चवल १
५६	४७	२१	७	५५	५०	१७	४७
३५	३४	३१	३१	२६	५६	१	सप्तवर्ग २
३७॥	२२॥	५२॥	५२॥	१५	२२॥	०	०
१५	१५	१५	०	०	०	१५	युग्मायुग्म ३
०	०	०	०	०	०	०	
१	१	३०	१५	१५	३०	१५	केन्द्रादि ० ४
०	०	०	०	०	०	०	
०	०	०	०	१५	१५	१५	द्रेष्काण ५
०	०	०	०	०	०	०	
२	३	१	१	१	२	२	योगः
४२	०	२१	४०	३५	२०॥	२	
३३॥	०॥	१३॥	५०॥	१०	२०॥	४७॥	

दिग्बल
कालवल

श्लोकः

मन्दाग्नमिनाकुजाच्चहिवुकंशोध्वंविधौर्तागिवात्
माध्यंज्ञाद्गुरुतोस्तमत्रस्तभात्पुष्टत्यजेच्चक्रतः ॥
दिग्वीर्यैरसहृत्वयोसमयजंरूपसदास्याद्दिग्ः
त्रिंशद्भक्तनतोन्नतेशशिकुजाकीर्णांपरेपावलं ॥ ७

अन्यथः- शनिः सकाशालुभं सूर्याग्नीमाच्चहिवुकंचतुर्यविधोः भार्गवाच्च
माध्यं दशमं बुधाद्गुरुस्तकाशादस्तं सप्तमं शोध्वमिति सर्वत्र ध्येयं शेषं षडाङ्गपरि-
कंचेत्स्यात्तदाद्वादशराशिन्यः शोध्वंततः पडहत् पडुक्तः सन्दीर्घीर्यस्यत्
गुशाब्दाद्बुधवलभागप्रकारोऽत्रापिबोध्वइति ७ अथेत्यन्तरं समयजं काल-
लजं वलमुच्यते विदो बुधस्य सदादिन रात्रोरूपं १ वलं स्यात् त्रिंशद्भक्त-
नतोन्नतेशशिकुजाकीर्णांपरेपावलं भवतः ननु त्रिंशताभक्तं यलुध्यंतच्च-
न्द्रभौमशनीनां वलं जवेत् उन्नतं त्रिंशद्भक्तं रविगुरुशुक्राणां वलं स्यात्.
अर्थभाषाः- शनिमंसे लग्नः, सूर्यं भौममंसे चतुर्यं भावचन्द्रमंसे शु-
क्रमंसे दशमं भावबुधमंसे गुरुमंसे सप्तमं भावयहक्रमसे कमकरके शेषं ६ रा-

शीके अपेक्षा अधिक होयतो वह १२ राशीमें कम करके अनंतर जो शेष रहे
उस्को उच्चवलयमें पूर्वोक्त रीति प्रमाण ६ से भाग देना तो प्रहोका दिग्बल होता है.

दिग्बल सारणी प्रवेश.

२२

ग्रहमेंसे लग्नादि कथित भाव कम करके जो शेष रहे उस्को ६ से कम
करना. अर्थात् षडभाल्य करना अब इहां सारणीमें ६ राशी कोष्ठक लिखके
वह कोष्ठकके नीचे रूपादि फल उस्मेंसे अभीष्ट ग्रहका जो ६ राशियोंसे राश्यं
क होय उस्के नीचेका फल लना राशीकोष्ठकके नीचे ३० अंश कोष्ठक और
उस्के नीचे ६० कला कोष्ठक लिखा है उस्मेंसे अभीष्ट ग्रहका जो अंश और
कला आवे तत्परिमित कोष्ठकके नीचेका अंशका कलादि और कलाका
विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिया जो राशी फल तिस्में युक्त कर
नातो प्रहोका दिग्बल होता है.

दिग्बल राशी फल.

अंश फल.

०	१	२	३	४	५	६	रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
०	०	०	०	०	०	१		०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५		
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	फ	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०		
०	०	०	०	०	०	०		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
फल फल चक्रमू.								५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०		
								२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०					
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६					
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०					
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०					
७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३					
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०					
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०					
१३	१४	१५	१६	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०					
४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०					

उदाहरणम्.

इहां सूर्य ०१३१०१४२ यह इस्मेंसे चतुर्थ भाव ७१२१५०१३४ कम
करके शेष ३१०१३०८ आया अथइस्का राश्यं ३ है इसवास्ते ३ राशी फल
०१३०१० और अंश ० है इसवास्ते अंश कोष्ठकका फल ५०१० और कला
३० है इसवास्ते ३० कला कोष्ठकका फल १०१० यह विकला में युक्त किया तो

०।३०।१० यह सूर्यका दिग्बल भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकों का सारणी परसे दिग्बल कुरना. अर्थकाल बल का कहते

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	दिग्बल चक्रं
३०	५७	५०	६०	४२	४५	३८	
१०	३४	३२	७	३०	१४	४७	

बुधका सर्वदा दिनमें किंवा रात्रीमें रूप १ बल नतमें ३० से भाग देनेसे चन्द्र भौम और शनि इनका और उन्नतमें ३० से भाग देतो सूर्य गुरु और शुक इनका नतोन्नत बल होता है अथवा नत द्विगुणित करे तो चंद्र भौम शनि इनका और उन्नत द्विगुणी करे तो सूर्य गुरु शुक इनका सुगम रीतिसे कलादि बल होता है.

उदाहरणम्.

नत १५।४० इस्को ३० से भाग देके ०।३१।२० यह चन्द्र भौम शनि इनका बल भया उन्नत १४।२० इस्को ३० से भाग देके ०।२८।४० यह सूर्य गुरु शुक इनका बल भया. और बुधका रूप १ बल ऐसा जानना.

पक्षबल अथवा बल वर्षनास दिन होरा बलं.

श्लोक.

शुकलेन्नेतिथिद्वैतैष्यतिययो
वीर्यसताभूच्युतं पापानाद्विगु
णं विधोरिदमथान्दरुयंशकेषु

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	नतोन्नत बल चक्रम्
२८	३१	३१	१	२८	२८	३१	
४०	२०	२०	०	४०	४०	२०	

क्रमात् ॥ सौम्यार्काके भुवांनिशः शशिसिताराणांच रूपम्.
सदेज्यस्याघांघ्रिचयाहली किल समानासद्युहोरेश्वराः ॥८॥
अन्वयः- शुकले-ऽन्तेरुष्णैर्गतेष्यतिययस्तिथिभिः पंचदशः १५ भिजा
ज्याः फलसतां शुभग्रहाणांच चन्द्रबुध गुरु शुकणां बलं स्यात् तदेव बलं
भूच्युतं रूपाच्युतं पापानां रवि भौम शनीनां पापयुत बुधस्य च वीर्यबलं
लस्यात् इदं चन्द्रबलं द्विगुणं कार्य्यं अथ पक्षबल कयना नंतरं अंशबलं
नुच्यते अन्तो दिवसस्य अंशकेषु क्रमात् बुध सूर्य शनीनां रूपं बलं
स्यात् निशोरात्रे अंशकेषु क्रमेण चन्द्र शुक भौमानां रूपं १ बलं भवति
तद्यथा यदि दिने जन्म तदा दिनमानस्य त्रिजागं कार्य्यं चेत्यथमंशे जन्म
तदा बुधस्य रूपबलं अन्येषां शून्यं यदि द्वितीये शे जन्म तदा सूर्यस्य रूप
पबलं अन्येषां शून्यं तृतीयेशे शनेः रूपबलं अन्येषां शून्यं स्यात् एवं रा
त्रावपि + ईज्यस्य गुरोः सदा दिवा रात्री वा जन्म स्यात् तदा रूपं बलं
भवति. अथेत्यनंतरं अंघ्रिचयाच्चरणं एदथा समामासद्युहोरे श्वरो
बली स्यात् एतदुक्तं वर्षेशस्य बलं पादं ०।१५।० मासेशस्य ०।३०।०
दिनेशस्य ०।४५।० होरेशस्य १।०।० बलम्.
अर्थ भाषां शुकले पक्षमें गत तिथीको १५ से भाग देना और रुष्णा

पक्षमें ऐष्य तिथीको १५ से भाग देनातो शुभचन्द्रबुधगुरुशुक्रइन ग्रहोंका और वही १ में कम करके पापग्रहोंका रविभौमशनिइनको मक्षबल होता है। उस्मेंसे आया जो चन्द्रबलसो दूना करना वता कालिकसूर्य्य और चंद्र इनका अंतर ६ राशीकी अपेक्षा ज्यादा होयतो १२ में कम करना जो शेषरहै उसको उच्चबलमें पूर्वोक्त रीतिके प्रमाण ६ से भाग देनातो शुभग्रहोंका और वही ६० मेंसे कम करके पापग्रहोंका पक्षबल होता है। अश्विनबल दिनके प्रथम त्रिभागमें जन्म होयतो बुधका रूप १ बल द्वितीय त्रिभागमें सूर्य्यका तृतीय त्रिभागमें शनिका ऐसा रात्रीमें प्रथम त्रिभागमें चन्द्रका द्वितीय त्रिभागमें शुक्रका तृतीय त्रिभागमें भौमका और सर्व कालमें गुरुका रूप १।०।० जानना वर्षपतिका चरणबल मासपतिका अर्द्धबल दिनपती चरणत्रयबल होरापतिका रूपबल यह वर्षमास दिन होरापती इनका बल जानना इन चारों बलके योगको कालबल ऐसा कहते हैं।

वर्षपतिवनावनेकी रीतिः

श्लोक- } द्विष्टोऽयं प्रहलाधवद्युनिचयश्चक्राहृतैः षट्शरैः
 पट्टदस्रैश्च्युतः सबाणतपनसेपुश्वरवांगाग्निभिः ॥
 खाग्न्याशैविः हृतं फले गुणयमघ्नैश्चक्रनिघ्नाक्षरवोपे-
 तैसत्रियुगनगोर्वरितकेऽस्तोऽर्कात्समामासपौ ॥

अर्थः- अग्नीष्टचक्रको ५६ से गुणके उस्में अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें १२५ युक्त करना ३६० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको ३ से गुणके गुणाकारको चक्र ५ से गुणके उस्में ३ युक्त करके सब अंक एकत्र करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहै सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान वर्षाधिप होता है।

मासपतिवनावनेकी रीतिः

अग्नीष्टचक्रको २६ से गुणके उस्में अहर्गण युक्त करना अनंतर उसीमें ५ युक्त करना ३० से भाग देना जो भागाकार आवे उसको दूना करके उस्में ३ युक्त करके ७ से भाग देके जो शेषांक रहै सो क्रमसे सूर्यादि वर्तमान मासपति होता है।

दिनपतिवनावनेकी रीतिः

अग्ने देशसे दक्षिणोत्तर मध्य रेखाका जो योजन होय उस्में उगकाच-

तुर्थांश कम करके तन्मित फल पूर्व मध्यरेषा होयतो १५ घडीमें कम करना अथवा पश्चिम रेखा होयतो १५ घडीमें युक्त करना अनंतर यह संस्कार युक्त घडी दिनार्धसे जितना पल कमती होय उतना पल सूर्योदयके अनंतर वार प्रवृत्ति होती है. अथवा संस्कृत घडी दिनार्धसे जितना पल अधिक होय उतना पलसे सूर्योदयके पूर्ववार प्रवृत्ति होती है यह प्रकार से जन्म कालमें जो वार होयसो वार पति जानना.

होरापति बनावनेकी रीति.

वार प्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक जो घटी पल होयउस्कोदूनाकरना उस्को २ स्थानमें रखना प्रथम स्थानमें ५ से भाग देना शेषको द्वितीयस्थानमें घटाय देना और १ युक्त करना तो वारपतीके क्रमसे अर्थात् १ वृषे तो सूर्य २में शुक्र ३में बुध ४में चन्द्र ५में शनि ६में गुरु ७ में भौम यह क्रमसे इष्टवारपतीसे गणनासे जो वार आवे उस्की वहगत होरा जानना. अनंतर वर्तमान होराका स्वामी होरापति जानना.

पक्षबल सारणि प्रवेश.

तात्कालिक सूर्य और चन्द्र इनका अंतर पङ्कालय करना अब सारणीमें ६ राशि कोषक लिखके वह कोषकके नीचे रूपादि फल लिखा है उसमेंसे अंतरका जो राश्यंक होय उस्के नीचेका फल लेना राशि कोषकके नीचे ३० अंश कोषक और ६० कला कोषक लिखा है उसमेंसे अंतरका जो इष्ट अंश और कला आवे उस्के नीचेका अंशका कलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिखा जो राशिफल उसमें युक्त करना तो शुभग्रहोंका पक्षबल होता है और यह रूप १में कम करती पापग्रहोंका पक्षबल होता है. इसमेंसे चन्द्रका बल द्विगुणित करना.

राशिफल.						अंशफल.															
०	१	२	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	०	०	०	०	१	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
०	१०	२०	३०	४०	५०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
उदाहरणम्.						१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
						५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	०
सूर्य ०१३३३०१४२						२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	०
चन्द्र १५१२२३५३																					

इस्को दना करके १३६ यह इस्में ४ युक्त करके १४० इस्को ७ से भाग देके शेषक ० इसवास्ते मासपति शनि इस्का चल ०१३००

दिनपति चलो दाहरणम्.

देशांतर योजन ५ इस्में इसीका चतुर्थांश ११५ कम करके ३१५ पल यह पश्चिम देशांतर है इसवास्ते १५ घडीमें युक्त करके १५।३।४५ यह दिनार्ध १६।२१ इस्से १ घडी १८ पल कमती है इसवास्ते सूर्योदय के अनंतर १ घडी १८ पलसे वार प्रवृत्ति भई जन्मकाल रविवारको ३२ घडी १ पल पर है इसवास्ते रवि यही दिनपति इस्का चल ०१४५।० जानना.

होरापति चलो दाहरणम्.

वार प्रवृत्तिसे लेकर इष्टकालतक ३०४२ इस्को २ से गुणके ६१ घडी २४ पल इस्को ५ से भागदेके १२ आये इहां इष्टवारपती रवि इस्से गणनामें गत होरापति शनि और वर्त्तमान होरापती गुरु इस्का चल रूप (१) जानना.

वर्षमासदिनहोरापतिचक्र

कालचलयोगचक्र.

सूदि	चं	मं	बु	वृ	शु	श	ग्र	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	ग्र
दिन	०	वर्ष	०	होरा	०	मास		१	१	१	१	३	१	२	
४५	०	१५	०	१	०	३०	व	४१	३६	१३	३२	१	१	२८	व
०	०	०	०	०	०	०		४	३२	४४	३६	१६	१६	४४	

इदानीं क्रमप्राप्तचेष्टावलं विवक्षुरादावयन बलमाहः-

श्लोक- } सदाक्रांतिप्रागेर्युताज्ञस्यसिद्धाः शनीन्दोयुतोनाः
 क्रमाद्याम्यसौम्यः ॥ विलोमं परेषां गजाम्नाधि
 ४८ भक्ता भवेदायनं वीर्यमर्कस्य दृग्ध्रं ॥ ८ ॥

अन्वयः- इस्य बुधस्य दक्षिणैर्वीर्यैः क्रान्तिप्रागेः सिद्धांश्चतुर्विंशत्यंशांशुताः शनीन्दोयुतोनाः क्रमात् याम्यैसौम्यैर्युताः सौम्यैरुनाः परेषां रविभौम गुरु शुक्राणां विलोमं सौम्यैर्युताः याम्यैरुनाः सिद्धाः २४ गजाम्नाधि ४८ भक्ताः संतः आयनं वीर्यं भवेत् इदमायनबलं अर्कस्य द्विगुणितं सद्भवेत्

अर्थः- सर्वकाल २४ अंशमें बुधका दक्षिण किंवा उत्तर क्रान्ति भाग युक्त करना २४ अंशमें शनि और चन्द्र इनके दक्षिण क्रान्ति भाग युक्त करना और उत्तर क्रान्ति भाग २४ अंशमेंसे कम करना २४ अंशमेंसे रविभौम गुरु और शुक्र इनका दक्षिण क्रान्ति भाग कम करना और उत्तर

क्रांति भाग २४ अंशमें युक्त करना. अनंतर वह सब ६० से भाग देना तो ग्रहोंका अयन बल होता है. परंतु यह बल सूर्यका मात्र द्विगुणित करना अथवा क्रांति भाग संस्कारित २४ अंशमें उसीका चतुर्थी श युक्त करना तो कलादि अयन बल ही.

क्रांतिब्रनावनेका. श्लोक. १

स्युःखंडानिरववाह्योऽस्वर्कताशैलान्नयोऽध्व्यन्नयः
त्रिंशत्तत्त्वघतीनवारिनिधयस्तैः सायनांशग्रहात् ॥

बाव्हंशांशकु १० भाग संख्यक्युतिः शैषैष्यघाताद्दशा-
साढ्यादिष्विहृत्तालवादिपमस्ताद्विक्रस्वगोलाभवेत् ॥१॥

अन्वयः- अयनांश युक्तात्वेदात् ग्रहात् बाव्हंशांश भुज भागा-
स्तेषांदिग्लबोदशमांशः तन्मितखण्डैक्यं कार्यम् ॥ तच्छेषेण
घाताद्गुणिताद्यत् एष्यं भोग्य खंडं तस्ययोदिग्लबोदशमांशः तेन
युतं खण्डैक्यं कार्यम् ततोदिग्भिर्हृतो दशभक्तः लवाद्यः अंशा-
द्यः स्वदिक् सायनगोलदिक् अपमः क्रांतिः स्यात्.

अर्थभाषा.

ग्रहमें अयनांशा युक्त करके उसका पूर्वति रीति करके भुज-
करना और उसके अंश करना १० से भाग देना जो भागाकार आवे
तत्परिमित नीचे लिखे अंशमें मिलान करना और भागाकारमें एक युक्त
करके तत्परिमित अंकलेके उसके ऊपरके अंशादि शेषको गुणके वह
गुणाकारको १० से भाग देके जो भागाकार आवे उसमें पीछेके अंक
की मिलान युक्त करना और जो मिलान आवे तिसको १० से भाग देना
जो भागाकार आवे सो अंशादि क्रांति जानना जो सायन ग्रह उत्त-
र गोलमें होयतो उत्तर क्रांति और दक्षिण गोल होयतो दक्षिण
क्रांति जानना. गोल ऐसा कि मैपसे ६ राशीतक सायन ग्रह होयतो
उत्तर गोल तुलसे ६ राशीतक सायन ग्रह होयतो दक्षिण गोल जानना.

क्रान्त्यंकचक्रम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९
२०	२०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	६

क्रांतिसारिणीप्रवेशः

प्रथम सायन ग्रह करके उस्का भुज करके उस्का भागकरना अनंतर सारणिमें अंश कौष्ठक ९० लिखके उस्के नीचे अंशादिफल लिखाहे और दश दश अंशके अंतरसे अलग अलग ६० कला विकला कौष्ठकलिखा है अब अशीष्ट भुज भाग कौष्ठकके नीचेका अंशादि फल लेके उस्को भुज भागके नीचे जो कला विकला तत्परिमित कला विकला कौष्ठकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो ग्रहोंकी अंशादि क्रांति होती है. उदाहरणम्. -

सूर्य्य ००।१३।१०।१२ इस्का अपनांशा २२।११।०३ युक्त करके ०१।५।५१।१५ यह सायन सूर्य्य इस्का भुजकियातो वहीरहा ०१।५।५१।१५ इस्के अंश ३५।५७।१५ यह है इसवास्ते भुज भाग कौष्ठक ३५ के नीचेका अंशादिफल १३।२१।०० कला ५१का कला विकला कौष्ठकका कलादि फल १०।२२ विकला १५का कला विकला कौष्ठकका विकलादि फल १५।१२ यह कला विकला कौष्ठक फल एकत्र करके १०।३७ यह पूर्वोक्त अंशफल १३।२१।०० इस्में युक्त कियातो १३।१२।३७ यह सूर्य्यकी क्रांति भई इसी प्रमाणं सब ग्रहोंकी क्रांति वनावना. अब सायन सूर्य्य उत्तर गोलमें है इसीवास्ते उत्तर क्रांति जानना.

क्रांतिचक्रम्.

सूर्य्यः	चंद्रः	मंगः	बुधः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
१३	२०	१०	५	०	१६	२३
१२	५६	१७	३७	२२	७	१५
३७	२६	३१	५०	४०	१७	२२
उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण	उत्तर
						उत्तर
						दक्षिण

क्रांतिसारिणी.

शुक्रंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
अं.	०	२४	४८	७२	९६	१२०	१४४	१६८	१९२	२१६	फ.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

कलाविकलाफल ॥

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	०	२४	४८	७२	९६	१२०	१४४	१६८	१९२	२१६	२४०	२६४	२८८	३१२	३३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	१२	१२	१२	१२	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२

क्रांति सारिणी.

शुक्रंको	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	
अं.	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	फ.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	०	२४	४८	७२	९६	१२०	१४४	१६८	१९२	२१६	२४०	२६४	२८८	३१२	३३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	१२	१२	१२	१२	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ध.	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२

क्रांतिसारिणी.

पु.अं.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
अं.	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	
फ.	०	१२	२४	३६	४८	५१	१३	२५	३७	४९	फ.

कला विकला फल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
घ.	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४२	६	२६	४८	१०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	१०
घ.	३३	५५	१७	३९	१	२४	४६	८	३९	५२	१५	३७	५९	२१	४३
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
घ.	६	२८	५०	१२	३४	५७	१९	४१	३	२५	४८	१०	३२	५४	१६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२१
घ.	३९	१	२३	४५	७	३०	५२	१५	३६	५८	२१	४३	५	२७	४९

क्रांति सारिणी

पु.अं.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
अं.	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	
फ.	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	४५	फ.

कला विकला फल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
घ.	०	२०	४०	१	२१	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	४५
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	९
घ.	६	२६	४६	७	२७	४८	८	२८	४९	९	३०	५०	११	३१	५१
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
घ.	१२	३२	५२	१४	३६	५५	१६	३६	५६	१६	३७	५७	१७	३८	५८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
घ.	१९	३९	५९	२०	४०	१	२१	४१	२	२२	४१	३	२३	४४	४

कांतिसारिणी.

मु.अं.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	
अं.	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	
फ.	६	२६	४२	०	१८	३६	५६	१२	३०	४८	फ.

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
घ.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२६	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८
घ.	३०	४८	६	२६	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२६	४२
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
घ.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२६	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७
घ.	३०	४८	६	२६	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२६	४२

कांतिसारिणी.

मु.अं.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
अं.	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	
फ.	६	२१	३६	५३	६	२१	३६	५३	६	२१	फ.

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
घ.	०	१८	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०
को.	१६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६
घ.	२५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	७	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११
घ.	३०	४८	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
घ.	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५

क्रांतिसारिणी.

सुअं	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	
अं.	३०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	
फ.	३६	४६	५७	६८	७९	९०	१०१	११२	१२३	१३४	१४५	फ.

कला विकला फल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०
ध.	०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	११०	१२०	१३०	१४०
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
ध.	२६	३५	४६	५७	६८	७९	९०	१०१	११२	१२३	१३४	१४५	१५६	१६७	१७८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०
ध.	६	१७	२८	३९	५०	६१	७२	८३	९४	१०५	११६	१२७	१३८	१४९	१६०

क्रांतिसारिणी.

सुअं	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	
अं.	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	
फ.	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	फ.

कला विकला फल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
ध.	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	६४	७१	७८	८५	९२	९९
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
ध.	६८	५५	४२	३९	२६	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
ध.	२६	३५	४६	५७	६८	७९	९०	१०१	११२	१२३	१३४	१४५	१५६	१६७	१७८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
ध.	२६	३९	५२	६५	७८	९१	१०४	११७	१३०	१४३	१५६	१६९	१८२	१९५	२०८

क्रांति सारिणी:

शु. अं.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
फ.	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२७	३०	३३
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
घ.	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५७	५९	६	६	६	६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३३	३५	३७	४०	४२	४४
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४८	५०	५२	५५	५७	५९	६	६	६	९	११	१३	१६	१८	२०

अयनबल सारिणी प्रवेश.

प्रहोके दक्षिणोत्तर क्रांति संबंधसे अयन बल सारिणीमें शून्य से २४ तक २५ क्रांति भाग कोषक दो ठिकाने लिखा है. जब सूर्य मंगल गुरु शनि इनकी उत्तरक्रांति और शनि चन्द्र इनकी दक्षिण क्रांति बुधकी दक्षिण किंवा उत्तर क्रांति है तब प्रथम क्रांति भाग कोषकमें से अर्ध क्रांति भाग कोषकके नीचेका रूपादिफल केले उसको अंशकोषकके आगे ६० कलाविकलाकोषक लिखा है उसमेंसे क्रांतिभागके नीचे जो कलाविकला होय तत्परिमित कलाविकला कोषकके नीचेका ४७ कोषक तक कलाविकलादि विकलाका प्रतिकलादि और ४८ कोषकसे कलाका कलादि वैसा विकलाका विकलादि फल एकत्र करके युक्त करना तो भिन्न भिन्न प्रहोका अयन बल होता है. जब सूर्य भौम गुरु शनि इनकी दक्षिण क्रांति और शनि चन्द्र इनकी उत्तर क्रांति होय तब द्वितीय क्रांति भागकोषकमें से अर्ध क्रांति भाग कोषकके नीचेका रूपादि फल लेना अनंतर आगे ६० कलाविकलाकोषक लिखा है उसमेंसे अर्ध क्रांति भागके नीचे जो कलाविकला होय तत्परिमित कलावि

कला कीषकके नीचेका कलाका कलादि और विकलाका विकलादि फल एकत्र करके लिया जो अंशफल उस्मेसे कम करना तो यहाँका अयनबल तयार होता है. यह अयनबल सूर्यका मात्र दूना करना.

प्रथमक्रांति भागचक्र अंशफल-अयनबल सारिणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
००	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	०
५५	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८

द्वितीयक्रांति भागअंशफल.

अंको	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
क.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७

कलाफल.

को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	०
क.	०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	०
को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
क.	१०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
क.	४५	०	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	०
को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	०
क.	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क.	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५	०
को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
क.	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२
क.	१५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	२४०	२५५

उदाहरणम्.

सूर्यकी उत्तरक्रांति १३३२३७ इस्का अंश १३ है. इसवाले इहाँ.

प्रथम क्रांति भाग को एक १३ इस्का फल ०।४४घटी १५ इस्की क्रांति भा-
 गके नीचिकी कला ४२ विकला ३७ इस्का कलाका विकलादि और
 विकलाका प्रतिकलादि फल एकत्र करके ५३।१६ यह विकलामें युक्त
 करके ०।४७।० यह दूनाकरके १।३।४।१६ यह सूर्यका अयन बल भ-
 या इसी प्रमाण सारणीसे चन्द्रादिकोंका अयन बल होता है :

अयन बल चक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
३४ १६	५६ १०	४२ ५२	३७ ९	२९ ३१	२४ ५०	० १०	बल

इदानीं भौमादीनां चेष्टाबलमाह.

श्लोक

मध्यस्पष्टयुतेर्दलानितचलंचेष्टारव्यकेद्रकुजात्
 स्यात्तत्रेद्रगणाच्चतुषडधिकषड्दृष्टत्रेष्टाबलं ॥
 स्यादेकोत्तररूपमिद्विद्विहृतनैसर्गिकस्याद्दलं
 मंदारज्ञपुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनां क्रमात् १०

अन्वय मध्यस्पष्टयोर्ग्रहयोर्योगार्धेनो नितंचलं ताम शीघ्रोच्चतदा भौ-
 मादीनांचेष्टासंज्ञकं केन्द्रस्यात् तत्केन्द्रेचेष्टषडधिकं तदा द्वादश राशिभ्य-
 शुद्धततः षड्दृष्टत्रेष्टाबलं भवति चकारा दुष्टबलसाधनवद्भागविधिर-
 नाभिज्ञयः अत्रेदं ध्येयं यदि मध्यस्पष्टयुतौ द्वादशाधिकं तदा द्वादशभि-
 रनष्टं नकार्यमिति नैसर्गिकबलस्यादित्यस्य पूर्वार्धेन संबंधः एको-
 त्तररूपमिद्विद्विहृतं तदा क्रमाच्छनिभौमबुधगुरुशुक्रचन्द्रसूर्या-
 गां नैसर्गिकं बलं स्यात् तद्यथा एकस्मिन् सप्तमके शने नैसर्गिक
 बलं द्रव्योत्सन्नपत्तेर्भौमस्य.

अर्थ भाषाः मध्यम और स्पष्ट ग्रहका योगार्ध उसी ग्रहके शीघ्रोच्च
 में कम करना तो भौमादि ग्रहका चेष्टाकेन्द्र होता है यह केन्द्र द्वादशीसे
 ज्यादा होयगा १२ राशीमें कम करना अनंतर उच्चबलमें पूर्व शक्ति असाण
 दत्ते असादेना तो चेष्टाबल होता है अथवा षड्भाग केन्द्रतंग असाण
 निकलकरके इस्का ३ स भाग देना तो सुगमसंज्ञीसे नैसर्गिक बल होता है
 या अयन और चेष्टाबल इनके योगको चेष्टाबल कहते हैं अनु-
 क्रमत् १ से ७ तक अंकको ७ नैसाण देना तो क्रमसे शनि भौम बु-
 धशुक्रचन्द्रसूर्य इनका नैसर्गिक बल होता है अथवा-

८।३४।१७ इनको क्रमसे १ से ७ तक अंकसे गुणनातो शनिभौम इत्यादि ग्रहोंका कला नैसर्गिक बल होता है। अथवा शनिके बलको दूना तिगुना चौगुना करते जावे तो वही क्रमसे बल हो जायगा।

भौमादिग्रहोंकाशीघ्रोच्चबनावनेकिविधि:-

बुध और शुक्र इनके शीघ्रकेन्द्रमें मध्यम सूर्य युक्त करनेसे बुध शुक्रका शीघ्रोच्च होता है। और मंगल रहस्यति शनि इनका शीघ्रोच्च मध्यम सूर्य है।

मध्यमग्रह.						स्पष्टग्रह.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.
५	०	५	०	२		४	११	५	१०	२	
२२	११	१२	११	१६	मं.	११	२१	१२	२६	१३	स्पष्ट.
७	११	१७	११	३२		४	२०	१२	५६	२१	
२६	५६	५१	५६	३७		१६	५३	३७	४	४५	

मध्यस्पष्टयोग:						मध्यस्पष्टयोगदलचक्रम्.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.
१०	०	१०	११	५		५	०	५	५	२	
३३	३२	३०	८	१	यो.	११	१६	१५	१०	१५	यो.द.
११	३२	३०	८	१		३५	१६	१५	१०	१५	
४०	४२	३८	०	२२		५०	२४	१४	०	४१	

शीघ्रोच्चचक्रं.						विषाकेन्द्रचक्रम्.					
मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	अ.
११	७	०	७	०	शी.	७	१६	७	२	९	
४१	१८	११	२४	११	के.	१६	५६	५६	५०	२६	के.
५६	१५	१३	५६	११		२६	५६	५६	५०	११	
	१५	५६	९	५६		६	५१	४२	९	१५	

विषाबलसारिणी प्रवेशः

विषाकेन्द्र पड़ जात्य करके सारिणीमें ६ राशी कोषकें लिखके उत्के नीचे कोषकमें रूपादि फल लिखा है। उसमेंसे पड़ जात्य विषाकेन्द्रका जो बल संपक होय उत्के नीचेका फल लेना। अनंतर राशी कोषकके नीचे अंश कोषक और ६० कला कोषक लिखा है। उसमेंसे पड़ जात्यकेन्द्रका जो डफअंश और कला आवे तत्परिमिति कोषकके नीचेका अंशका बलादि और कलाका विकलादि फल एकत्र करके पूर्वमें लिखा जो राशी फल उसने युक्त करना तो ग्रहोंका विषाबलहोता है। यह सार-

णी प्रवेशसे इष्टकषाध्यायमेकासूर्यचंद्रकाचेष्टावलकरनेके वास्ते कामपड
ताहे. ॥ चेष्टावलसारिणीराशिफल. ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८
०	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०

अंशफल.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

टीप:- आरामरेज्य सीरीणां शीघ्रोच्चस्याहिवाकरः ॥

कला विकलाफल.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५
०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
५६	५७	५८	५९	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
०	०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

उदाहरणम्.

गौनका चेष्टाकेन्द्र ७।१।३६।६ यह ६से अधिक हे. इसवास्ते
१२मसे कम करके ६।२०।२३।५६ यह इसका राश्यंक ५ इसवास्ते
६राशिकोषकका फल ०।६०।० इसका अंश २० इसवास्ते २० कोषक-

का फलं ६।४० और कला २३ इसवास्ते २३ कला कोषक का फल ७।
४० एकत्र करके ६।४० यह राशी फलमें युक्त करके ०।४६।४० यह
भौमका चेष्टाबल भया. इसही प्रकार बुधादिकोंका करना.

चेष्टाबलचक्र.

अयनचेष्टाबलयोगचक्र.

मं.	बु.	र.	शु.	श.	०	स्व.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.
४६	४४	४०	२९	२९	०	१	०	१	१	१	०	०
४०	२०	४१	५६	१६	०	३४	५६	२९	२९	१९	४६	२९
						१६	१०	४०	२९	१२	४६	३४

५ नैसर्गिकबलोदाहरण.

एकको ७ से भागदेके ०।८।३४ यह शनिका. दोको ७ से भागदे-
के ०।१७।० यह भौमका. ३को ७ से भागदेके ०।२५।४३ यह बुधका
चारको ७ से भागदेके ०।३४।१७ यह गुरुका. पांचको ७ से भागदेके
०।४२।५९ यह शुक्रका. छको ७ से भागदेके ०।५१।२५ यह चन्द्रका
७को ७ से भागदेके १।०।० यह सूर्यका. इसीप्रमाण ग्रहोंका संवका
ल एकही नैसर्गिक बल होता है. यह बल सिद्ध है.

नैसर्गिक बल.

ग्रहः	स्व.	चं.	मं.	बु.	र.	शु.	श.
व.	१	५९	१७	२५	३४	४२	०
	०	२६	८	४३	१७	५९	३४

श्लोक } युद्धेवाणविद्योगहृत्स्वचरयोर्वीर्यैक्ययोरंतरम्
स्वसौम्यस्वबलेक्षयं चयमदिकुसंस्वस्यकुर्व्याद्दले ॥
सहस्यं प्रियुगुग्रहृष्टिचरणो न रवेदवीर्यं भवेत् भावानां
बलमीडा जंचतुष्पादारव्यकीटाद्युजा ॥ १ ॥
जायां द्वाचरय भोनिताः खलु न तोदिन्वीर्यवत्तद्युतं
सहृष्टयं प्रियुगुग्रहृष्टिचरणो न ज्ञेयं दृष्ट्युक् पुनः ॥

अन्वयः- स्वचरयोस्ताराग्रहयोः भौमादिग्रहयोरित्यर्थः युद्धे सति
वीर्यैक्ययोर्बलैक्ययोरंतरं वाणविद्योगहृत्स्वचरयोरेतरेण तक्तः सन् युद्धव्यं न
स्वसौम्यत्संस्वस्यग्रहस्वबलेक्षयं न कुर्व्यात् यमदिकुसंस्वस्यबले क्षय-

मृणं कुप्यति ग्रहस्य दक्षिणोत्तरस्य ज्ञानंतु शर वशेन भवति तथै
 थायस्य ग्रहस्योत्तर इरः स उत्तरस्यः यस्य दक्षिणः स दक्षिण-
 स्यः यदि द्वयोर्लक्षः इरस्तदायस्याधिकं शरः स उत्तरस्योऽन्यो दक्षिण
 स्यः यदि द्वयोर्दक्षिण इरस्तदायस्याधिकं शरः सो दक्षिणस्योऽन्य उत्तर
 स्य इत्यर्थः इदानीं दृग्बल - ग्रहाणां प्रागानीतबलं ज्ञात्वा शुभग्रहाणां
 दृष्टिचतुर्थीशेन युतं उभ्राणां पापानां दृष्टिचतुर्थीशेन स्थितं कार्यं
 तदा ग्रहाणां वीर्यं भवेत् भावबल - भावानामेकं बलं स्वामिबलं
 भवत्येव पुनर्द्वितीयबलं चतुष्पादस्य कीटास्युजाप्राणाः तूरचतुष्पाद
 कीटजलचरणशयो भावा क्रमेण जायां ह्यद्यस्वभौनिताः सप्तमचतु-
 र्थं प्रथम दशम भावेरुनायदिषड् भावैर्दिकोस्तदा द्वादश राशिभ्यः शु-
 द्धाः पञ्चाल्पायथास्थित एवतंतः पैडुक्ता फलं दिग्बलं भवेत् अनयो
 योगः कार्यः सतुशुभं ग्रह दृष्टिचतुर्थीशे पापग्रह दृष्टिचतुर्थीशयो
 रंतरं धनर्णं पूर्वोक्त बलकार्यं बुध उर्वीर्दृष्टयो रेक्यं तृतीयबलं त्रया-
 णां योगे स्पष्टं भावबलं स्यात्

अर्थः- जब जन्म कालमें २ ग्रहोंका युद्ध होताहै कहिये वह ग्रह रा-
 शि भाग कलासे सम होतेहैं तब वह ग्रहोंका कलात्मक शर करना अन-
 तर वही ग्रहोंका पूर्वोक्त बलका जो एक्य उस्का अंतर करके उस्को शर
 के अंतरसे भागदेना जो फल आवेसो उत्तर दिशामें रहने वाला जो
 ग्रह उस्के बलमें युक्त करना और दक्षिण दिशामें रहने वाला जो ग्रह
 उस्के बलमेंसे कम करना यह संस्कार चेष्टा बलका भेद है-

टीपः- सूर्यसे चंद्रादिकोंका जो समागम उस्को अस्त कहना और
 भीनादि ५ ग्रहोंका परस्पर जो समागम उस्को युद्ध कहना-

शरका अज्ञानग्रह ग्रह लाघवमें कहा है सो ऐसा उस्में प्रथम
 पातांशादि कहते हैं-

श्लोक-

रवाम्बुधयः स्वयमाः स्वप्नुजंगाः रवांगमिताः स्वदशक-
 मन्मः स्युः ॥ पातलयाः कुसुताह्वधपृग्योर्मध्यमचंचल
 केन्द्रविहीनाः कुद्वियाथियगो श्विमादलयश्वेपडुपु-
 प्रंगलं केन्द्रचक्रविशुद्धमस्य ममिताद्धैक्यलवघ्रागतात्
 त्रिशद्व्ययुनकु जालुकुयमलाध्वीन्हू द्विभक्तं क्रमात्
 तद्धीनाधृतिरिषिलागुणतुवांगोन्ना इनाद्राक्श्रुति ॥१॥

मं.	बु.	बु.	शु.	श.	ग्रहः -	शरकेलिये शोघकर- णिका प्रकारः-
४०	२०	८०	६०	१००	पातांशाः	
१	२	३	४	४	शीघ्रांशाः	
१	२	४	१	७	भाज्यांकाः	
१८	१५	१३	१९	१२	शीघ्रकर्णांकः	भीमादि जिस ग्रहका कर्णसाधना होय उस्का अंतिम शीघ्रकेन्द्रलेके वह ६ राशीके अपेक्षा अधिक होय

तो १२ राशीमें कम करना और वह षड्वात्य केन्द्रके राशि परिमित कोष्ठक में लिखा जो शीघ्रांक उस्की मिलान लेना. और एकाधिक राशि परिमित शीघ्रांकमेकेन्द्रकी राशी त्याग करके अंशादिकको गुणना और वह गुणाकारको ३० से भाग देना तो फल अंशादि आवेगा उसमें शीघ्रांक की मिलानयुक्त करना जो योग आवे उस्को क्रमसे कोष्ठकमेका भाज्यांकसे भाग देना जो फल आवेसो अंशादि जानना. वह क्रमसे कोष्ठकमेका शीघ्रकर्णांकमेंसे कम करना जो शेष रहे. सो ग्रहोंका अंशादि शीघ्रकर्ण होता है. और जो बुध शुक्रका पातांशक है है उसमें अहर्गणोत्पन्न जो बुध और शुक्र जो शीघ्रकेन्द्र होयसो ऊपर कहा जो पातांश उसमेंसे कम करके जो शेष अंश रहे सो बुध और शुक्रके पातांश होते हैं.

भीमादिशरवनानेका प्रकारः-

श्लोक- } मंदस्पष्टरवगात्स्वपातरहितात्क्रांत्यंशकालेवल-
त्कर्णसास्त्रियमाहताअथगुरोश्चेलोचनासाःपुनः ॥
स्वाध्युनामसृजोऽङ्गुलादिकशरः पातो नदिक्स्या-
दसौ त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः ॥

अर्थ भाषा.

जिस ग्रहका शर बनाना होय उस ग्रहका पातांश मंदस्पष्ट ग्रहमेंसे कम करके जो शेष रहे सो पातो न ग्रह भया अनंतर पातो न ग्रहको अथनांशा देनेविना उस्से क्रांति ल्यावना और वह क्रांतिको २३ से गुणके वह गुणाकारको शीघ्रकर्णसे भाग देना तो अष्टौ ग्रहका अंगुलादिशर होता है सो पातो न ग्रह उत्तर गोलमें होयतो उत्तर शर दक्षिणगोलमें होयतो दक्षिणशर ऐसा जानना वैसा ही

गुरुका शर करना होयतो ऊपरकी रीतिसेले आये जो शर उस्को ३ से भाग देना तो गुरुका अंगुलादि शर होता है. और भौमका शर करना होयतो ऊपरकी रीतिसेले आये जो शर उस्मेंसे उसीका चतुर्थी शर करना तो भौमका अंगुलादि शर होता है. अनंतर बनाया जो शर उस्को ३ से गुण देना तो कलात्मक शर होता है.

दृग्बल भाषा.

ग्रहपर जिस ग्रहकी दृष्टि रहती है उसके बीचमें शुभ ग्रहकी दृष्टिका ऐक्य करके उस्का चतुर्थीश लेना तो वह धन दृग्बल होता है और पापग्रहके दृष्टिका ऐक्य करके उस्का चतुर्थीश लेना तो वह ऋण दृग्बल होता है. अनंतर धन दृग्बल और ऋण दृग्बल इनका अंतर करना तो स्पष्ट दृग्बल होता है.

टिप:- चन्द्र बुध गुरु शुक्र यह शुभ ग्रह और रवि भौम शनि यह पाप ग्रह हैं बुध पापग्रह युक्त होयतो पापशुभ ग्रह युक्त होयतो शुभमिश्र ग्रह युक्त होयतो मिश्र फल जानना.

उदाहरणम्.

सूर्यके ऊपर शुभ ग्रहकी दृष्टिका ऐक्य ३।३६।४२ इसका चतुर्थीश ०।२४।१० यह धन दृग्बल और सूर्यके ऊपर पापग्रहकी दृष्टिका ऐक्य ०।२९।२१ इसका चतुर्थीश ०।७।२० यह ऋण दृग्बल इनका अंतर ०।१६।५० यह धन दृग्बल सूर्यका भया इसी प्रमाण चंद्रादिकोका करना.

टिप्पण:- शुभ ग्रहकी दृष्टिका चतुर्थीश पापग्रहकी दृष्टिका चतुर्थीशमें घट जायतो ऋण दृग्बल अन्यथा धन दृग्बल जानना.

दृग्बल चक्र मिदम्.

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
०	०	०	०	०	१०	०	
१६	१	१	२	१६	१३	२१	दृग्बल.
५०	४७	२६	२०	२	५०	४५	
धन	ऋण	ऋण	ऋण	धन	ऋण	धन	

षड्बलेक्यचक्रसिद्धम् ॥.

सूर्यः	चन्द्रः	मंगः	बुधः	बृहः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
२२ ३३॥	० ८॥	२१ १३॥	४८ ५२॥	३५ १०	२२ २०॥	२२ ४७	स्थानबल १
३० ३०	५० २४	५० २२	६० ७०	४० ३०	४५ १४	३८ ४७	दिग्बल २
४५ ४५	५५ २२	५५ २०	६५ २५	५० १५	५५ १५	२८ ४४	कालबल ३
५५ ५५	५५ १०	५५ १०	६५ २३	५० ३२	६५ ४५	२१ ३४	वैष्णवबल ४
५५ ५५	५५ २५	५५ १०	६५ ३३	५० १७	६५ ५५	५ ३४	निसर्गबल ५
६५ ३३॥	५५ ५१॥	५५ ३७॥	६५ ४५॥	५० २५	६५ ३७॥	५५ २६	पाचोका योगः
१६ धन ५०	१ ऋण ६५	१ ऋण २०	२ ऋण २०	१६ धन २	१३ ऋण ५०	२१ धन ४५	दृग्बल.
५५ ५३॥	५० ४॥	५० ५१॥	५५ २५॥	३५ २७॥	३५ ३७॥	३५ ११	षड्बलयोगः

भावबलः

अर्थभाषाः—लग्नादि भावोंके स्वामीका जो बलसौलग्नादि भावबल होता है. गनुष्य राशी मिथुन कन्धा तुला धनका पूर्वार्द्ध और कुंभ इस्मेंसे सप्तम भाव कम करना चतुष्यद राशीमेष वृषभ सिंह धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध इस्मेंसे चतुर्थ भाव कम करना. कीट राशी कर्क वृश्चिक इस्मेंसे तनु भाव कम करना. जलचर राशी मीन और मकरका पश्चिमार्द्ध इस्मेंसे दशम भाव कम करना अनंतर शेष धराशीके अपेक्षा अधिक होयतो १२ राशीमेंसे कम करके षड्भाल्प शेषसे दिग्बलमें पूर्वोक्त रीति प्रमाणा बल साधन करनातो भाव दिग्बल होता है अनंतर यह दिग्बल भाव बलमें युक्त करना भावपर जीन ग्रहोंकी दृष्टी होय उस्मेंसे शुभ ग्रहोंके दृष्टीका ऐक्य करना उसीका चतुर्थांश लेना तो वह धन दृग्बल होता है और पापग्रहोंके दृष्टीका ऐक्य करना उसीका चतुर्थांश लेना तो वह ऋण दृग्बल होता है अनंतर धनऋण दृग्बलका अंतर करना तो स्पष्ट दृग्बल होता है. यह दिग्बल संस्कृत भाव बलको धन होयतो युक्त करना. ऋण होयतो कम करना फेरउस्को भावके उग्रकी बुधगुरुकी दृष्टी युक्त करना तो स्पष्ट भाव बल होता है.

भावबलोदाहरणः- तनुभावस्वामिशुक्र इस्का षड्बलैक्य ५।३१।३७
 ।३० यह तनुभावबल यही रीतिसे धनादि भावोंका बल जानना + तनुभाव
 ६।१।४२।२६ यह लग्नराशी मनुष्यराशी है। इसवास्ते इस्मेंसे सप्तम भाव
 ०।१।४२।२६ कम करके ६।०।० यह ६से ज्यादा नहीं इसवास्ते ६ इस्का फल
 पूर्वोक्त दिक्बल सारणी परसे १।०।० यह तनुभाव दिग्बल और यह तनु भाव
 बल ५।३१।३७।३० इस्में युक्त करके ६।३१।३७।३० यह दिग्बल संस्कृत तनु
 भाव बल-तनुभाव पर शुभ ग्रह दृष्टि योग १।४३।२ इस्का चतुर्थीश ०।२५
 ।४५ यह धन दृग्बल और पाप ग्रह दृष्टि १।३९।१२ योग यह इस्का चतुर्थी-
 श ०।२४।४८ यह क्रम दृग्बल इस्का अंतर ०।०।५७ यह धन स्पष्ट दृग्बल
 यह दिग्बल संस्कृत तनु भाव बल में युक्त करके ६।३२।३४।३० यह इस्का
 तनुभाव पर बुध दृष्टि ०।५०।५० उरु दृष्टि ०।०।४४ युक्त करके ७।२४।८
 ।३० यह स्पष्ट तनुभाव षड्बल भया यही रीतिसे धनादि भावोंका स्पष्ट बल करना
भाव बल चक्रम्.

त.	घ.	स.	सु.	रु.	रि.	जा.	मृ.	ध.	क.	आ.	व्य.	भावाः
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	भावस्वामी बलम्.
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	भावदिग्बल चक्रम्
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	योग.
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	भावदृग्बल.
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	योग.
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	बुधदृष्टि:
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	उरुदृष्टि:
५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	५।३१।३७	स्पष्टभावबलचक्रम्

श्लोक. } जगदीश्वरराजः ॥
 वलाधिकारः ॥
 ॥ ५ ॥

तद्द्रुपदशायाः फलं वीर्यं दृक् पृथगिष्टकष्टगुणिते द्वे चै-
ष्टकष्टाव्ये ॥ १३ ॥

अन्वयः

सूर्यादीनां प्रागानीते ये चेषोच्च बलेते षड्भिर्गुणिते सैके कृते सति नि-
जा रश्मयश्चेष्टाबलाच्चेष्टारश्मयः उच्च बलादुच्च रश्मयो भवन्ति इत्यर्थः
चेष्टाबलेनोच्च बलं गुणनीयं गोमूत्रिका गुणनरीत्या तस्य मूलमिष्ट
संज्ञं स्यात् + चेषबलतुंगबलो नैकयो र्घातान्मूलं कष्ट संज्ञं स्यात्
दशाफलं तद्द्रुपं स्यात् अर्थादिष्टकष्ट तुल्य फल मिति इष्टेऽधिके सति
शुभमधिकं कष्टेऽधिके ऽ शुभमधिकं साम्येभिः अफलं दशायाः स्यात्
ग्रहस्य बलं अर्थात्पङ्कलेक्यं स्थान इये स्थाप्यं तथा ग्रहोपरिया दृष्टय
स्ता अपि स्थान इये ग्रहस्येष्टकष्टेन गुण्यास्तदा क्रमेणोष्टबलं कष्टबलं
इष्टदृष्टयः कष्टदृष्टयश्च भवन्तीति०

अर्थः- ग्रहोंका जो चेषाबल और उच्चबल इस्को दसै गुणके गुणा
कारमें एक युक्त करना तो ग्रहोंका उच्चरश्मी और चेषारश्मी होती है
ग्रहोंका चेषाबल और उच्चबल इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना
तो ग्रहोंका इष्ट होता है. एक १ मेंसे ग्रहोंका उच्चबल और चेषाबल पृ-
थक् पृथक् कम करके शेष जो गुणाकार उस्का वर्गमूल निकालना तो
ग्रहोंका कष्ट होता है. यह इष्ट कष्टके प्रमाण ग्रहोंका शुभाशुभ दशा
फल जानना. ग्रहोंका पङ्कलेक्य और ग्रहोपरिदृष्टी इस्को पृथक् पृथक्
ग्रहोंके इष्टसे और कष्टसे गुण देना तो ग्रहोंका इष्टबल और कष्ट
बल और ग्रहोंकी इष्टदृष्टी और कष्टदृष्टी होती है.

वर्गमूलनिकालनेका प्रकार

श्लोक-

अंत्ययावदिहाच्छांका हृष्यति र्व्यस्थरेरवया संज्ञास्या
नाफकानाच्च विप्रमारव्यसमेतमात् ॥ त्यक्त्वा न्यादिप-
गालरुविदिगुणयिन्मूलं समेतद्भुते त्यक्त्वा लब्धकृति-
तदाद्यविप्रमाल्लब्धदिनिघ्नं न्यसेत् पंचन्यापंक्तिदृत्तं-
समेऽन्यविप्रमाल्लब्धत्काप्तवर्गफलं पङ्क्यांतद्दिगुणं
न्यसेदिनिगुहः पंक्तिदलं स्यात्सदम् ॥ १० ॥

अन्वयः- गणक अंत्यादिप्रमाणं कृतिगुत्सवत्सा मूलदिगुणयेत् समे-
तद्भुते मतिगदाप विप्रमाल्लब्धकृतिं त्यक्त्वा लब्धं दिनिघ्नं पंचन्यापंक्त्यां न्यसेत् समे-
पंक्तिदलेन गति अंत्य विप्रमादात्त वर्गमूलं त्यक्त्वा तत्फलं दिगुणं पंचन्या

न्यसेत् इति मुहुः कुर्यात् तदापंक्तेः दलं पदं स्यात् .

अर्थ भाषा:- जिस संख्याका मूल निकालना होय उसके दहने तरफ से विषम समका चिन्ह करना जब तक अंककी समाप्ती न होय तब तक करना अनंतर सबसे बाईं तरफ जो अंत्य विषम होय उसमें जिस संख्याका वर्ग घटे सो घटाय देना और जिस्का वर्ग घटे उस संख्याको मूल कहते हैं उसको दूना करना उसका नाम पंक्ति है उस करके भाग देना जो विषमके पास सम होय उसमें लब्धि ऐसी लेना कि जिस्का वर्ग आगेके विषममें घटि जाय तो उस लब्धिका वर्ग आगेके विषममें घटाय देना उसको दूना करके प्रथम जो पंक्ति संज्ञा है उसमें आगे एक स्थानमे बढ़ायके रखना कदाचित् और भी अंक होय तो उसी पंक्तिसे पुनः पूर्व रीतिसे भाग देना लब्धिका वर्ग आगेका विषममें घटाना लब्धि दूनी पंक्तिमें रखना ऐसा अंक समाप्ती तक करते जाना फिर उस पंक्तिका आधा करना तो मूल होता है .

सावयव अंकका मूल निकालने की रीति .

० मूलावशेषकं सैकं षष्टिर्घ्नविकलान्वितं ॥ द्वियुक्तेन द्विनिघ्नेन मूलेनाप्तं स्फुटं भवेत् ॥

अर्थ:- जब मूल निःशेषन होय तो शेषमें १ युक्त करिके ६० से गुण देना उसको आया जो मूल उसमें २ युक्त करके दूना करिके भाग देना तो मूलका अवयव होता है यह स्थूल रीति है .

सूक्ष्म रीति यह है .

सैके न द्विघ्न मूलेन भक्तं मूलावशेषकम् ॥ लब्धन्तुतद्धः स्थाप्यं मूलं सूक्ष्मतरं भवेत् ॥

अर्थ:- मूल आया जो उसको दूना करके १ युक्त करिके मूल शेषमें भाग देना लब्धिको उस मूलके नीचे रखना तो सूक्ष्म मूलके आसन होगा .

और यह सबसे अच्छी रीति है . ०

जिस्का मूल लेना होय उसको ६० से गुण देना कलायुक्त करना फिर ६० से गुणना उसका मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो ठीक मूल होगा यदि ऊपरका अंश शून्य होय तो नीचेके अंकको ६० से गुणिके विकला युक्त करके मूल लेना उसको ६० से भाग देना तो मूल होता है .

रश्म्युदाहरणम् ॥

सूर्यका चेष्टावल ०।४१।५८ इस्को ६ से गुणके ४।११।४८ यह इस्को एक युक्त करके ५।११।४८ यह सूर्यकी चेष्टा रश्मि० सूर्यका उच्चवल ०।५८।५६ इस्को ६ से गुणके ५।५३।३६ यह इस्को १ युक्त करके ६।५३।३६ यह सूर्यकी उच्चरश्मि० यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका चेष्टा रश्मि और उच्च रश्मि बनावना.

चेष्टावलः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
४१	३२	४६	४४	४८	२१	२१
५८	३६	४८	२०	४१	५६	१६

चेष्टारश्मि०

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
५	४	५	५	५	३	३
११	१५	४०	२६	५८	११	७
४८	३६	४८	०	६	३६	३६

उच्चवलः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
५८	२०	४	२	३८	४९	१७
५६	४७	२१	७	५५	५८	४७

उच्चरश्मि०

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
६	३	१	१	४	५	२
५३	४	२६	१२	५३	५९	४६
३६	४२	६	४२	३०	४८	४२

इष्टोदाहरणम्.

सूर्यका चेष्टावल ०।४१।५८ यह इस्को सूर्यका उच्चवल ०।५८।५६ यह इस्से गुणके ६।५३।३६ इस्का वर्ग मूल ०।४९।४३ सह सूर्यका इष्ट भया इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका इष्ट बनावना.

चेष्टाच्चवलगुणनचक्रः

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
४१	११	३	१	३२	१८	६
१३	१८	२४	३४	१४	१६	१८

इष्टचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०
४९	२६	१४	९	४३	३३	१९
४३	३	१७	४२	५८	७	२६

कष्टोदाहरणम्.

सूर्यका चेष्टावल ०।४१।५८ यह एकमें कम करके ०।१८।२ इस्को सूर्यका उच्चवल ०।५८।५६ यह इस्को एकमें कम करके ०।१।४ यह इस्से गुणके ०।०।१९ यह इस्का वर्ग मूल ०।४।२० यह सूर्यका कष्ट भया इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका कष्ट साधना.

एकोनवैष्टोच्चबलगुणान

कष्टचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	प्र.
०	१७	१२	१५	३	६	२७	६	३२	२७	३०	१४	१९	६०	०
१९	५६	१५	७	३०	२२	१५	२०	६७	७	७	४५	३३	२५	

इष्टकष्टवलोदाहरण- सूर्यका षड्बलक्य ७।५१।५३।३० इस्को सूर्यका इष्ट ०।४९।४३ यह इस्से गुणके ६।३१।००।५३ यह सूर्य का इष्टबल अथवा सूर्यका कष्ट ०।४।२० यह इस्से सूर्यका षड्बल क्यको गुणके ०।३४।०५।५२ यह सूर्यका कष्टबल यही रीतिसे चंद्रादिकोका इष्टबल-और कष्टबल करना.

इष्टबलचक्र.

कष्टबलचक्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	प्र.
३३	१७	१६	५०	३५	३	५७	३६	३०	२९	३३	५१	३६	५०	०
५३	५७	६	३६	६१	२०	१७	५२	८	२६	४३	५८	१६	५०	

उदाहरण- चंद्रके ऊपर सूर्यकी दृष्टी ०।१०।५४ इस्को चन्द्रके इष्ट ०।२६।३ यह इस्से गुणके ०।८।१२ यह चन्द्रके ऊपर सूर्यकी इष्टदृष्टी और चन्द्रका कष्ट ०।३२।४७ यह इस्से सूर्यकी दृष्टि ०।१०।५४ गुणके ०।१०।१९ यह कष्टदृष्टी मई यही रीतिसे सर्वग्रहोंपरकी इष्टदृष्टी और कष्टदृष्टी करना.

इष्टदृष्टीचक्र.

कष्टदृष्टीचक्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
०	०	७	०	३	०	४	सू.	०	१०	१४	०	१३	०	१०
०	१२	२४	०	३०	०	५	सू.	०	१२	३	०	१३	०	१४
३६	०	१०	०	५	५	५	चं.	५	०	१२	१५	०	३	१०
३७	०	२	०	५	५	५	चं.	५	०	३	३३	०	३	१५
५०	०	०	०	०	०	०	मं.	५	०	०	५	०	३	०
५१	०	०	०	०	०	०	मं.	५	०	०	५	०	३	०
५२	०	०	०	०	०	०	बु.	०	०	३	०	०	०	२
५३	०	०	०	०	०	०	बु.	०	०	३	०	०	०	५
५४	०	०	०	०	०	०	वृ.	०	०	०	०	०	०	०
५५	०	०	०	०	०	०	वृ.	०	०	०	०	०	०	०
५६	०	०	०	०	०	०	शु.	०	०	१	०	०	०	३
५७	०	०	०	०	०	०	शु.	०	०	१	०	०	०	७
५८	०	०	०	०	०	०	श.	०	०	३	३	१	१	०
५९	०	०	०	०	०	०	श.	०	०	३	३	१	१	०

सप्तवर्गशुभाशुभसाधन.

श्लोक-

स्वोच्चेरूपत्रिकोणेचरणविरहितस्वर्षगेर्द्धत्रयोष्टां
 शाश्राधीष्टर्षदृष्टर्षद्युजिचरणाः स्यात्समर्षष्टमांशः ॥
 भ्रूपांशोवैरिगेहेऽध्यरिज्युजिरदांशश्चनीचेखमीशा
 दिष्टगेहेतदूनैकमसदयदलं षट्सुकार्यैतदेव्ये ॥ १४ ॥
 पंचस्योःसप्तसुकोष्टयोःप्रथमयोरिष्टासदेव्येकता
 प्तस्थाप्येभदलादिषट्सुचतदर्षवर्गपानां पृथक् ॥
 कृत्वोपस्थासदसद्युती निजनिजे तन्निघ्न इष्टाशुभे
 वर्गद्वितस्थरवगोजसोः सदसतोर्घातात्पदत्रेस्फुटे ॥ १५ ॥

अन्यथः- स्वोच्चे मूल त्रिकोणे त्वादिगते ग्रहे रूपं पादेन रूपार्द्धमित्या
 दिगेहे गृहस्थाने ईशान्त्वामिन इष्टस्यात् ॥ तद्यथा ॥ ग्रहो यस्मिन्
 गृहे वर्तते तत्त्वामी यदि स्वयंतदा रूपार्द्धं बलं चघघिमित्र गृहेतदात्रयो
 षांशाः मित्रगृहे चतुर्षांशः सप्तगृहेऽष्टमांशः शत्रुगृहे भ्रूपांशः अधिराशु
 गृहे दंतांशः नीचरयं शून्य एतदूनं रूपार्द्धं गेहे गृहस्थानस्थयोरिष्टक
 प्योरर्द्धे होरादिषट्सुस्थाप्ये ॥ एतदुक्तम् ॥ सप्तमस्थानस्वितानां
 शुभानामैक्यं शुभम् अशुभानामैक्यमशुभं स्यात् ॥ १४ ॥

पंचयोरिति ॥ इष्टासदेव्ये चतुर्भक्ते पंचस्योः स्थाप्ये एतदुक्तं भव-
 ति ॥ प्रागानीतमिष्टैक्यं चतुर्भक्तं शुभपंचस्योः स्थाप्यं कष्टैक्यं चतुर्षांश
 महुजं पंचो स्थाप्यं प्रथमयोर्ग्रहकोष्टयोरित्यर्थः भदलादिषट्सुहोरा-
 दिषट्सुतदर्षे गृहस्थापितफलस्थार्द्धे स्थाप्यवर्गपानां गृहादि सप्तपर्वशा
 नां पृथक् प्रत्येकं निजनिजे स्वस्वे सदसद्युती शुभाशुभयोरैक्ये उत्पद्ये-
 त्त्वेनेनरत्योश्चेत्समित्यादिना स्थापितयोरैव शुभाशुभयोरैक्ये कार्येन
 चानरं स्थापितयोरिति कृत्वा तन्निघ्न इष्टाशुभेताभ्यां निघ्नैकार्ये इष्ट शुभे
 पंचयोः सप्तसुकोष्टयोः स्थापितफले अनपारीत्या आनीतेये इष्टाशु-
 भेते वर्गद्वितस्थरवगोजसोः सदसतोर्घातात् पदत्रे स्फुटे स्थातान् ॥
 वर्गद्वयं स्वामी तस्थरवगो वर्गस्थग्रहः ओजसोः यलयोः तयोर्घा-
 त पदेन पूर्वफले गुणिते सति स्फुटेस्तः ॥ १५ ॥

अर्थभाषाः

गृहेश परमोच्चने होयतो रूपबल १ त्रिकोणमे होयतो तीन
 चतुर्षांश ०।१५।० स्वगृहमे होयतो अर्द्ध ०।२०।० अपिमित्रके

गृहमें होयतो तीन अष्टमांश ०।२२।३० मित्रगृहमें चतुर्थांश ०।१५।०
 समके गृहमें अष्टमांश ०।७।३० शत्रु गृहमें षोडशांश ०।३।५५ अधि
 शत्रु गृहमें दत्तांश ०।१।५२।३० परमनीचमें होयतो शून्य ० यह गृह
 स्थानमें शुभजानना यह शुभ एक १ में हीन करनेसे अशुभ होता है
 गृहस्थानमें यह शुभाशुभ होरादि षड्वर्ग स्वामी परसे गृहस्थान
 के फल प्रमाणसे जो फल आवै उसका अर्थ जानना अनंतर सप्तव-
 र्गोत्पन्न शुभका और अशुभका ऐक्यता करना.

टिप्पण.

ग्रह परम उच्चमें किंवा परमनीचे मे वा मूल त्रिकोणमें प्राप्त होय-
 तो मित्रादिज फल नलेना ते उच्च किंवा नीच वा मूल त्रिकोण इसीका फ-
 ल लेना.

**उच्चमूलत्रिकोणवास्वगृहइंसेसैर्तान-
 कावादीकासंभवहोताहैउस्कानिर्णय.**

सिंह २० अंशतक सूर्यका त्रिकोण अनंतर स्वगृह- वृषभ ३ अं-
 शतक चन्द्रका उच्च अनंतर मूल त्रिकोण- मेष १२ अंशतक भौमका
 त्रिकोण अनंतर स्वगृह- कन्या अंशतक बुधका उच्च आगे ५ अंश-
 तक मूल त्रिकोण आगे स्वगृह- धनु १० अंशतक गुरुका त्रिकोण अ-
 नंतर स्वगृह- तुला १५ अंशतक शुक्रका त्रिकोण अनंतर स्वगृह-
 कुंभ २० अंशतक शनिका त्रिकोण अनंतर स्वगृह जानना- जबग्र-
 ह उच्च किंवा नीच राशीका उक्तांशमें रहता है तब ग्रहका परमोच्च
 किंवा परमनीच जानना.

अर्थ ज्ञापा.

दो सात सात कोष्ठककी शुभाशुभ पंक्ति लिखना अनंतर शुभ
 पंक्तिका प्रथम कहिये गृहकोष्ठकमें अहोके समवर्गोत्पन्न शुभैक्य
 का चतुर्थांश लिखना और होरादि ६ कोष्ठकमें यह चतुर्थांशका अ-
 र्ध लिखना और अशुभ पंक्तिके प्रथम कोष्ठकमें ग्रहका सप्तवर्गो-
 त्पन्न अशुभैक्यका चतुर्थांश लिखना और होरादि षट् ६ कोष्ठकमें
 यह चतुर्थांश अर्ध लिखना अनंतर गृह होरादि समवर्ग स्वामीका
 जुदाजुदा किया जो सप्तवर्गोत्पन्न शुभैक्य उस्को क्रमसे यह शुभ पंक्ति
 में लिखाजो गृह होरादि सप्तवर्ग फलसे अलग अलग गुणदेना तो मध्य
 मशुभ होता है और गृह होरादि सप्तवर्ग स्वामीका पृथक् पृथक् किया

जो सप्तवर्गोत्पन्न अशुभैव्य उरको क्रमसे यह अशुभ पंक्तिमें लिखा जो ग्रह हो
रादि सप्तवर्ग फलसे पृथक् पृथक् गुण देना तो मध्यम अशुभ होता है.

अनंतर जिस ग्रहका स्पष्ट शुभ साधन करना होय तो उस ग्रहके इ-
ष्ट बलको उसी ग्रहके ग्रह होरादि सप्तवर्ग स्वामीके इष्ट बलसे पृथक्पृ-
थक् गुणके उनके वर्ग मूलसे स्वस्व वर्गस्थ मध्यम अशुभको गुण देना तो
ग्रहोंका स्पष्ट शुभ होता है. और जिस ग्रहका स्पष्ट अशुभ साधन करना
होय तो वह ग्रहके कष्ट बलको उसी ग्रहके ग्रह होरादि सप्तवर्ग स्वामीके क-
ष्ट बलसे पृथक् पृथक् गुणके उनके वर्गमूलसे स्वस्व वर्गस्थ मध्यम अ-
शुभको गुण देना तो ग्रहोंका स्पष्ट अशुभ होता है.

टिप्पणः- विंशतिरंशाःसिंहेत्रिकोणपरेस्वभवनमकेस्य ॥ उच्चभागत्रितयं द-
पइन्द्रोऽस्याधिकोणमपरंशाः ॥ द्वादशांशागापेत्रिकोणमपरस्वभंतु पौषरय उच्च-
मथोक व्यायां दुषस्य तु गांशकैः सदा चिंत्यम्, परतास्त्रिकोणजातपेनातिरंशेस्वरा-
शिजपरतः, दशांशतिर्गैर्जविस्यत्रिकोणं शगुपितत्परस्वग्रहम् शुक्रस्य च त्रिविंशोशा-
स्त्रिकोणमपरंस्वभंतुलायांतु, कुंभेत्रिकोणस्वग्रहे रविजस्य रवेर्ध्यासिंहे. ॥

उदाहरणम्:- सूर्य्य मंगलके ग्रहमें है इसवास्ते ग्रह स्वामी भीम-सौ स-
मके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य्यके ग्रह स्थानमें ०।७।३० शुभ यह एकमे कम कर
के ०।५।२।३० यह अशुभ होरा स्वामी सूर्य्य यह समके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य्य
के होरा स्थानमें ०।७।३० शुभ यह एकमे कम करके ०।५।२।३० अशुभ इनके
अर्ध होरा स्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५ अशुभ द्रेष्काण स्वामी सूर्य्य
यह समके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य्यके द्रेष्काण स्थानमें ०।७।३० शुभ यह एकमे
कम करके ०।५।२।३० अशुभ इनके अर्ध द्रेष्काण स्थानमें ०।३।४५ शुभ और ०।२६।१५
अशुभ सप्तमांश स्वामी चन्द्र यह शत्रु ग्रहमें है. इसवास्ते सूर्य्यके सप्तमांश स्था-
नमें ०।३।४५ शुभ यह एकमे कम करके ०।५।६।१५ अशुभ इनको अर्ध सप्तमांश-
स्थानमें ०।१।५२। शुभ और ०।२८।७। अशुभ नवमांश स्वामी चन्द्र यह शत्रु
ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य्यके नवमांश स्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमे कम कर
के ०।५।६।१५ अशुभ इनका अर्ध नवमांश स्थानमें ०।१।५२। शुभ और ०।२८
।७। अशुभ द्वादशांश स्वामी बुध शत्रु ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य्यके द्वादशांश
स्थानमें ०।३।४५ शुभ यह एकमे कम करके ०।५।६।१५ अशुभ इनका अर्ध द्वा-
दशांश स्थानमें ०।१।५२। शुभ और ०।२८।७। अशुभ त्रिंशांश स्वामी गुरु ऽधि-
शत्रुके ग्रहमें है इसवास्ते सूर्य्यके त्रिंशांश स्थानमें ०।१।५२। शुभ यह
एकमे कम करके ०।५।८।७। अशुभ इनका अर्ध त्रिंशांश स्थानमें ०।१।५६।

शुभ और ०२१।३॥ अशुभ सूर्यके सप्तवर्ग शुभका ऐक्य ०२१।३३॥
 और सूर्यके सप्तवर्ग अशुभका ऐक्य ३।३८।२६ यह प्रमाणसे चन्द्रादि
 क प्रहोका शुभाशुभ करके उनका ऐक्य करना.

वर्गेश सहित सप्तवर्ग शुभचक्रम्.

ग्रह	सूर्यः	चंद्रः	मंग	बुधः	बृह	शुक्रः	शनिः	ग्रहः
ग्रह	मं ७ स ३०	श २३ मि ३०	सू ७ स ३०	बु १ श ५२॥	बृ ३ श ४५	शु २३ मि ३०	श ३ स ४५	ग्रह
होरा	बृ ३ स ४५	चं १ श ५२॥	सू ३ स ४५	सू ० स ४५	मं १ श ५२॥	चं १ श ५२॥	बृ ३ स ४५	होरा
द्रेष्का	सू ३ स ४५	श १ मि १५	बृ ० श ५६॥	मं ० स ४५	बृ १ श ५२॥	शु ३ स ४५	शु ३ स ४५	द्रेष्का
सप्त	चं १ मं ५२॥	सू ३ स ४५	शु ३ स ४५	श १ मि १५	मं ३ स ४५	बृ ३ स ४५	बृ ३ स ४५	सप्त
नवमां	मं १ मं ५२॥	श १ मि १५	चं १ श ५२॥	श १ मि १५	बृ ० श ५६	बृ १ श ५२॥	श १ मि १५	नव
द्वाद	बृ १ श ५२॥	बृ ० श ५६॥	बृ ० श ५६॥	मं ३ स ४५	बृ ० श ५६॥	बृ ० श ५६॥	मं ३ स ४५	द्वाद
त्रिंशां	बृ ० श ५६॥	बृ १ श ५२॥	बृ ० श ५६॥	श १ मि १५	बृ १ श ५२॥	बृ ३ स ४५	मं ३ स ४५	त्रिंशां
ऐक्य	२१ ३३॥	५३ २६॥	१९ ६१॥	६६ ५२॥	१५ ०	३८ २६॥	३१ ५२॥	ऐक्य

सप्तवर्ग अशुभचक्रमिदम्.

ग्रहः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्रह
ग्रह	५० ३०	३० ३०	५३ ३०	७५ ७॥	५६ १५	३० ३०	५६ १५	ग्रह
होरा	२६ १५	२५ ७॥	२६ १५	२५ १५	७॥	७॥	२५ १५	होरा
द्रेष्का	२६ १५	१५ ५५	३० ३॥	२५ १५	७॥	१५ १५	२५ १५	द्रेष्का
सप्त	७॥	१५ १५	२६ १५	१५ ५५	१५ १५	१५ १५	७॥	सप्त
नव	२५ ७॥	१५ ४५	२५ ७॥	२५ ४५	३॥	७॥	१५ ४५	नव
द्वाद	२५ ७॥	२५ ३॥	२५ ३॥	२५ १५	२५ ३॥	२५ ३॥	१५ १५	द्वाद
त्रिंशां	२५ ३॥	२५ ७॥	२५ ३॥	१५ ४५	७॥	१५ १५	१५ १५	त्रिंशां
ऐक्य	३६ २६॥	३३ ३३॥	२८ २८॥	१३ ७॥	४५ ०	३३ ३३॥	७॥	ऐक्य

उदाहरण- सूर्यका शुभैक्य ०१२१३३॥ इस्को ४ से भागदेके ०५१२०
यह सूर्यके शुभपंक्तिके ग्रहकोष्ठकमें लिखना और इस्का अर्ध ०१२१३३
यह शुभपंक्तिके होरादि ६कोष्ठकमें लिखना.

सूर्यका अशुभैक्य ३३८१२६ इस्को ४ से भागदेके ०५४१३५ यह सूर्यके अशुभपंक्तिके ग्रहकोष्ठकमें लिखना. और इस्का अर्ध ०१२७११८ यह अशुभपंक्तिके होरादि ६कोष्ठकमें लिखना. इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका भी जानना.

शुभपंक्तिचक्रम्.

अशुभपंक्तिचक्रम्.

ग.	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	श.	मं.	सू.	चं.	मं.	वृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	१३	४	११	३	९	७	२	५४	४६	५५	४८	५६	५२
२३	२१	५५	४३	६५	३६	५८	३६	३८	४	१७	१५	२४	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	१०	२३	२७	२४	२८	२५	२६
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५९	१८	१९	३२	८	७	१२	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	१०	२३	२७	२४	२८	२५	२६
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५९	१८	१९	३२	८	७	१२	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	१०	२३	२७	२४	२८	२५	२६
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५९	१८	१९	३२	८	७	१२	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	१०	२३	२७	२४	२८	२५	२६
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५९	१८	१९	३२	८	७	१२	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	६	२	५	१	४	३	१०	२३	२७	२४	२८	२५	२६
४१	४०	२७	५१	५२	४८	५९	१८	१९	३२	८	७	१२	१

उदाहरणम्.

सूर्यमेककाहे इसवास्ते ग्रहेश मंगल है. इस्का शुभैक्य ०१२१४१
इस्को सूर्यके शुभपंक्तिमेका ग्रहफल ०५१२३ इस्को गुणके ०११४६ यह सूर्यका ग्रहमध्यम शुभ-ग्रहेश मंगल इस्का अशुभैक्य ३४०११८॥ इस्को सूर्यके अशुभपंक्तिमेका ग्रहफल ०५४१३५ इस्को गुणके ३२०१२८ यह सूर्यके ग्रह मध्यम अशुभ यह गतिसे होरादिकोंका मध्यम शुभ। शुभ करना और चन्द्रादिकोंका भी ग्रहादि मध्यम शुभाशुभ करना.

वर्गेशुहेशइष्टबलगुणनपदचक्र. वर्गेशुहेशकष्टबलगुणनपदचक्र.

प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
गु.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	गु.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
लौ.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	लौ.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
श.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	श.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
क्रिं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	क्रिं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०

स्पष्टशुभचक्र.

स्पष्टअशुभचक्रम्.

प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.	प्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
गु.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	गु.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
लौ.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	लौ.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	प्र.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	स.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	न.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
श.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	श.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
क्रिं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	क्रिं.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
से.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	से.	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०

श्लोकः

जगदीशेन रचिते केशुवी ग्रंथ टिप्पणे ॥
इष्टकष्टाधिकारोयं पूर्णो भाषाप्रकाशकः ॥४॥

अथआयुर्दायाध्यायः

ग्रहोंकासर्वशुभाशुभफलदशामेंहीहोताहैं। औरदशविभागआयुर्दाय
 वज्ञानविनामालूमहोतानहीं।इस्केवास्तेआयुर्दायाध्यायआरंभकरतेहैं।अब
 आयुर्दायदोप्रकारकाहै।ग्रहयोगजऔरगणितागतउस्मेंग्रहयोगजनियता
 युर्दायपरमायुर्दायऔरअमितायुर्दायऐसानीनप्रकारकाहै।गणितागत
 तअंशोब्दवपिण्डजनैसर्गिकऔरजीवशरीरदितऐसाचारप्रकारकाहै।
 उस्मेंप्रथमयोगजायुर्दायनेसेअमितायुर्दायकाउदाहरणकहतेहैं।

श्लोकः कर्कहीज्ययुतोदयेबुधसितौकेन्द्रेऽप्यरीशतैररायु-
 विद्धयमितंहियोगजमिवान्यत्रोच्यतेयोन्मितम्

अन्वयः— चन्द्रेज्ययुक्ते कर्किलने यदि बुध शुक्र केन्द्र एकत्र वा पृथक्
 स्याताम् इतरैः सूर्यशनिमन्दैः अप्यरीशस्यानेषु तृतीय पडैका दशस्थान
 विहास्मिन् योगेऽमितमायुर्विद्धिजानोहि अन्यत्र येवे योगजायुर्विदि
 ॥ अथास्मिन् ग्रंथे गणितागतोन्मितमायुः कथ्यते ।

अर्थभाषाः— कर्क लग्नमें जन्म होय उस्में चन्द्र गुरु युक्त होय बुधशु
 क्रकेन्द्रमें होय और इतर ग्रह (रवि मंगल शनि) ३६।११ यद् स्थान
 में होय इसप्रमाण सात ग्रहोंका योग होयतो अमित आयुष्य जानना
 योगजायुर्दायके दूसरेमें जेद और जातक शास्त्रमें कहे है यह जात-
 क पद्धतीमें गणितायुर्दाय मात्र कहा है।

अंशायुःसाधनार्थचेष्टागुणकउच्चगुणकस्फुटगुणकसाधन।

श्लोकः त्र्यम्बात्रैकिरणाः सरूपकिरणांश्चिन्नेत्रयोर्द्धावि-
 भूगोर्द्धचदिकतुगसंभवगुणोतद्वातमूलस्फुटः ॥

अन्वयः— यदि पूर्वोक्ताः चेष्टारश्मयः उच्चरश्मयस्तस्यास्तदासीकचतु
 षांशः कार्यः चेत्रयोर्द्धास्तदाविभूः एक रहितार्द्ध कार्यमृतदाचेष्टानुद्ग-सं-
 शको गुणको भवतः तद्वातस्य मूलं स्फुटो गुणः स्यात्

अर्थभाषाः— पूर्वोक्त रश्मिनीनसे कम होयतो उस्में एक युक्त करके
 उस्का चतुर्षांश लेनातो गुणक होताहै। यदि तीनसे ज्यादा होयतो
 उस्मेंसे एककम करके उस्का अर्द्ध लेनातो गुणक होतहै इसी रीति
 ॥ १० ॥ चेष्टा गुणक और उच्च रश्मिने उच्च गुणक होता

अनंतर चेष्टागुणक वा उच्च गुणक इनके गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो स्फुट गुणक होता है.

उदाहरणम्.

रविका चेष्टारश्मि ५।११।४८ यह तीनसे अधिक है इसवास्ते इस्मेंसे एक कम करके ४।११।४८ इस्का अर्ध २।५।५४ यह रविका चेष्टागुणक रविका उच्च रश्मि ६।५३।३६ यह तीनसे अधिक है इसवास्ते इस्मेंसे एक कम करके ५।५३।३६ इस्का अर्ध २।५६।४८ यह रविका उच्च गुणक भया + भौमकी उच्च रश्मि १।२६।६ यह तीनसे कम है इसवास्ते इस्में एक युक्त करके २।२६।६ इस्का चतुर्थांश ०।३६।३१ यह भौमका उच्च गुणक भया इसी प्रकार अन्य ग्रहोंका चेष्टा गुणक और उच्च गुणक बनावना रविका चेष्टा गुणक २।५।५४ इस्को रविका उच्च गुणक २।५६।४८ इस्से गुणक ६।१०।५९ इस्का वर्गमूल २।२९।१२ यह रविका स्फुट गुणक भया.

इसीप्रमाण चंद्रादिकोंका स्फुट गुणक करना.

चेष्टागुणकचक्रम्.

उच्चगुणकचक्रम्.

स्व.	चं.	मं.	बु.	ब.	शु.	श.	म.	स्व.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.
२	१७	२	२	२	१	१.	०	२	१	३६	०	१	२	०
५	३७	२०	१३	२९	५	३	०	५६	२	३६	३३	५६	२९	५६
५४	४८	२४	०	३	४८	४८		४८	२१	२१	१०	४५	५४	४१

स्फुटगुणक चक्रम्.

स्व.	चं.	मं.	बु.	ब.	शु.	श.	स्फु.
२	१	१	१	१	१	१	१
२१	१५	१६	२४	१७	३२	०	१
१२	५	३६	२४	५७	१२	८	१

आश्रय गुणक साधन

श्लोक- } यः स्वाधीष्टसुहृत्समार्याधिरि पौर्वगधतिश्वेषिला
 विश्वांकेपुगुणागृहे द्विगुणितायोगः क्रमान्तं हरेत् ॥
 तद्भे पडसुगोशुम छुतिजिनैः पड भैश्ववगोन्तमः
 स्वांशत्र्यशगतेसदारसंगुणैः स्वादाश्रयारव्योगुणः १७
 १- यो ग्रहः स्वाधि मित्र मित्र समरिष्वधिरि पूणांवेगं गृहादिसः
 सवर्गस्यान् तस्य क्रमेण १८।१५।१३।१५।३ एते अंका ग्राह्या ॥ एतः

क्त भवति ॥ यद्यधिमित्रग्रहे होरायां द्रेष्काणे वा सप्तमांशेन नव
मांशे द्वादशांशे वा त्रिंशांशे स्थितः तदा १८ अंको ग्राह्यः परंचदिग्र-
हे तदा तद्द्विगुणं कृत्वा स्याप्यः एवं होरादिषु ह्येषु यथागतं स्याप्यं
तेषां सप्तसु स्थानेषु स्थापितानामं कानां योगः कार्यः तं योगं तद्दे-
स्वाधिमित्रादिभ्यो राशौ ग्रहे सति क्रमात् ६।८।१२।१८।२४ एते
रंके पङ्क्तैर्भजेत् वर्गेत्तम स्वांशव्यंशगते ग्रहे सति सदापटु त्रिंशद्भि-
र्भजेत् एवं भक्ते चल्यतेसः आश्रय संज्ञको गुणस्यात् ।

अर्थभाषा.

ग्रह स्वकीय वर्गमें होयतो १८ अधि मित्रके वर्गमें होयतो १५
मित्रके वर्गमें होयतो १३ समके वर्गमें होयतो ९ शत्रुके वर्गमें हो-
यतो ३ यह प्रमाण होरादि वर्गमें अंकलेना परंतु ग्रह स्थानमें यह
रीतिसे जो आवे उसको दूना करके लेना अनंतर ग्रहादि सप्तवर्गके
अंकका योग करके उसको ग्रह स्वग्रहमें होयतो ३६ से अधि मित्र-
के ग्रहमें होयतो ४८ से मित्रके ग्रहमें होयतो ५४ समके ग्रहमें हो-
यतो ७२ से शत्रुके ग्रहमें होयतो १०८ से अधि शत्रुके ग्रहमें हो-
यतो १४४ से भाग देना परंतु ग्रह वर्गेत्तम कहिये राशीके स्व नव-
मांशमें होयतो वा स्व नवमांशमें किंवा स्व द्रेष्काणमें होयतो पूर्वा-
क्त अंक नलेना सर्वकाल ३६से भाग देना जो भागाकार आवे सो
आश्रय गुणक होता है.

उदाहरणम्.

रवि समके ग्रहमें है इसवास्ते ९ अंक यह ग्रहस्थानमें द्विगु-
णित १८ रवि स्वहोरामें है इसवास्ते होरास्थानमें १८ रवि स्व द्रे-
ष्काणमें है इसवास्ते द्रेष्काण स्थानमें १८ रवि अधि मित्रके
सप्तमांशमें है इसवास्ते सप्तमांश स्थानमें १५ सूर्य अधि मि-
त्रके नवमांशमें है इसवास्ते नवमांश स्थानमें १५ सूर्य मित्रके
द्वादशांशकमें है इसवास्ते द्वादशांशक स्थानमें १३ सूर्य समके
त्रिंशांशमें है इसवास्ते त्रिंशांश स्थानमें ९ यह सप्तवर्गिककायो-
ग १०६ इसको सूर्य समके ग्रहमें है इसवास्ते ७२ से भाग देके
१।२।१९ यह सूर्यका आश्रय गुणक यही रीतिसे चंद्रादिकोंका
आश्रय गुणक करना.

आश्रयगुणकसाधनचक्रम्.

ग्रह	स्व.	चं	मं	बु.	रु.	शु.	श.	ग्रह
गृह	१८	१०	१८	१०	६	१८	३०	गृह
हौरा	१८	१८	९	१५	९	९	९	हौरा
द्रेष्काण	१८	५	१५	५	३	१८	९	द्रेष्काण
सप्तमांश	१५	१५	५	१३	१५	९	१५	सप्तमांश
नवमांश	१५	५	९	१३	१८	१५	१८	नवमांश
द्वादशांश	१३	५	१५	५	१८	३	९	द्वादशांश
त्रिंशांश	९	१५	१५	१३	३	१८	९	त्रिंशांश
योग	१०६	७३	८६	७४	७२	९०	९९	योग
हर	३६	१०८	७२	१०८	३६	३६	३६	हर
आश्रय गुणक	२ ५६ ६०	० ४० ३३	१ ११ ४०	० ४१ १७	२ ० ०	२ ३० ०	२ ४५ ०	आश्रयगुणक

आश्रयगुणकविशेषसंस्कारकर्मयोगगुणक- औरजायुजगिसाधन.

श्लोकः- } चेद्गोत्तमपूर्वगोध्यरिसुहृद्देतद्गृहांकास्त्रिपद्
 लब्धो नोयुगरीष्टमेधिनवकास्यास्वसमेकेवलः ॥
 कार्यस्त्वाश्रयकः सतत्स्फुटहृते मूलसयोग्योगुणः
 खेतानांचतनोर्लयाः खयुगत्हृष्टेपाइहाखुलवाः ॥१८

अन्वयः

चेद्यदिग्रहो वर्गोत्तम पूर्वगः वर्गोत्तमः नवमांशो वा स्वनवमांशे
 स्वद्रेष्काणे स्थितः सन् आधि शत्रु गृहे वा अधिमित्र गृहे तदा त-
 द्गृहांकाद्गृहवर्गे स्यापितांकात् त्रिपद् लब्ध्या वाप्त फलेन स आश्रय
 क ऊनोयुक्तार्यः यदि वर्गोत्तमादि वर्तमानो ग्रहः शत्रु गृहे वा मित्र
 गृहे भावेन तदा तद्गृहांकात् अधिनवकास्या फलेन स आश्रयको
 गुणो हीन युक्तार्यः मित्रादि मित्र गृहे युक्तः अधिशत्रु शत्रु गृहे हीन-
 इत्यर्थः- यतः आश्रयगुणकस्फुटगुणकयोर्घातांमूलसयोग्योगुण-
 कमेतानां ग्रहाणांतनोर्लयाः खयुगत्हृष्टेपाइहाखुलवाः ॥१८॥

अर्थभाषा.

जो ग्रह वर्गोत्तममें स्वनवमांशमें वा स्व द्रेष्काणमें होयके अधिश-
त्रुग्रहमें वा अधिमित्र ग्रहमें होयतो उसके गृहांकको ६३ से भाग देके
जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत आश्रयगुणकमें कम करना वा
युक्त करना और ग्रह शत्रुग्रहमें वा मित्र ग्रहमें होयतो उसके गृहां-
कको ९४ से भाग देके जो भागाकार आवे सो क्रमसे पूर्वानीत
आश्रय गुणकमें कम करना वा युक्त करनातो आश्रय गुणक होता
है परंतु ग्रह वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें होके स्वग्रहमें वा समे ग्रह
में होयतो संस्कार नहीं अनंतर आश्रय गुणक वा स्फुट गुणक इ-
स्के गुणाकारका वर्गमूल निकालना तो कर्म योग्य गुणक होता है
ग्रह वा लग्न इसके अंश करके ४० से भाग देना जो शेष रहे सो आ-
शुभागि होते हैं ॥१८॥

उदाहरणम्.

वर्गोत्तमादि ३ स्थानमें गुरुशनि स्वनवमांशमें है इसवास्ते गुरुशनिका
आश्रय गुणक संस्कार योग्य है सोऐसा गुरु अधिशत्रुके ग्रहने है इस
वास्ते गुरुकी गृहांक ६ इस्को ६३ से भागक ०।५।४२ यह गुरुका आश्र-
य गुणक २।०।० इस्में कम करके १।५।४।१८ यह गुरुका आश्रय गुण-
क भया और शनि अधिमित्रके ग्रहमें है इसवास्ते शनिका गृहांक
३० इस्को ६३ से भागके ०।२८।३४ यह शनिका आश्रय गुणक २।४५
।० इस्में युक्त करके ३।१३।३४ यह शनिका आश्रय गुणक भया और वर्गोत्तमा-
दि ३ स्थानमें सूर्यशुक्र स्व द्रेष्काणमें है तथापि समके ग्रहमें है इसवास्ते
इस्को आश्रय गुणकको संस्कार नहीं।

आश्रयगुणकचक्र.

सु.	बु.	मं.	लु.	शु.	श.	ग्र.
३०	४०	११	४१	५५	३०	३
४०	३३	६०	१७	१८	३४	०

कर्मयोग्यगुणकी उदाहरणम्.

सूर्यका आश्रय गुणक २।५६।४ वा स्फुट गुणक २।२९।१२
इस्का गुणाकार ७।५२।१२ इस्का वर्गमूल २।६९।१२ यह सूर्य-
का कर्म योग्य गुणक भया यही रीतिमें चन्द्रादिकोंका क-
र्म योग्य गुणक करना.

स्मै जोग्रह बलिष्ठ होय उस्का मात्र गुण करना अनंतर यह गुणकसे
 स्वकीय आयुर्भाग इस्को गुणना कहिये रविके गुणकसे रविके आयु-
 र्भागगुणना यह प्रमाण इहां गुण करके चक्रार्द्ध हानि कथित किया है
उदाहरणम्- इहां रवि भौम गुरु शनि इन्होंका चक्रार्द्ध हानि संभव
 है- इसवास्ते लग्न ६।१।४२।२६ यह इस्में सूर्य्य ०।१३।१०।६२ कम क
 रके ५।२६।३१।४४ इस्की पल ६३५५०४ इस्में ३० अंशकी १०८०००
 इस्में भाग दिया तो ०।१०।११ यह एकमें कम करके ०।४९।४९ यह सूर्य्य
 का गुणक इस्से सूर्य्यका आयुर्भाग १३।१०।६२ यह गुणके १०।
 ५६।३० यह सूर्य्यका हानि संस्कृत आयुर्भाग भया- इसी प्रमाणसे
 भौमका गुणक ०।२९।१९ गुरूका ०।३२।२६ शनिका ०।४४।३२ इन
 गुणकोंसे इनोंका आयुर्भाग गुणातो भौमका ५।२६।३४ गुरूका २०।
 १।५ शनिका २४।४५।४४ यह हानि संस्कृत इनोंका आयुर्भाग भया
 इसी प्रमाण जिस्का संभव होय उस्का आयुर्भाग करना इहां जो ३०
 अंशकी पल १०८००० के भाग दिया है यह पल सिद्ध है-

वर्षादि अंशाद्युर्दयानयनमाह.

श्लोक. } द्वायांशोत्पकलाः स्वयोग्यगुणकः प्राः रयाभनेत्रोद्धृता
 अंशाद्युर्दयसमादितुतनीर्दयाशकारुष्याहताः ॥
 दिग्भक्ताहिसमादिचेतुबलवल्लभंतदालग्नभै-
 स्तुल्याब्देः सहितं हिनिघ्नशरहृद्भागादितो मासयुक् २०

अन्वयः- चक्रार्द्ध हानिकृतानां द्वायांशानां कलाः काव्याः स्वयोग्यगुण
 के गुण्यादिशत्या भक्ताः फलं वर्षाद्यमंशाद्युर्भवति ॥ एतदुक्तं भवति
 ॥ द्वायांशकलाशतद्वयेन भक्ते फलं वर्षे शेषमंशाद्यं द्वादशभिः संगुण्य
 तैर्नैव हरेण भक्ते फलं मासः एवं त्रिंशता गुणिते भक्ते दिनानि पृथ्या
 गुणिते भक्ते घटयः पुनथपृथ्या गुणिते हरेण भक्ते फलं पलानि ॥
 लग्नस्य द्वायांशास्त्रिंशति ३ गुण्या उक्त रीत्या द्वादशभिः भक्ते वर्षादिलमा
 युर्भवेत् यदि बलवल्लभं पडधिकं बलंतदालग्नराशितुल्ये वर्षे युक्तं का-
 र्य्यं अपितु लग्नस्य भागाद्यं हि गुणतलं च भक्ते सति नासाद्यं भवति तद्युक्तं
 नदालग्नराशुः स्पष्टं स्यात् अधिकबलं ज्ञान्तु अत्रेहीन बल इत्यादि ना-
अर्थ भाषाः- पूर्वानीत केवल और हानि संस्कृत आयुर्भागकी फल
 करके उस्को स्वकर्म योग्य गुणकसे गुणके जोगुणाकार आवे उस्को-

२०० से भागके जो भागाकारव्यावैसो ग्रहोकी वर्षादि अंशायु होताहै
लग्नके आयुभागिको ३ से गुणके गुणाकारको १० से भागदेके जो भागा
कार व्यावैसो लग्नका वर्षादि अंशायु होताहै. और जो लग्नवलवक
हिये ६ रूप अपेक्षा अधिक होयतो लग्नराशितुल्यवर्ष पूर्वानीत
लग्नायुमें युक्तकरके उसमें लग्नके भागादिकोंको २ से गुणके ५ से
भागके मासादि फल युक्त करना. तो लग्नायु होता है.

टीप अंशायु फल निकालनेके बखत २०० से भागदेके प्रथम फल
वर्षावै बाकी रहै उसको १२ से गुणके २०० से भागके फल मास
आवताहै बाकी रहै उसको ३० से गुणके २०० से भागके फलदि
न आवताहै बाकी रहै उसको ६० से गुणके २०० से भागके फल घटी आवती
है बाकी रहै उसको ६० से गुणके २०० से भागके फल पल आवताहै यही
रीतिसे लग्नायुमें भी ऐसे मासादि फल लेना.

उदाहरणम्

आयुभागिकलाचक्रम्.						
सू.	च.	मं.	बु.	क.	शु.	श.
६५६	२१२२	३२४	१८८०	१२०१	४१६	१४८५
३०	३५	३४	५३	५	४	४४

कर्मयोग्यगुणगुणितआयुभागिकलाच.

सू.	च.	मं.	बु.	क.	शु.	श.
१७७६	१११०	३८७	१६४१	२४५८	८४६	२६७१
२३	३१	२४	४	१३	२१	२६

तआयुभागिकला १७७६।२३ इस्को २०० से भागके लब्ध ८ व
र्ष शेष १७६।२३ इस्को १२ से गुणके २१६।३६ इस्को २०० से
भागके लब्ध १० मास शेष ११६।३६ इस्को ३० से गुणके ३४९८ इ-
स्को २०० से भागके लब्ध दिन १७ शेष ९८ इस्को ६० से गुणके ५८८
इस्को २०० से भागके लब्ध २९ घटी शेष ८० इस्को ६० से गुणके
४८०० इस्को २०० से भागके लब्ध २४ पल यह सूर्यका वर्षादि
अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु
करना ॥ लग्नका आयुभाग २९।४२।२६ इस्को ३ से गु-
णके ९८।७।१८ इस्को १० से भागके लब्ध ८ वर्ष शेष ९।७।१८
स्को १२ से गुणके १०९।२७।३६ इस्को १० से भागके लब्ध १०

सूर्यका आयुभागिकला
६५६।३० सूर्यका कर्म योग्य
गुणक २।४२।२१ इस्को
गुणके १७७६।२३ यहीरी-
तिसे चन्द्रादिकोंकी कला-
गुणना.

उदाहरणम्

सूर्यकी कर्मयोग्यगुणि

मास शेष १।२।७।३६, इस्को ३० से गुणके २०३।४८ इस्को १० से भागके लब्ध २८ दिन शेष ३।४८ इस्को ६० से गुणके २२८ इस्को १० से भागके लब्ध २२ घटि शेष ८ इस्को ६० से गुणके ४८० इस्को १० से भागके लब्ध ४८ पल यह लग्नका वर्षादि ८।१०।२०।२२।४८ अंशायाु भया इस्को लग्नवल ७।२४।८।३० यह ६ रूपसे अधिक है, इसवास्ते लग्नराशितुल्यवर्ष ६ युक्त करके १४।१०।२०।२२।४८ इस्को लग्नका भागादि १।४२।२६ इस्को २ से गुणके १९।२६।५२ इस्को ५ से भागके लब्ध ३ मास शेष ४।२५।५२ इस्को ३० से गुणके १३२।२६ इस्को ५ से भागके लब्ध २६ दिन शेष २।२६ इस्को ६० से गुणके १४६ इस्को ५ से भागके लब्ध २९ घटी शेष १ इस्को ६० से गुणके ६० इस्को ५ से भागके लब्ध १२ पल यह मासादि ३।२६।२९।१२ युक्त करके १५।२।२६।५२।०

वर्षादि अंशायाु चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	तु.	रु.	शु.	श.	लग्न	योग.
८	९	१	८	११	६	१३	१५	७२
१०	११	११	२	२	२	४	२	११
१७	१२	७	१३	१	२३	८	२४	१९
२९	५५	१९	५५	१२	२५	३६	५२	४६
२६	४८	१२	१२	०	४८	४८	०	१२

पिण्डनिसर्ग और जीवशर्मायुर्दाय इनके आयु भागः

श्लोक } स्वोच्चो नोद्युचरो गं भात्समधिको ग्राह्यो ल्पको नार्कभं
 तद्भागाद्युचरो रभे चदिगुणांशाना विनावक्रगम् ॥
 दृष्ट्वासाग्रस्तमिते विनाशानिसितो हानिद्वयेत्राधिके ।
 कांर्षीपिण्डनिसर्गजीवगदिताचक्रार्द्धहानिर्भवेत् २१

अन्वयः- स्वकीयेनोच्चो नोद्युचरो गं भात्समधिको ग्राह्यो ल्पको नार्कभं कस्तदास्यांशाः कार्य्यः यदापद्माल्पस्तदात्तं दृष्ट्वा साशिन्यो विशेष्य शेषस्यांशाः कार्य्यः वक्रगविनावक्रगग्रह विनायदिशानुग्रहस्तदात्त- स्यांशा निज अंशेन हीनाः कार्य्यः यद्यस्त इते प्राप्ते ग्रहे तदात्तस्यांशा नामर्धकार्य्यम् शानिशुक्रान्यां विना अत्रहानिद्वये प्राप्ते अधिके काहानि रेवग्राह्यान् हानिद्वयम् अर्द्धहानिरेवग्राह्या अत्रनेसर्गिकशत्रुरेवग्राह्याः पूर्वानेत स्वकीयचक्रार्द्धहानिगुणेनदायांशागुणनीयाइयं पिण्डनि-

सर्गजीवगदिताचक्रार्द्धहानिर्भवेत् ॥

अर्थभाषा:- ग्रहमें उच्चकम करके दोष ६ राशीसे कम होयतो व-
ह १२ राशिमें कम करके उसके भागकरनातो पिण्डनिसर्गजीवायुभागिहो-
तेहै. परंतु जो ग्रह वक्रगतिन होयके शत्रुग्रहमें होयतो पूर्वोक्त भागों-
का तृतीयांश वह भागमें कम करना. और जो शनि शुक्र विना ग्रह अ-
स्तंगत होयतो पूर्वोक्त भागोंका अर्धकरना. और जो ग्रह शत्रुग्रह-
में होयके अस्तंगत भी है तो पूर्वोक्त भागका अर्ध मात्र करना
यह पिण्डनिसर्गजीवायुद्वय भागको पूर्व कथित चक्रार्द्धहानिसंस्का-
रणीकरनातो १०के श्लोकसे ले आये जो गुणक उस्से यह आयुर्भाग गुण-
नाइहां नैसर्गिक शत्रुत्व समझना तात्कालिक शत्रुत्व लेना नहीं.

उदाहरणम्- रवि ०१३१ १०१४२ इस्से रविका उच्च ०१३० ०१०० क-
म करके ०१३१०१४२ यह ६ राशीसे कम है इसवास्ते १२ राशीमें
से कम करके ११२६१४९११० इस्के अंश ३५६१४९११० ग्रहसूर्य्यका
पिंडादि आयुर्भागि भया. इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका करना.

सूर्यादिग्रहाः

उच्चचक्रः

सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.
०	९	६	११	५	१०	२	०	१	१	९	५	३	११	६
१३	५	११	३१	८	२६	१३	०	१०	२	२०	१५	५	२७	२०
१०	२२	६	२०	१२	५६	२१	०	०	०	०	०	०	०	०
४२	३५	१६	५३	३७	४	४५	०	०	०	०	०	०	०	०

उच्चकम करके.

पञ्चाल्प १२ राशीमें कम करके

सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
०	८	६	६	२	१०	७	०	११	८	६	६	०	१०	७
३	२	१३	६	१	३१	२३	०	३६	२	१३	६	२६	२९	२३
१०	२३	६	२०	१२	५६	२१	०	६९	२३	६	२०	४७	५६	२१
४२	३५	१६	५३	३७	४	४५	०	१८	३५	१६	५३	२३	४	४५

पिंडादिआयुर्भागचक्रम्.

चक्रार्द्धहानिसंस्कृतपिंडादिआ-

सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.
१५१	२४२	१९३	१८६	२१६	३२९	२३२	पि.	२९६	२४२	१६	१८६	१५५	२२९	१७३
४९	२२	४	२०	४७	५६	२१	आ.	१५	२१	२०	२०	२०	५६	१२
१८	३५	१६	५३	३३	४	४५	ता.	६०	३५	१२	५३	५	४	२०

इहां कोई ग्रह अस्तादि नहीं है और शत्रुराशी का भी नहीं इस वास्ते संस्कार नहीं भया केवल चक्रार्द्ध हानि का संस्कार है. उस्का उदाहरण कहते हैं-

सूर्य का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०१४९।४९ इस्से सूर्य के आयु रंशः २५६।४९।१० इस्को गुणके २९६।१५।४० यह सूर्य का स्पष्ट आयु र्भाग भया

भौम का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।२९।१९ इस्से भौम के आयु रंशः १९२।४।१६ इस्को गुणके ९४।२०।१२ यह भौम का आयु रंश भया.

गुरु का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।३१।२६ इस्से गुरु के आयु रंश २९६।४७।२३ इस्को गुणको १५५।२९।५ यह गुरु का स्पष्ट आयु र्भाग भया.

शनि का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०।४४।३२ इस्से शनि के आयु रंश २३३।२१।४५ इस्को गुणके १७३।१२।२४ यह शनि का स्पष्ट आयु र्भाग भया. बाकी ग्रहों का पूर्वोक्त ही आयु र्भाग लेना.

लग्न में पाप ग्रह होय तो उस्का विशेष संस्कार कहते हैं.

श्लोक } दयांशाद्युसदां पृथक्तनुलवादि प्राः खपट्शुद्धता
आप्त्यो नास्तनुगे खले च यदि स हृदये धया धी परं ॥
निघ्नो ग्रोदयभावजेन तनुगो ग्नौ च हृदि पृथक् तन् ।
साम्ये पुष्ट फलेन न तितनुपेऽस्मिन्नांशजेऽसौ क्रिया २२

अन्वयः- लग्ने पाप सति चक्रार्द्ध हानि गुणिता ग्रहाणां दयांशाः पृथक् स्या-
प्याः लग्नस्य राशिं विहाय अंशादि तनुगुण्यां पृथक् अधिक शतत्रयेण भाज्याः
आप्त्या लब्ध फलेनांशादिना पृथक् स्याहीनाः कार्याः पापग्रहास्तुर विभो
मशनयः सौम्ये क्षिते तर्धया शुभग्रह दृष्टे लग्नस्य क्रूर खगंत दालब्ध फल
स्वार्ध पातये दायुः पिंडादीत्यर्थः अत्रा परेशां मतम् निघ्नो ग्रोदय भा-
वजेनेतिकेचिदेवं भ्रुवंति लग्नगे क्रूर तदा पृथक् स्याः आयु र्भागः उग्रो
दय भावजेन गुण्याः पूर्व हरेणाप्त्या ऊनाः कार्याः शुभदृष्टेऽर्धया उग्रोद
य भावजंतु उग्रपापग्रहस्य यो भावस्तत्पावरो हारो ह फलेनेत्यर्थः यदि
नपेदित्राः क्रूरस्तदा वलि पृथक् स्याभावजेन गुण्याः तत्साम्ये वल साम्ये
पुष्ट फलेन अपिकावरो हारो ह फलेन फल साम्ये दृषादि गुणनं कार्यः
विति भावः तदसत् एकदेहात्वात् अस्मिन् लग्ने क्रूर लग्नाधीशे लग्नगे-
सति असौ हानिर्न कार्या अंशजे क्रूर लग्नगेऽज्ञान कार्याः ॥

अर्थ भाषा.

जो लग्न में पाप ग्रह होय तो ग्रह का पिंडा दायु र्भाग पृथक्-

रखना उसको लग्नका राइयंक छोड़के भागादिकसे गुणके गुणाकारकी ३६० से भाग देके जो लब्धि आवेसो पृथक् रक्खाजो भागउसस कम करना परंतु जो पापग्रह शुभग्रह करके दृष्ट होयतो लब्धिका अर्धपूर्वोक्त भागमें कम करना तो पिंडायुर्भाग होता है।

दूसरे आचार्यैकामत यह है के पृथक् रक्खाजो आयुर्भागउस्को लग्नस्थ पापग्रहको जो भाव उसका जो फल उस्से गुणदेना और ३६० से भाग देना लब्धि पूर्वस्थापित भागादिमें हीन करनातो पिण्डाद्यायुर्भाग होता है। शुभग्रह देवता होयतो लब्धिका आधा घटाना और लग्नमें दोया तीन पापग्रह होयतो जो बली होय उसीका भावफल लेना पापग्रह लग्नपती होकर लग्नमें होयतो यह क्रिया न करना।

उदाहरणम्.

इहां लग्नमें पापग्रह कोई नहीं, इसवास्ते विशेष संस्कार नहीं भया।

पूर्वोक्त हानिसंस्कृतपिंडाद्यायुर्भागच-

शु.	र.	क.	ग.	घ.	च.	ज.	म.
३६६	२६२	१६६	१५५	३२९	१०३	०	
१६	३२	३०	२९	५६	१२	०	
४०	३५	१२	५३	५	४	२६	०

इदानीं पिण्डनिसर्ग
जीवशर्मायुर्दया
नयनमाह-

मूलः-

गोब्जातत्वतिथिप्रभाकरतिथिस्वर्गनरवाःपैण्डजे
नैसर्गनरवभूहिगोधृतिनरवापञ्चाशदुर्काद्रुणाः ॥
दायांशाःस्वगुणैर्हताहिभगणांशाःसमाद्यायुपी
स्वर्गसाध्वसमादिजेवमिभहृत्वांशैर्घटीष्वन्वितम् २३

अन्वयः-

गोब्जेति अर्कादिति अकेमारण्य पिण्डाद्यायुर्दये गोब्जा इ-
त्पारण्यनरवा इत्यन्तांका गुणकाः नैसर्गनरव भूरित्पादयो गुणकाः
३ दायांशाः स्वगुणगुणा भगणांशै ३६० र्भाज्याः फलानिवर्षाद्या
युर्दयाभवन्ति ॥ गोब्जा इत्यादिभिरंके गुणिते पिंडायुः नरवभूरित्या-
दिना गुणितनिसर्गायुः स्यात् दायांशा २॥ २५ ॥ ५५०पैण्डजे

फलानिवर्षादिजीवशर्मायुः स्यात् पु-
भक्त्योयत्तुब्धं घटपादिकं नयुक्तं ९

अर्थभाषाः- १९।२५।३५।३२।३५।३१।३

शु.

भात ग्रहोंके पिंडायुर्दायके गुणक और २०।१।२।१।२०।२०।५० यह क्रमसे रव्यादि सात ग्रहोंके निसर्गायुर्दायके गुणक जानना ग्रहोंका आयुर्भाग स्व अपना गुणकसे गुणके गुणाकारको ३६०से भागदेना तो वर्षादिपिंड निसर्गायु होता है. पूर्वोक्त आयुर्भागको २१से भागदेना जो वर्षादि फल आवेगा उसमें पूर्वोक्त आयुर्भागको ८से भागदेके जो फल आवे सो घटीमें युक्त करे तो जीवशर्मोक्त आयु होता है इहां मासादिफल अंशायुर्दायमें कथित प्रमाण लेना.

पिण्डायुके गुणक.

निसर्गायुके गुणक.

सू.	चं.	मं.	बु.	शु.	श.	रह.	चं.	मं.	बु.	शु.	श.		
१९	२५	१५	१२	१५	२१	२०	३०	१	३	९	१८	२०	५०

पिंडायुरुदाहरणम्.

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को सूर्यका गुणक १९ इस्से गुणके ५६२८।५७।४० इस्को ३६०से भागके लब्धि १५ वर्ष शेष २२८।५७।४० इस्को १२से गुणके २७५७।३२ इस्को ३६०से भागके लब्धि मास ७ शेष २२७।३२ इस्को ३०से गुणके ६८२६ इस्को ३६०से भागके लब्धि दिन ३८ शेष ३५६ इस्को ६०से गुणके २०७६० इस्को ३६०से भागके लब्धि घटी ५७ शेष २४० इस्को ६०से गुणके १४४०० इस्को ३६०से भागके लब्धि पल ४० इसी प्रकारसे सूर्यके वर्षादिपिंडायुर्भाग १५।७।१८।५७।४० यही प्रमाण चन्द्रादिकोंका करना.

निसर्गायुरुदाहरण.

सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को सूर्यका गुणक २० इस्से गुणके ५९२५।१३।२० इस्को ३६०से भागके लब्धि वर्ष १६ शेष १६५।१३।२० इस्को १२से गुणके १९८२।४० इस्को ३६०से भागके लब्धि मास ५ शेष १८२।४० इस्को ३०से गुणके ५५८० इस्को ३६०से भागके लब्धि दिन १५ शेष ८० इस्को ६०से गुणके ४८०० इस्को ३६०से भागके लब्धि घटी १३ शेष १२० इस्को ६०से गुणके ७२०० इस्को ३६०से भागके लब्धि पल २० यह रीतिसे सूर्यका वर्षादि निसर्गायुर्भाग ३६।५।१५।१३।२० यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

जीवायुरुदाहरणः- सूर्यका आयुर्भाग २९६।१५।४० इस्को २१.

से भागके लब्धि वर्ष १५ शेष २१५।५० इस्को ३२ से गुणके २७।८ इस्को २१ से भागके लब्धि मास १ शेष ६।८ इस्को ३० से गुणके १०५ इस्का २१ से भागके लब्धि दिन ८ शेष १६ इस्को ६० से गुणके ९६० इस्को २१ से भागके लब्धि घटी ४५ शेष १५ इस्को ६० से गुणके १०० इस्को २१ से भागके लब्धि पल ४२ चहरीतिसे सूर्यका वर्षादि जीवायुर्मया १५।१।८।५।५।५२ इस्के घटामे सूर्यके आयुर्भाग २९६।१५।५० इस्को ८ से भागके लब्धि ३७ शेष ०।१५।५० इस्को ६० से गुणके १५।५० इस्को ८ से भागके लब्धि २ यह युक्त करके सूर्यका वर्षादि स्पष्ट जीवायुर्मया १५।१।१।२२।५५ चहरीतिसे चंद्रादिकोंका करना।

पिण्डायुचक्र.

निसर्गायुचक्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.
१५	१६	३	६	६	११	०	२	१६	०	०	७	७	१८	२४
७	१९	११	२	५	२	७	१०	१६	८	६	७	७	१९	०
१८	२०	५	१६	२२	२०	१४	२८	१५	२	८	२७	८	२०	२०
५७	२६	३	१०	१६	३७	८	२२	१३	२३	४०	७	४३	४१	२०
४०	३५	०	३६	१८	२६	०	४८	२०	३५	२६	५७	३०	२०	०

जीवायुचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.
१५	११	६	८	७	१५	८	२
१६	६	५	१०	४	१	२	१०
१७	१५	२७	१४	२५	१६	२१	२८
२२	३१	१३	५५	४६	४२	३७	२२
४४	४२	४०	३६	३६	२२	४	४८

पिण्डादिनीनों आयुर्दायमें लग्नायुर्दाय
बनावनेका क्रमः

श्लोक

स्याद्भिः स्याः खनखो घृता विभूतनो वर्षादिपैण्ड्रिके
लग्नायुर्निर्लेस्तदंशकसमं केश्विन्दतुल्यस्मृतं ॥
यस्ये शोषिषलरतदेवहिपरे स्तीनादृषमन्पैर्यदम्
आयुर्वलयचोडात्तुल्यमाखिलोक्तं ग्राह्यमेवादिमं २४

अन्वयः

पिण्डानोर्लिप्ताराशिं विहाय लग्नस्य कला कार्याः दिवाः

त्वा भाज्याः फलं वर्षादिपिंडनिसर्गजीवशर्मायुर्दायेषु स्यात् सर्वे राचार्य्यैः
 सतदंशकसमंनवमांशसमंजकं लग्नभ्रतुल्यकैश्चिदायुरुक्तं लग्नेशनवमां
 शयोर्मध्ये घोबलीतदेवग्राह्यमित्यन्येतनाढ्यमिति स्यात्सिंहावनरयो-
 दृता इत्यादि नानीतंतत्रतेनाढ्यराशीशोवलीतदाराशितुल्यवर्षं नवमांशे
 बलवतितदानंनवमांशतुल्यवर्षं आढ्यकुत्र अंशायुवत् आनीते लग्नायुर्षि-
 इत्यपरमतम् अथनिखिलोक्तं अंशसमभादिभवेवग्राह्यमिति यावत्
 अर्थभाषा- राशिको छोडके भागादि लग्नकी कला करके उस्को
 २०० से भागदेना तो पिंडनिसर्ग और जीवशर्मायुर्दायमें लग्नायुहोती है
 यह अंशतुल्य अर्थात् लग्न युक्त नवमांश नुन्य आयु सर्वाचार्य संमत है
 कोई आचार्य लग्नके राशितुल्य कहते है लग्नपति अंशपतिमे जो बलि होय
 तत्तुल्य (अर्थात्) लग्नपति बलि होयतो लग्नके राशीतुल्य आयु अंश
 पतिवली होयतो अंशतुल्य आयु यह कोई आचार्यका मत है ॥ आयु-
 र्दायमें कथित रीतिसे जो आयु आवे उस्में अंशपतिवली होयतो अं-
 शतुल्य लग्नपति बली होयतो लग्नतुल्यवर्ष युक्त करना यह परमत है
 ऐसा पृथक् पृथक् सब आचार्योंने कहा है तथापि प्रथम प्रकार जो
 है सोई सबका मत है इसलिये उस्कीको जानना ॥ इति ॥

उदाहरण- राशि रहित भागादि लग्न १।४२।२६ इस्की कला ५८२।
 २६ इस्को २०० से भागके २१०।२८।२२।६८ यह पिंडनिसर्गजीवायु-
 र्दायके विशेष लग्नायु जानना।

यह अंशादिचार आयुर्दायमें से कौन आयुर्दाय
 कबलेना इस्के विषे प्रमाण।
 चतुर्णांशुषान्वयवस्थामाह

श्लोक } अंशायुश्चतनाविने अधिकबले ये पिंडनिसर्गविधो।
 स्याच्चतुल्यबलं ह्योर्ध्वतिदलं तज्जायुष्येन्नय ॥
 आयुषि त्रिवले निर्दलचयुतिवीर्ये च ह्वात्रिजा
 युषुत्पात्त्रिलोयजेवमुदितंचे दीनवीर्यस्त्रयः ॥

अन्वयः- अधिकबलायांत नावंशायु- इने मुख्य अधिकबले पिंडायुः
 विधाधिकबले निसर्गायुः माध्यम् ॥ यदाहो सवलोतदातत्तदायुषोयोग
 रलमिआयुः स्यादिविगोणः सुरल्लस्तु ॥ तत्तदायुस्तनइलेन संगुण्यत
 योगतप्रेबलेन नजेत्तदाभिआयुः स्यादित्यर्थः परिलग्नार्क चन्द्रा

सूर्ययोऽपितुल्यबलास्तदालग्नबलेनदिनादिकमंशायुःसंगुण्यःसूर्यबलेनपिंडायुःसंगुण्यचन्द्रबलेननिसर्गायुःसंगुण्यसर्वेषांयोगंलग्नार्कचन्द्रबलयोगेनभजेफलंमिश्रायुःस्फुटंस्यात् ॥ अथवात्रयाणामायुषांयोगस्यतृतीयांशोमिश्रायुःस्यात् ॥ चेलग्नार्कचन्द्राखयोऽपिहीनबलास्तदाजीवशर्मायुःस्यादिति ॥

अर्थभाषाः- लग्नबली होयतो, अंशायु सूर्यबली होयतो पिंडायु चन्द्रबली होयतो निसर्गायुलेनाजो दो समबल कहिये पद रूपपाधिकबल होयतो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्थ आयु होताहै. लग्न और सूर्य समबल होयतो अंशायु और पिंडायुका योगार्थ करना. लग्न और चन्द्र समबल अंशायु और निसर्गायु इस्का योगार्थ करना. सूर्य और चन्द्र समबल होयतो पिंडायु और निसर्गायु इस्का योगार्थ करना. तो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल होयतो तीनों आयुष्य तीनोंके बलसे गुणके ऐक्य करके उस्को तीनोंके बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवेसो ॥ अथवातीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयांश आयुष्यलेना वह मिश्रायु होताहै. जो लग्न सूर्य और चन्द्र यह तीनोंही हीनबल होयके रूपत्रयात्यबल होयतो जीव शर्मायु आयुलेना.

उदाहरण.

सूर्यका अंशायु ८१०।१७।२९।२४ यह दिनादि करके ३१९७।२९।२४ इस्को लग्नबल ७।२४।८।३० इस्से गुणके २३६६८।५८।३२ इसी प्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना.

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।४० यह दिनादि करके ५६२८।५७।४० इस्को रविवल ७।५१।५३।३० इस्से गुणके ४४२७०।५९।५० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका वसूर्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादिकरके ५९२५।१३।२० इस्को चन्द्रबल ७।२०।४।३० इस्से गुणके ४३।४५९।२।१० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना.

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योगदिनादि १११३९९।०।३२ इस्के पल ४०१०३६४३२ इस्को लग्नबल ७।२४।८।३० रविवल ७।५१।५३।३० चन्द्रबल ७।२०।४।३० इनका योग २२।३।६।६ इस्की विकला ८३६६ इस्के भागके लब्धि दिनादि ४९२८।४७।६६ यह वर्षादिकरके १३।८।८।६७।६६ यह सूर्यका मिश्रायु भयायही रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु साधन करना + अथवा रविका अंशायु ८।१०।१७।२९।२४ पिंडायु-

१५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यहतीनों आयुर्दाफका
 योव ४०।११।२१।४०।२४ इस्का वृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यह रविका
 वर्षादि मिश्रायु भया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

अंशायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१०	११	११	१	११	४	१३	१५	७२	वर्ष मास दिन घटि पल
१७	११	१७	२	२	२	४	२	११	
२२	१२	१२	१३	१२	२३	२४	२४	१२	
२४	१२	१२	१२	१२	२५	२८	०	१२	

पिण्डायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१५	२	६	५	१२	१७	२	१०	वर्ष मास दिन घटि पल
१७	१५	२	१५	५	२	१७	२	१३	
२५	१५	२	१५	५	२	१७	२	२१	
२६	१५	२	१५	५	२	१७	२	२१	

निसर्गायुश्चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१०	१०	७	७	१२	२४	२	७५	वर्ष मास दिन घटि पल
१५	१०	१०	७	७	१२	२४	२	६	
१५	१०	१०	७	७	१२	२४	२	१२	
१५	१०	१०	७	७	१२	२४	२	५४	

अशपिडनिसर्गायु योग चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	२७	४	१९	२५	४१	४७	२१	२२	वर्ष मास दिन घटि पल
१९	२७	२१	२७	२५	२०	१३	२१	२२	
२१	२७	२१	२७	२५	२०	१३	२१	१६	
२४	२७	२६	२७	२५	२२	४०	२६	२७	

योगवृतीयांश मिश्रायु.

सू.	चं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	१	२	५	५	१३	१५	७	७६	वर्ष मास दिन घटि पल
१३	१	२	५	५	१३	१५	७	४	
१३	१	२	५	५	१३	१५	७	२७	
२०	१	२	५	५	१३	१५	७	२६	

स्वयोऽपितुल्यबलास्तदालम्बलेनदिनादिकमंशायुःसंगुण्यःसूर्यबलेनपिंडायुःसंगुण्यचन्द्रबलेननिसर्गायुःसंगुण्यसर्वेषांयोगंलग्नार्कचन्द्रबलयोगेनभजेफलंमिश्रायुःस्फुटंस्यात् ॥ अथवात्रयाणामायुषांयोगस्यतृतीयांशोमिश्रायुःस्यात् ॥ चेलग्नार्कचन्द्रास्वयोऽपिहीनबलास्तदाजीवशर्मायुःस्यादिति ॥

अर्थभाषा:- लग्नबली होयतो अंशायु सूर्यबली होयतो पिंडायु चन्द्रबली होयतो निसर्गायुलेना जो दो समबल कहिये पदरूपाधिकबल होयतो उसीसे उत्पन्न आयुष्यका योगार्थ आयु होताहै. लग्न और सूर्य समबल होयतो अंशायु और पिंडायुका योगार्थकरना. लग्न और चन्द्र समबल अंशायु और निसर्गायु इस्का योगार्थकरना. सूर्य और चन्द्र समबल होयतो पिंडायु और निसर्गायु इस्का योगार्थकरना. तो लग्न सूर्य और चन्द्र यह समबल होयतो तीनों आयुष्य तीनोंके बलसे गुणके ऐक्यकरके उस्को तीनोंके बलैक्यसे भागके जो भागाकार आवेसो ॥ अथवातीनोंके आयुष्यके योगका तृतीयांश आयुष्यलेना वह मिश्रायु होताहै. जो लग्न सूर्य और चन्द्र यह तीनोंही हीनबल होयके रूपत्रयात्यबल होयतो जीव शर्मायु आयुलेना.

उदाहरण.

सूर्यका अंशायु ८१०।१७।२९।२६ यह दिनादि करके ३९९७।२९।२६ इस्को लग्नबल ७।२६।८।३० इस्से गुणके २३६६८।५८।३२ इसीप्रमाण चन्द्रादिकोंका अंशायु गुणना.

रविका पिंडायु १५।७।१८।५७।६० यह दिनादि करके ५६२८।५७।६० इस्कोरविवल ७।५१।५३।३० इस्से गुणके ६६२७०।५९।५० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका वसूर्यका निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यह दिनादिकरके ५९२५।१३।२० इस्को चन्द्रबल ७।२०।६।३० इस्से गुणके ६३।६५९।२।१० इसी प्रकार चन्द्रादिकोंका निसर्गायु करना.

रविका यह गुणित तीनों आयुर्दायका योगदिनादि १११३९९।०।३२ इस्के पल ६०१०२६६३२ इस्को लग्नबल ७।२६।८।३० रविवल ७।५१।५३।३० चन्द्रबल ७।२०।६।३० इनका योग २२।३।६।६ इस्की विकला ८३६६ इस्के भागके लब्धि दिनादि ६९२८।६७।६६ यह वर्षादिकरके १३।८।८।६७।६६ यह सूर्यका मिश्रायु तथा यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका मिश्रायु साधनकरना + अथवा रविका अंशायु ८१०।१७।२९।२६ पिंडायु-

१५।७।१८।५७।४० निसर्गायु १६।५।१५।१३।२० यहतीनों आयुदफिका
 यो ४०।११।२१।४०।२४ इस्कावृतीयांश १३।७।२७।१३।२८ यहरविका
 वर्षादि मिश्रायु भया यही रीतिसे चन्द्रादिकोंका करना.

अंशायुश्चक्रम्.

सू.	वं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१०	११	११	१	११	४	१३	१५	७२	वर्ष मास दिन घटि पल
१७	१२	१२	२	२	२	४	२	११	
२२	१३	१३	३	३	३	५	२४	१२	
२४	१४	१४	४	४	४	६	५२	१२	

पिण्डायुश्चक्रम्.

सू.	वं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१५	३	५	५	१२	७	२	८०	वर्ष मास दिन घटि पल
७	१६	३	६	६	२२	७	२	१०	
१५	१७	३	७	७	३२	७	२	१३	
४०	१८	३	८	८	४२	७	२	२१	

निसर्गायुश्चक्रम्.

सू.	वं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	१०	१०	६	७	१८	२४	२	७५	वर्ष मास दिन घटि पल
१५	११	११	७	८	२८	२०	२	६	
१५	१२	१२	८	९	३८	२०	२	११	
२०	१३	१३	९	१०	४८	२०	२	३४	

अशपिंडनिसर्गायु योग चक्रम्.

सू.	वं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१५	२७	६	१०	२५	६१	४७	२१	२२	वर्ष मास दिन घटि पल
११	२८	७	११	२६	७१	४७	२१	२२	
४०	२९	८	१२	२७	८१	४७	२१	१६	
२४	३०	९	१३	२८	९१	४७	२१	२७	

योगवृतीयांश मिश्रायु.

सू.	वं.	मं.	बु.	रु.	शु.	श.	ल.	यो.	
१३	१	२	६	५	१३	१५	७	७६	वर्ष मास दिन घटि पल
७	२	३	७	६	२३	१५	७	६	
७	३	४	८	७	३३	१५	७	२७	
२१	४	५	९	८	४३	१५	७	२६	

इदानींबलाबलज्ञानंतथेदमायुः केषां घटत इति वदति ॥

मूलं

अत्येहीनबलोवलीषडधिकेवीर्येग्रहश्रोदयो
भिनस्वस्वमतेस्मृतायुरितितत्प्राज्ञैर्व्यवस्थापितम् ॥
अंशायुर्वहुसंमतंभवतितत्सत्यंचसत्योदितं
स्याद्भिषुसुशीलपथ्यसुभुजानस्यादिदपापिनां २६

अन्वयः- ग्रह उदयो लग्नं वा अत्येसति हीन बलः अधिकेपड्भाल्ये सं-
प्यबलः षडधिके वली स्यादिति प्राज्ञैः श्रीपत्यादिभिर्व्यवस्थापितं व्यव-
स्था कृतानिर्णीतमितियावत् ॥ अंशायुश्चतनाविनेत्यादिनाभिनमि-
ति स्वस्व मतिचतुर्विध आयुः स्मृतं उक्तम् अंशायुर्वहु संमतं बहेनामाचा-
र्याणां संमतं भवति सत्यंच तदेव सत्योदितं स्यात् बहुसाम्यं समुपैति सत्य
वाक्यम् ॥ इदमायुर्धर्मिष्ठानां सुशीलवत्तां पथ्य सुभुजां पथ्यहितं य-
द्भोजनंतत्सेवनं येषां भवति तेषां स्यात् गणिता गतमायुः नपापिना स्यात्
अर्थभाषाः- ग्रहया लग्नका षड्बलैष्य ३ से कम होयतो हीनबल
होते है ३ से अधिक होयतो मध्यबले और ६ से अधिक होयतो बली
होता है सब आचार्याने पृथक् २ आयु कहा है लग्नबली होयतो अंशा
युसूर्यबली होयतो पिण्डायु इत्यादि कहा है ऐसा है तथापि सत्याचार्य
कामत अंशायु पर है बहुत आचार्योकाभीमत है और जो धर्मिष्ठ सुशी-
लपथ्यभोजी है उन्हीकी आयुमिलती है पापियोंकी नहीं और
पथ्यापथ्यसे रहित जो हैं वह अकालमे भी मरते हैं.

शिष्यसंदेह निवारणमाहः-

मूलं

हानिर्यास्तमितेरिभेऽप्यनुमतां शोथेल्पबुध्यानतत्
यस्माच्चैष्टिकआश्रयेऽस्तिनिखिलैः पेण्डादिपूक्तात्ततः
आयुःसौरमितः यतोऽहृगणनासौरात्ततः सूरिभिः
प्रोक्तसत्यमसद्वादल्पकथितनाक्षत्रकसावनम् २७ ॥

अन्वयः- या अस्तमितेऽर्द्धे हानिः शत्रुभेद्यंशहानिः सानुपेण्डादिविष्वा-
युर्दये उक्तकेनविज्ञाप्येणांशायुर्दये कृता सात्वल्प बुद्ध्या हेतु भूतया
अत्याचासौ बुद्धिश्राल्य बुद्धिस्तयाल्प बुद्ध्यात् दसत् यस्मात्कारणा
दस्तं इते हानिश्चेष्टिकेचेष्टागुणके यतोऽस्तंगतस्यचेष्टागुणके रूपार्द्धमेवहानिः
अरिगृहे व्यंशहानिरुक्तास्तीति भावः आयुः सौरमितमेव आहं यतोब्द
गणनाशिरानुक्तं च ॥ वर्षायननुयुग पूर्वकमत्रसौरात् मासास्तथाचति

ययस्वुहिनांशुमानात् ॥ यत्कृच्छ्रं सूतकचिकित्सितवासराद्यंतत्सावनाच्च घटि-
कादिकमार्द्धमानात् ॥ ततः सूरिभिः सत्यंप्रोक्तं अत्यकथितं नाक्षत्रकं साव-
नमितिकेचिदत्यज्ञेन नाक्षत्रसाधनेनायुः कथितं तदसदिति शम्.

अर्थभाषा:- पिण्डादि आयुर्दायमे अस्तंगत ग्रह होयतो अर्धहानि-
औरशत्रुग्रहमें होयतो अंश हानिजो सब आंचाय्योने कहा है उस्कोअ-
नुमान कोई अत्य दुद्धीसे अंशायुर्दायमें करैगे तो वह करना नहीं. कारण
अर्धहानिचैष्ठा गुणकमें औरअंश हानि आश्रय गुणकमें है वर्ष गुणना
सीरसे है इसवास्ते विद्वानने यह आयुर्दाय सीर मानसे कथित है औ-
रवही सत्य है नाक्षत्रकिंवासावनमान लेगाऐसाजोकोई कहतेहैं सोअ-
सत्यजानना क्योंकि बहुमतसे विरोध है सोठीक नहीं है.

इहानीमनुष्यपरमायुरन्धप्राणिनापरमायु-
कथनपूर्वकमायुर्दायानयनमाह-

श्लोक:- पंचाहंनरवभूसमानृकरिणांव्याघ्राद्यजादेर्नृपाः
गोकाल्योश्चजिनास्तथोष्ट्रस्वरयोस्तत्त्वानिसूर्य्यांशुनाम् ॥
अश्वायुःपरमरदानृवदिहानीथायुरेपपरायुर्निधं-
नृपरायुषाचविहृतं तेषास्फुटायुर्भवेत् ॥ २८ ॥

अन्वयः- पंचदिनाविक नरवभूवर्षाणि १२०।०।५ नृकरिणांपरमायुःस्य
तुल्या घ्राद्यजादेर्नृपाः १६ गोकाल्योर्गोमहिष्योर्जिनाश्चतुर्विंशति २४ म्बितापर
मायुः हीतिनिश्चयार्थ बोधकः ॥ तयोष्ट्रस्वरयोस्तत्त्वानि पंचविंशति २५ वर्षा
णिपरमायुः शुनांकुक्कुराणां द्वादश वर्षाणि परमायुः स्यात् अश्वानांरदाहात्रि-
शत् ३२ एषानृवत् मनुष्यवदायुरानीय स्वस्वपरमायुर्दायवर्षैः संगुण्य नृपरा-
युषां क्रजेन्नदातेषास्फुटायुर्भवेत् ॥ इति आयुर्दायाध्यायः पंचमः ॥
अर्थभाषा:- मनुष्य और हाथी इनका परमायु १२०वर्ष ५ दिनव्याघ्रादिऔ-
र अजादि इनका १६ वर्ष. गौ में मू इनका २४ वर्ष उट और गर्दन इनका २५
वर्ष कुत्तेका १२ वर्ष. घोडेका ३२ वर्ष यह प्राणीका मनुष्यके प्रमाण आयुर्दाय
वनायके उस्कोस्वस्वपरमायुसे गुणके गुणाकारको मनुष्यके परमायु १२० व-
र्ष ५ दिनसे भागदेनातो वह २ प्राणीका सदायु होता है. ॥ इति ॥

श्लोक:- जगदीशेनरचिते केशवीभ्य टिप्यणे ॥
पूर्णायमायुरध्यायो भाषार्थस्यप्रकाशकः ॥ ५ ॥

अथ दशाऽध्यायः

श्लोक

यस्यायुर्यदसौ दशास्य च शुभेष्वस्वभांशे तथा
रोहानी च परिच्युतस्य यदि साकष्टारिनी चांशे ॥
त्यक्तोच्चैव रोहिणी भवति सामध्योच्चमित्रस्वभा-
शे स दृष्टयुतः स्फुरत्करवलिषेष्ठाधिके स्याच्छुभा २९

अन्वयः- यस्य ग्रहस्य लग्नस्य वा यदायुरसावस्य ग्रहस्य दशा स्यात्
इष्टोच्चस्वभांशे वर्तमानस्य शुभा इष्टस्य मित्रस्य भेदशे वा उच्चगृहे उच्चा
शे वा स्वभेदांशे वा स्थितस्य ग्रहस्य दशा शुभा स्यात् ॥ तथानीच परिच्युत
स्य ग्रहस्य दशाऽरोहा शुभा स्यात् यदि नीच परिच्युतग्रहोऽरिभांशे अरेः
अत्रोनीचस्य वा भांशे तदा तस्य दशाकष्टदानेष्टफलदा ॥ त्यक्तोच्चग्रह-
तद्दशाऽवरोहिणी अशुभा अशुभफलदायदित्यक्तोच्चग्रह उच्चमित्रस्वभां
शे स्थितदा तस्य दशाऽशुभापिमध्या स्यात् । स दृष्टयुतस्फुरत्करवलिषे
ष्ठाधिके ग्रहसतितस्य दशा शुभा स्यात् शुभग्रहे ईष्टोयुतश्च स्फुरत्कररश्मि
यो यस्य स स्फुरत्करः बलिषेऽधिकबले इष्टाधिके इष्टं इष्टबलमधिकं
यस्य स इष्टबलः

अर्थभाषाः-

ग्रहकाजो आयुर्दाय वही उसकी दशा होती है. ग्रह मित्रग्रहमें उ-
च्चमें वा स्वग्रहमें अथवा मित्रांशमें उच्चांशमें वा स्वांशमें होय तो वह ग्रह
की दशा शुभ होती है. ऐसा ही यदि ग्रह परमनीचको छोड़कर आगे
जाय तो दशा आरोहा शुभ होती है. परंतु जो वह ग्रह शत्रुग्रहमें वा नीचमें
किंवा शत्रुके अंशमें वा नीचांशमें होय तो आरोहा दशा यह अशुभ होती
है. और ग्रह परम उच्च छोड़के आगे जाय तो दशा अवरोहिणी अशुभ
होती है. परंतु ग्रह उच्चमें मित्रग्रहमें वा स्वग्रहमें अथवा उच्चांशमें मित्रां
शमें वा स्वांशमें होय तो अवरोहिणी दशा यह मध्यम होती है. ग्रह शुभा
दृष्टशुभयुक्त उदित बलिष और इष्टाधिक कहिये पूर्वमें ले आये जो
इष्ट अधिक होय तो दशा शुभ होती है.

इदानीं दशाक्रममाह.

स्यादाह्याहि दशाधिको जस इहार्कन्दुदयानांततः
तत्केन्द्रादियुजामथ हि बहवो वीर्यक्रमेणैव हि ॥
चेदो जस्समतायुषोधिकतयायुस्तुल्यताचेद्दशा-सौ-
ढ्यात्स्यादुदितक्रमात्क्रमविधौ वीर्यहितत्रोच्यते ॥ ३० ॥

अन्वयः- अर्केदू दयानां सूर्य्य चन्द्रलग्नानां मध्ये योधिक बलस्तस्याद्या दशाकल्प्यात तस्तकेन्द्रादियुर्जातयथा अर्केबलाधिके प्रथमदशाऽर्कस्यततस्तस्यकेन्द्रस्थितानां अर्थात् द्वितीयादशा रविस्थानि स्थितस्य तृतीया चतुर्थी स्थितस्य चतुर्थी सप्तमस्थस्य पंचमी दशम स्थितस्य एवं चन्द्रेवालग्ने बलवति सति ॥ ततः पणफरस्थस्य ३।५।८।११ ततः आपोक्लिमस्था ३।६।९।१२ नामयद्येकस्थाद्विबहवः संतितदा वक्ष्यमाण बलाधिकस्याद्यादशाततो न्यूनस्य द्वितीया एवं तृतीयाद्या बल साम्ये यस्याधिकायुः तत्रापि न्यूनाधिक्यं योज्यं तस्यापि साम्ये यो ग्रहो ऽस्तात्प्रथमो दितस्तस्याद्यादशाज्ञेयेति ॥ ३० ॥

अर्थभाषाः- सूर्य्य चन्द्र और लग्न इस्में जो बली होय उसकी दशा प्रथमजानना और उसके बाद केन्द्र १।४।७।१० स्यकी दशा अनंतर पणफर ३।५।८।११ स्थकी दशा अनंतर आपोक्लिमस्थ ग्रहकी दशा ऐसा क्रम जानना केन्द्रमें पण फरमें और आपोक्लिमस्थानमें एकसे ज्यादा ग्रह होयतो प्रथम दशाकिसकी है तब उसमें जो अधिक बल होय उसकी प्रथम दशा अनंतर न्यून बल होय उसकी दशा कदाचित् बलकीभी समता होयतो जिसकी आयु अधिक होय उसकी प्रथम दशा आयुकाभी समता होयतो जो अस्तसे प्रथम उदय हुवा होय उसकी प्रथम दशा होती है ॥ ३० ॥

इदानीं लग्नाद्यदशा प्राप्तबलमाहः

श्लोक- चेलुग्नद्यदशास्वभावजफलघ्नौजांसिपाकक्रमे
 ऽर्केन्दोश्चैत्प्रथमारवगोदयबलांघ्रिर्भेऽन्यवर्गेऽर्द्धितः ॥
 स्वैर्वर्गेशबलेर्हितो बलमिद्वैक्यं मूलतैक्यं परे ऽथैवं
 रिष्टदमं चतुर्जेधिकबले भक्तात्तदा रिष्ट हृत् ॥ ३१ ॥

अन्वयः- चेदाद्या लग्न दशातदा भावफलघ्नौजांसिकाय्याणि ओजांसि स्वस्व षड्बलैक्यानि ग्रहाणां भावज फलैर्गुण्यानि दशा क्रमेतानि दशा बलानि स्फुटानि भवति चेदर्केन्दोः प्रथमादशा अर्कस्य चन्द्रस्य वा प्रथमा दशातदा ग्रहाणां लग्नस्य चयत्षड्बलैक्यं तस्यांघ्रिश्चतुर्थांशो भेगुहस्थानेस्थाप्योऽन्यवर्गे हीरादिपुचतुर्थांशस्यार्द्धः स्थाप्यः तैसप्तवर्गस्थितांकाः स्वैर्वर्गेशबलेर्निहत्यगुण यित्वातेषामैक्यं बलं स्यात् अपरमंतनु ऽपरे एवं भ्रुवन्ति ॥ तेषां गुणफलं प्रथमं मूलानि गृहीत्वा तेषा-

मैक्यं बलं स्यात् दसदेक देशत्वात् स्वगोदयबलांघ्रीत्यादि प्रकारेणा
नीतबलेरिष्टदभक्तृजग्रहयो र्यदिरिष्टभक्तारिष्टदग्रहापेक्षयाधिक
बलस्तदारिष्टहत्स्यात् ॥ ३१ ॥

अर्थभाषा.

चंद्रिलग्नकी प्रथम दशा होयतो भावफलसे ग्रहके षड्बलैक्यको
गुणदेना तो दशाक्रमसे बल होता है यदि सूर्य या चन्द्रमाकी प्रथम दशा
होयतो ग्रह और लग्न इनके बलका चतुर्धाश सप्तवर्ग बलके ग्रहस्थान
में रखना और उस्का आधा होरादि स्थानमें रखना और उनको अपने आप
ने वर्गस्वामीके बलसे गुणदेना और सबका योगकरना तो बल होता है और
कोई आचार्य्येका यह मत है कि गुणन फलका मूल लेकर योगकरना तो ब-
लहोता है यह ठीक नहीं है. पूर्वरीति आयाजो बल वह यदि रिष्टकर्ता ग्रहके
अपेक्षारिष्टभंगकर्ता ग्रहका बल अधिक होयतो रिष्टको नाश करेगा.

दशाक्रमोदाहरणम्.

इहां सूर्य चन्द्र और लग्न इस्में सूर्य अधिक बल है इसवास्ते
पिंडायुमें सूर्य दशा प्रथमलेके उदाहरण क्रम लिखना. तथापि ग्रंथक
नानुरोधसे लग्न बलाधिक कल्पना करके अंशायुमें प्रथमलग्नदशालेके
दशाक्रमलिखते हैं प्रथमलग्नदशा अनंतरलग्नसे केन्द्रस्थानमें सूर्य चन्द्र
हैं और पणफरमें शुक्रमंगल है और आपोक्लि ममें गुरु बुध शनि है इन
मेंसे प्रथम दशाकिस्की है यह सगद्गनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं.

दशाक्रमबलचक्रम्.							जन्मलग्नम्	
सू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	ग.	
६	३	४	१	६	०	५	ब	
३	५२	५७	२२	३७	१६	२३	ल	
३६	४५	३०	५०	१६	५७	३	ल	

रविका षड्बलैक्य ७।५१।५३ इस्का रविभावफल ०।४६।३३
इस्से गुणके ६।३।३६ यह रविका दशाक्रम बल भयायही रीतिसे चंद्रादिको
का बलकरना इहांकेन्द्रमें जो सूर्य चन्द्र हैं इस्में सूर्य अधिक बल है इ-
स्की द्वितीयदशा चन्द्रकी तृतीयदशा अनंतर पणफरमें शुक्रमंगल है इस्में म-
ंगल अधिक बल है इस्की चतुर्थ दशा अनंतर शुक्रकी आपोक्लि ममें गुरु

अंशायुचक्रम्.

ल.	रू.	चं.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	यो.
१५	८	९	१	४	११	१३	८	७२
२	१०	११	११	२	२	४	२	११
२४	१७	१२	७	२३	१	८	१३	१९
५२	२९	५५	१९	२५	१२	३४	५५	४४
०	२४	४८	१२	४८	०	४८	१२	१२

बुधशनि है. इसमें गुरुअधिक बल है. इसकी दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा इस प्रकार अंशायु करना. उदाहरणार्थ सूच्यै-

अधिक बल कल्पना करके पिंडायुमें दशाक्रम लिखते हैं प्रथमसूर्य दशा अनंतर सूच्यैसे केन्द्रस्थानमें लग्न चंद्र है इसमें प्रथम दशा किस्की है यह समझनेके वास्ते दशाक्रम बल करते हैं.

चन्द्रका षड्बलैक्य ७२०।४ इस्का चतुर्थीश १।५०।१ यह गृहस्थानमें बल इस्का अर्ध ०।५५।० यह होरादि ६ स्थानमें बल अब चन्द्रका गृहेश शनि इस्का षड्बलैक्य ६।२।११ इस्से चंद्रका गृह बल १।५०।१ इस्की गुणके ११।४।६ यह चन्द्रका होरेश चन्द्र इस्का षड्बलैक्य ७२०।४ इस्से चन्द्रका होरावल ०।५५।० इस्की गुणके ६।४३।२४ यही रीतिसे द्रेष्काणादिकोंका गुणाकार करके सप्तवर्गमें के गुणाकारका ऐक्य करना तो दशाक्रम बल होता है.

ग्रह और लग्न इनका बल चतुर्थीश गृह और तदर्ध होरादि ६ स्थानमें.

	रू.	चं.	मं.	बु.	बु.	शु.	श.	ल.
ग्रह	५७ ५८	५० १	५७ २२	१८ ६	५३ ५२	२२ ५४	३० ३३	५१ २
होरा	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३० ०	५६ ५६	६१ २७	६५ १६	५५ ३१
द्रेष्का.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३० ०	५६ ५६	६१ २७	६५ १६	५५ ३१
सप्त.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३० ०	५६ ५६	६१ २७	६५ १६	५५ ३१
नव.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३० ०	५६ ५६	६१ २७	६५ १६	५५ ३१
द्वाद.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३० ०	५६ ५६	६१ २७	६५ १६	५५ ३१
त्रिंशां.	५८ ५९	५५ ०	३८ ५१	३० ०	५६ ५६	६१ २७	६५ १६	५५ ३१

वर्गश बलसे गुणके.

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	लग्न
ग्रह	१० ११ १०	११ ४ ६	१० ११ ५	५२ ५२ ५१	५२ ५२ ५६	२० २६ २६	५७ ५१ ३१	१० १३ ४१
होरा	७ ४३ ५३	४ ४३ २६	५ ५५ ३२	७ ७ ७	५ ५७ २६	५ ४५ २	५ ५५ ०	७ ४५ ४७
द्रेष्का	७ ४३ ५३	५ ३२ ०	४ ५४ ५४	२ २ १२	४ ५६ २१	३ ५२ ५	४ १० ११	५ ५५ ५०
सप्त.	७ १२ ३७	७ १२ ३६	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	७ ३ ३
नव.	७ १२ ३७	५ ३२ ०	४ ४ ५	३ ५ ५	७ १२ १०	३ ३ ५	४ ३ ३	७ ३ ३
दाद.	५ ७ १	६ ५७ ३०	५ ५४ ५४	३ २ १	७ १२ १०	५ ४ ३	३ ५ ३	५ ३ ७
त्रिंशान	७ २७ ४४	४ ४६ २४	४ ५४ ५४	३ ५ ४	४ ५६ २१	३ ५ ५	३ ५ ३	५ ३ ७

गुणाकारका ऐक्य दशाक्रम बलचक्रम्.

सूर्यः	चन्द्रः	मंग.	बुध.	गुरु.	शुक्र	शनि	लग्न	योग
५२	४७	३८	३३	४६	३५	३४	४७	३३५
३५	४७	२०	३१	२	१९	५५	५०	४७
२	५८	५८	४५	४४	४	४२	१२	२५

इहां सूर्यसे केन्द्रस्थानमें लग्न चन्द्र है इस्में लग्न अधिक बल है उसको द्वितीय दशा अनंतर चन्द्र की पणफरमें मंगल शुक्र इस्में मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्र की दशा आपोक्लिममें बुध गुरु शनि है इस्में गुरु अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शनि दशा अनंतर बुध की दशा इहां मिश्रायुमें सूर्य अधिक बल है इसवासे यही दशा क्रम जानना यह बल पिंडायुमें और निसर्गायुमें लेना अंशायुमें

पहले जो बल किया है उसका प्रमाणसे दशा रचना.

पिण्डायुदशाक्रमचक्रम्.

सू.	ल.	चं.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	शु.	व.
१५	२	१६	३	१९	६	०	६	८०	क.
७	१०	२९	११	२	५	७	२	१०	म.
१८	२८	२९	५	२८	२२	१४	१६	१३	दि.
५७	२२	२४	३	३७	१६	८	१०	०	घ.
४०	४८	३५	०	२४	१८	०	३६	२१	प.

उदाहरणार्थ चन्द्रका अधिक बल कल्पना करके निसर्गायुमें दशाक्रम लिखते हैं. प्रथमचन्द्र दशा अनंतर चन्द्रसे केन्द्र स्थानमें लग्न और सूर्य हैं इसमें सूर्य अधिक बल है इसकी द्वितीय दशा अनंतर लग्नकी दशा चन्द्रसे पणफरमें शुक्रमंगल है इसमें मंगल अधिक बल है उसकी दशा अनंतर शुक्रकी दशा चन्द्रसे आपोक्लिमस्थानमें बुध गुरु शनि हैं इसमें गुरु अधिक बल है इसकी दशा अनंतर शनिकी दशा अनंतर बुधकी दशा पिण्डायुमें जो बल किया है उसी बलका प्रमाणसे निसर्गायुमें भी लेना. और जीवायुमें भी लेना.

निसर्गायुचक्रम्.

चं.	सू.	ल.	मं.	शु.	बु.	श.	बु.	शु.	व.
०	१६	२	०	१८	७	२४	४	७५	क.
८	५	१०	६	३	९	०	७	४	म.
२	१५	२८	८	२८	८	२०	२७	१९	दि.
२२	१३	३३	४०	५१	५३	३०	७	३१	घ.
३५	२०	४८	२४	२०	३०	०	५७	५४	प.

जीवायुदायुमें सूर्यचन्द्र लग्नमें हीन बल होय तथापि जो उसमें अधिक बल होय उसकी प्रथम दशा कल्पना करके अनंतर उससे जो केन्द्रादि स्थानमें होय उनकी दशा इत्यादिक्रम जानना ॥ रिष्ट भंग विचारान्तर और दशाक्रम बल दाढर्थ और मतांतर निराकरण.

श्लोक- भंजुरिष्टकृताहिताहितशुभासत्वंचनीचोच्चभा
स्ताद्यस्वाश्रयताविचार्य्यमतिमान् रिष्टस्यभंगवदेत्
श्रेष्ठरिष्टहतौदशाक्रमइहोजःश्रीधराद्योदितम्
कष्टेष्टभवलांतरात्कचकृततद्युक्तिस्तन्यत्वसत् ॥३२॥

अन्वयः

भङ्कुरितिरिष्ट भङ्कुरः रिष्ट कृतोरिष्टकारकस्य ग्रहस्य हिताहितं शुभाशुभं विचार्य्यरिष्ट भंगं वदेत् हितं इष्टं अहितं कष्टं शुभासत्त्वं शुभग्रहं पापग्रहं च उच्चस्थितो नीचस्थितो वा अस्तोदितो वा मित्रगृहे शत्रुगृहे वास्या इत्यादि सर्वं विचार्य्य रिष्टस्य भंगं वदेत् मतिना न् ॥ इहास्मिन्स्थले दशाक्रमे श्रीधराद्योदितं ओजो बलं श्रेष्ठं इष्ट बलेन गुण्यो दशाविधौ बलं स्यात् ॥ अथपरमतं ॥ कष्टेष्ट घ्रेति कचकेचनाचार्या कष्टेष्टाभ्यां गुणिते बले तयो रंतरात्ताधितं वीर्यं दृक् पृथगिष्ट कष्ट गुणित मित्यादिना इष्ट कष्ट गुणितं पडुलं तयो रंतरं कार्यं तस्य चतुर्धाशौ गृहे होरादावर्धितः ततः स्वस्ववर्गेश बले हीतसे पामैक्यं स्पष्ट बलं स्यात्तदसत् युक्तिः शून्यत्वात् .

अर्थभाषा.

अरिष्ट कर्ता ग्रह और अरिष्ट भंगकर्ता ग्रह इनके इष्टकष्ट वह शुभ भहैं किंवा पापभहैं यह और वह नीचमें उच्चमें मित्र ग्रहमें शत्रु गृहमें और अस्तंगत उदित है इत्यादि इनका आश्रयत्वका विचार करके बुद्धिमान् गणकने अरिष्ट भंग कहना यह ग्रंथमें रिष्ट भंगके विषे और दशा क्रमके विषे श्रीधरादिक आचार्य्याने कहे प्रमाण बलल्यावनेकी रीति कहा है वही श्रेष्ठ है श्रीपति इत्यादि ग्रंथकारने इष्टसेवा कष्ट से पडुवल गुणके उसके अंतरसे जो बल साधन कथित किया वह अयुक्त है इसवासे असत है.

॥ अंतर्दशाकरना ॥

श्लोकः } अर्धस्थैक भगास्त्रिकोण गृह गुरुयंशस्य चास्तेन गां
शस्यां घ्रे अतुरस्त्रगोनिज गुणैः पक्तैक भस्या हृत्ती ॥
अंगादौ कुरु रूपमत्र समता कृत्वा चनांशु छिदा
मंशघ्नाः स्वदशाः पृथक् रवलु लवैक्या मास्युरंतर्दशाः ३३

अन्वयः

मूल दशेश गृहस्यो ग्रहो निज गुणै रर्धपक्ता याचको भवति निज गुणै रित्यस्त्रार्थस्वारोहा वराह उच्च नीच कष्टादि निरित्यर्थः त्रिकोणगानवमपंचमस्थान गुरुयंशस्य अस्ते सप्तमस्थे नगांशस्य सप्तमांशस्य चतुरस्र अतुराष्टमस्थानगो घ्रे अतुर्थांशस्य पक्ता याचको भवति

लग्नस्याप्येवं एकमे द्विवहुषुसत्सुवली एक एवग्रहः पाचयति न सर्वेअ-
त्रापि दशाक्रमवलज्ञेयम् अंशा दोरूपकत्वाततः प्रथममेक गृहस्थि-
तस्यतनास्त्रिकोणस्थ ग्रहस्यततो अस्तगतस्यनतश्चतुरस्त्रः गतस्य
ग्रहस्य भागास्वाप्याः ततः समच्छेदीकृत्य छेद गमचरुत्वापृथक्तेषा
मंशानां योगः कार्यः ग्रहदशापृथग्बलैर्गुण्या अंशयोगेन भाज्याः अंत
दशाः स्युः

अर्थभाषा:

मूल दशापति अर्थात् महादशापति जिस राशीमें होय उसी राशीमें
जो ग्रह होय वह दशापतिके संबंधसे दशापतिके अर्धफलका पाचक
होता है दशापतिसे ५।९ यह स्थानमें रहनेवाला ग्रहदशापतिके
तृतीयोत्रा कालका पाचक होता है और दशापतिसे सप्त ७ मस्थान
नमेका ग्रहदशापतिके सप्तमाशका पाचक होता है और दशापतिसे १।८
यह स्थानमेका ग्रहदशापतिके चतुर्थोत्रा कालका पाचक होता है सर्वत्र ग्र-
ह आरोहावरोह उच्चनीचादि पूर्वोक्त स्वगुणसे शुभाशुभ फलका पाचक
होता है कहिये अन्य दशा में भी अपने पाक कालमें शुभाशुभ फल देता है
एक राशीमें एकसे ज्यादा ग्रह होयतो उस्मेजो वलिष्ठ ग्रह होय उसी को
लेना इहां अंश स्थानमें श्लोक उसके नीचे छेद लिखना अनंतर समच्छे-
द करके छेदांक त्याग करना अंशांकसे स्वकीय स्वकीय चर्पादि दशा अ-
लग अलग गुणके गुणाकारकी अंशांकके मिलानेसे जुदा जुदा भाग
दिनातो अंतर्दशा होती है अंतर्दशाक्रमः-

प्रथम दशापतीकी अंतर्दशा अनंतर दशापतीके राशीमें रहने वाले
ग्रहका अंतर फिर दशापतिसे १।५ यह स्थानमें रहनेवालोंका अंतर फि-
र सप्तमस्थानके ग्रहका अंतर अनंतर १।८ यह स्थानके ग्रहका अंतर
कदाचित् पूर्वोक्त स्थानोंमें दोतीन ग्रह होयतो बलका वशसे क्रम जान
ना जो दशाक्रमके विषे बल है वही अंतर्दशा में भी बल जानना.

समच्छेद करनेकी रीति.

जिन संख्याओंका समच्छेद करना होय उनको बराबरसे रखकर
एकके हरसे दूसरेके हर अंशको गुणदिना और दूसरेके हरसे और सबके
हर अंशको गुणना ऐसा परस्पर गुणनेसे समानच्छेद होता है
उदाहरण + जैसे लग्नदशाने अंतर करना है ल $\frac{1}{9}$ शु $\frac{1}{3}$ श $\frac{1}{3}$
सू $\frac{1}{3}$ चं $\frac{1}{3}$ इनको समच्छेद करके २५२ १८४ १८४ १३६ ६३ अं-
२५२ १२५२ २५२ १२५२ २५२ ह.

इन अंशोंकी मिलान ५१९ इस्को ३से भागके १७३ अंशोंमें ३ से भाग देनेसे ८४।२८।२८।१२।२१ इसी प्रकार जहां अधिक अंक होय उसके अपवर्तन देके सूक्ष्म अंक कर लेना जो काम उस अंकसे होता था वो काम इस अंकसे हो जायगा.

उदाहरणम्.

इहां सूर्यवल अधिक हैं इस वास्ते मिश्रायुमे प्रथम सूर्यदशा १३।७।२७।१३।२८ अब सूर्यदशामें अंतर्दशा विचार इहां कुंडलीमें सूर्यके साथ कोई ग्रह नहीं सूर्यसे त्रिकोणमें मंगल है सो $\frac{1}{3}$ पाचक है और सूर्यसे सप्त ममेलग्र है सो $\frac{1}{6}$ पाचक तब सूर्यदशामें मंगल और लग्न पाचक है सूर्यदशामें $\frac{1}{3}$ ल $\frac{1}{6}$ यह सम च्छेद करके सू. ३। मं ३। ल. ३। इस्के छेद त्याग करके सू. २। मं. ७. ल. ३ यह अंशोंक जया यहां सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को सूर्यके अंश २१ इस्से गुणके २८६।१०।१।४२।४८ इस्को अंशोंकी मिलान ३१ इस्से भागके ९।३।१।१।२२ यह सूर्यमें सूर्यकी दशा सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को मंगलके अंश ७ इस्से गुणके ९५।७।१०।३४।१६ इस्को अंशोंकी मिलान ३१ से भागके ३।१।०।२०।२८ यह सूर्यदशामें मंगलकी अंतर्दशा सूर्यकी मूलदशा १३।७।२७।१३।२८ इस्को लग्नके अंश ३ इस्से गुणके ४०।११।२१।४०।२४ इस्को अंशोंकी मिलान ३१ से भागके १।३।२५।५१।३८ यह सूर्यदशामें लग्नकी अंतर्दशायह तीनों अंतर्दशाका योग १३।७।२७।१३।२८ यह सूर्यकी मूलदशा. यही रीतिसे लभादि दशामें अंतर्दशा करना.

अंशच्छेदचक्रम्.

सू.	मं.	ल.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	चं.	चं.	सू.	मं.	मं.	सू.	शु.	लु.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	७	१	३	३	७	४	१	३	४	४	१	३	७	४

गु.	ल.	श.	मं.	ल.	शु.	चं.	बु.	सू.	श.	ल.	शु.	चं.	लु.	चं.	ल.	श.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	७	४	१	३	७	४	१	३	३	७	४	१	७	४

समच्छेद चक्रम्.

सू	मं	ल	ल	शु	श	रू	वं	वं	व	सू	मं	मं	सू	शु	बु
२१	७	३	८४	२८	२८	१२	२१	१२	४	३	३	८४	२८	१२	२१
२१	२१	२१	८४	८४	८४	८४	८४	१२	१२	१२	१२	८४	८४	८४	८४

शु	ल	शु	मं	व	व	वं	बु	सू	श	ल	शु	वं	व	बु	व	ल	श
८४	२८	२८	१२	२१	८४	२८	१२	२१	८४	२८	२८	१२	२१	२८	४	७	७
८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	८४	२८	२८	२८	२८

सूर्यदशमिंश्र न्तरदशा-	लग्नदशमिंश्रन्तरदशा	चंद्रदशमिंश्रन्तरदशा	जीमिंश्रन्तरदशा
---------------------------	---------------------	----------------------	-----------------

सू	मं	ल	यो	ल	शु	श	रू	वं	यो	वं	व	सू	मं	यो	मं	सू	शु	बु	यो
८	३	१	१३	३	१	१	०	०	७	४	१	१	१	१	१	०	०	०	२
१	१	३	७	४	१	१	५	१०	०	११	७	२	२	१	२	४	२	३	१
१	०	२५	२७	२७	१२	१९	२५	६	७	२७	२९	२९	२९	२४	२४	२८	३	२१	३७
२२	२०	५१	१३	५	१	१	३७	४६	१२	१३	४	१८	१८	५४	२०	६	२८	५	०
२८	३८	२८	४	४१	४१	५१	१५	३२	१६	२५	१९	१९	१९	२२	४८	३७	५	५२	

शुक्रदशमिंश्रन्तरदशा	गुरुदशमिंश्रन्तरदशा	शनिदशमिंश्रन्तरदशा	बुधदशमिंश्रन्तरदशा
----------------------	---------------------	--------------------	--------------------

शु	ल	श	मं	व	यो	व	वं	बु	सू	यो	श	ल	शु	वं	व	यो	बु	व	ल	श	यो
६	२	२	०	१	१३	४	१	०	१	८	७	२	२	१	१	१५	३	०	०	०	६
९	३	३	११	८	११	१०	७	८	२	५	७	६	६	१	१०	८	१०	६	११	११	४
५	१	१	१७	८	६	२७	१९	३२	२१	२५	१०	१३	१३	१	२५	४	१३	१९	१८	१८	९
५७	५९	५९	५९	५९	५४	१२	६	२८	४९	३३	३६	३२	३२	३०	९	२०	२१	३	२०	२०	४
२०	१०	१०	२९	२२	५१	१४	२५	२८	४२	५६	३२	१०	१०	५६	८	५६	२	०	१५	१५	३२

इदानीं सूक्ष्मफलज्ञानार्थं विदशादिसाधन
माह.

श्लोक- } इत्याभ्योविदशास्ततोऽप्युपदशाताभ्यश्चसूक्ष्मफलं
पंचांशीनदिनद्वयतुकलयत्पायुःकृतं दृश्यते ॥ पक्षीः
खेटलवांतरेण च भवेन्मासांतरं चायुषः प्रोक्तं येस्तु-
दशादिलभन्फलं तेभ्योतिदृग्भ्यो-नमः ॥ ३६ ॥

अन्वयः-

इत्सनयारीत्या आभ्यो अंतर्दशाभ्योविदशाः साध्याः परंत्वन्तरदशा
स्थानेऽन्तरदशास्थाप्याः तत उपदशासाध्याविदशादशाप्रकल्प्यताभ्योदशा

अंतर्दशाविदशापदशाभ्योऽति सूक्ष्मं फलं वदेत् गणक इति.

अनयारीत्यारुतमंशाद्युः कलया एक कलया पंचाशो नदिन द्वयमायुर्दृश्यते ॥ एक कला तुल्येन ग्रहांतरे एव भवति यदि नवांशकलापि २०० रेकं वर्धते तदैक कलया किमित्यनेनायुष एक दिनमष्टचत्वारिंशद्वृत्तिकायांतरं पतति ब्रह्मसौरार्य्य भट्टादिपक्षैः ग्रहाणामंशाद्यन्तरं भवति तेनायुषामासाद्यन्तरं भवति । अपि च जन्मकालस्य पलमात्रांतरे लग्नस्य कलापङ्क्त्यांतरस्यात्तदशाविभागे आयुर्दायिऽप्यन्तरं स्यात् एवं चैराचार्य्ये दशादिलग्नफलं दशाप्रवेशे लग्नफलमुक्तं तेभ्योऽति ह्यभ्योनम इति वक्रोक्तिः ॥

अर्थभाषा.

जिस प्रकार दशासे अंतर्दशाकिया है उसी रीतिसे अंतर्दशासे विदशा करना इहां अंतर्दशाको दशाकल्पना करना और अंतर्दशापतिको दशापति कल्पना करना अनंतर पूर्व श्लोकमें कथित रीति प्रमाण पाचकांशको समच्छेदादि विधि करके विदशा ल्यावना तैसेही विदशाको दशाकल्पना करना और विदशापतिको दशापति कल्पना करके विदशामें उपदशा ल्यावना यही रीतिसे दशामें अंतर्दशापति अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और अंतर्दशामें विदशापती अपने गुण प्रमाण फल देते हैं और विदशामें उपदशापती अपने गुण प्रमाण फल देते हैं ऐसे उपदशा सूक्ष्मकालिक फल जानना.

इहां १ कलाका अंशायुर्दाय ल्यावनेकी रीति प्रमाण आयुर्दाय कियातो १ दिन ४८ घडी आया ऐसा देखाता है ब्रह्म सौरार्य्य भट्टादि पक्षसे ग्रहका भागादि अंतर आवता है इसवासे आयुर्दायमें मासादि अंतर आवेगा

जब जन्मकालमें पलमात्र अंतर आवता है तब लग्नमें ६ कलाका अंतर आवता है और ६ कलासे आयुर्दायमें १० दिनका अंतर आवेगा ऐसा अंतर देवकर यह दशा प्रवेशादिलग्न फल कथित किया है वह दूर दर्शाको दण्डवत् है.

सूर्यमहादशांतर्गतसूर्यांतर्देशामध्येविदशा				सूर्यमहादशांतर्गतमंगलांतर्देशामध्येविदशा.				सूर्यमहादशांतर्गितलगांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.				
---	--	--	--	---	--	--	--	--	--	--	--	--

सू.	मं.	ल.	यो.	मं.	सू.	शु.	बु.	यो.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.
१	२	०	३	१	०	०	५	३	०	२	०	०	०	३
२	२	१०	२	१	७	२	५	०	७	२	०	१	१	३
३	३	२०	१	१	४	१	१०	०	१७	१७	१७	१	१७	२५
४	४	३०	१	१	२४	५३	४८	२०	२३	१	१	०	४५	५३
५	५	४०	२	५	३८	२५	२९	२८	३४	४	४	२८	४८	३८

लग्नमहादशांतर्गितलगांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.					लग्नमहादशांतर्गितशुक्रांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.					लग्नमहादशांतर्गितशनिंतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.				
---	--	--	--	--	--	--	--	--	--	---	--	--	--	--

ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.	शु.	ल.	श.	मं.	बु.	यो.	श.	ल.	शु.	चं.	बु.	यो.
१	०	०	०	३	३	०	०	०	०	१	१	०	०	०	०	०	१
७	६	६	२	४	६	२	२	०	०	१	१	६	२	२	१	१	१
२५	१८	१८	२५	२८	२७	३८	६	२८	१९	१९	१९	८	२	२	१७	१७	१९
४८	३६	३६	६	५७	३६	१२	१२	२३	२३	१	१	४६	५५	५५	११	११	१
३५	१२	१२	५६	९	११	४	४	१९	३	४	४	५५	३९	३९	४४	४४	४१

लग्नमहादशांतर्गतसूर्यांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.					लग्नमहादशांतर्गतचंद्रांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.					चन्द्रमहादशांतर्गतचंद्रांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.				
---	--	--	--	--	---	--	--	--	--	---	--	--	--	--

सू.	मं.	ल.	यो.	चं.	बु.	सू.	मं.	यो.	चं.	बु.	सू.	मं.	यो.
३	१	०	५	५	१	१	१	१०	२	०	०	०	४
२८	१	१६	२५	२७	२५	११	११	६	२०	१०	१६	५	११
४४	३५	५७	१७	१९	४६	४९	४९	४६	१८	४६	४	४	२७
५९	०	५२	५१	४६	३७	५६	५६	१५	९	३	३२	३२	१६

चन्द्रमहादशांतर्गितजीवातर्देशामध्येविदशाचक्रम्.					चन्द्रमहादशांतर्गतसूर्यांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.					चन्द्रमहादशांतर्गतमंगलांतर्देशामध्येविदशाचक्रम्.				
---	--	--	--	--	---	--	--	--	--	--	--	--	--	--

ल.	चं.	बु.	सू.	यो.	सू.	मं.	ल.	यो.	मं.	सू.	शु.	बु.	यो.
१	०	०	०	५	१	०	१	१	०	०	०	०	१
११	३	१	२	७	१०	३	१	२	२०	२	१	२	२
१७	२५	१९	२६	२९	४	११	१३	२९	१७	२६	७	५	२९
२	४०	३४	४५	४४	२२	२७	२८	१८	१७	४५	११	४	१८
५९	५९	४३	४४	२५	५	२२	५२	१९	१४	४४	३	१८	१९

भौममहादशांतर्गत मंगलांतर्देशामध्ये विदशाचक्रम्.	भौममहादशांतर्गत सूर्याः मध्येविद- शाचक्रम्.	भौममहादशांतर्गत शुक्रांतर्देशामध्ये विदशाचक्रम्.
---	---	--

मं	सू	शु	बु	यो	सू	मं	ल	यो	शु	ल	श	मं	बु	यो
०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२	१	२	२	३	१	०	६	१	०	०	०	०	२
१७	२५	६	४	२४	१०	३	१४	२८	०	१०	१०	४	७	३
२४	४८	४६	२१	२०	२०	२६	२०	६	४९	१६	१६	२४	४२	२८
३७	१३	२३	९	२२	५	४२	१	४८	१६	२५	२५	१२	१९	३७

भौममहादशांतर्गत तुलुधान्तर्देशाम- ध्येविदशाचक्रम्	शुक्रमहादशांतर्गत शुक्रांतर्देशामध्ये विदशाचक्रम्.	शुक्रमहादशांतर्गत लग्नांतर्देशामध्येवि- दशाचक्रम्.
---	--	--

बु	बु	ल	श	यो	शु	ल	श	मं	बु	यो	ल	शु	श	सू	बु	यो
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	९	१६	१६	२०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२
२७	३९	५४	५४	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	५६
१	३४	१५	१५	५५	३९	३३	३३	६	२९	३३	११	११	२२	५३	५३	१०

शुक्रमहादशांतर्गत शनिंतर्देशामध्ये विदशाचक्रम्.	शुक्रमहादशांतर्गत तमंगलांतर्देशाम- ध्येविदशाचक्रम्	शुक्रमहादशांतर्गत गुरुअंतर्देशामध्ये विदशाचक्रम्.
---	--	---

श	ल	शु	बु	बु	यो	मं	सू	शु	बु	यो	बु	बु	ल	श	यो
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१४	४	४	३	३	२	६	०	०	१	११	११	३	१	०	
४५	५५	५५	४१	४१	५९	२५	११	४७	२३	५९	४७	२५	२३	११	
४६	१५	१५	२७	२७	१०	४८	५६	५८	५७	३२	२८	४३	५७	५६	

गुरुमहादशांतर्गत गुरु मध्ये विद- शाचक्रम्.	गुरुमहादशांतर्गत तचन्द्रांतर्देशाम- ध्येविदशाचक्रम्	गुरुमहादशांतर्गत बुधान्तर्देशामध्येवि- दशाचक्रम्.
--	---	---

ग	बु	बु	सू	यो	बु	बु	सू	मं	यो	बु	बु	ल	श	यो
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

गुरु महादशांतर्गतसू. म. विदशाचक्रम्.				शनिमहादशांतर्गतश. नरतदशामध्ये विदशाचक्रम्.					शनिमहादशांतर्गत लग्नांतदशामध्ये विदशाचक्रम्.						
सू.	मं.	ल.	श.	श.	ल.	शु.	चं.	वृ.	शु.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	शु.
०	०	०	१	३	५	१	०	०	७	१	०	०	०	०	२
२१	३	१२	२२	४५	१०	१०	७	७	२३	२३	२७	२७	२२	२३	२३
१८	४६	४५	४९	५३	२७	३७	३३	३३	३६	३६	५०	५०	२२	५३	५३
१६	५	२८	४९	४६	५५	५५	२७	२७	३२	०	२०	२०	०	३०	३०
शनिमहादशांतर्गतशु. क्रान्तदशामध्ये विदशाचक्रम्.				शनिमहादशांतर्गत चंद्रांतदशाविदशाचक्रम्.				शनिम. द. गुरु अंतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.							
शु.	ल.	श.	मं.	वृ.	शु.	चं.	वृ.	सू.	म.	शु.	चं.	कु.	सू.	शु.	
१	०	०	०	०	२	०	२	०	०	१	०	१	०	०	
२३	२७	२७	२३	२०	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	
३६	५०	५०	२३	५३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	
०	२०	२०	०	३०	१०	१०	४	३९	१९	५६	५६	५६	४४	८	
बुध महादशांतर्गत बुधांतदशाविदशाचक्रम्.				बुधमहादशागुरु अंतर्दशामध्ये विदशाचक्रम्.				बुध महादशांतर्गत लग्नांतदशामध्ये विदशाचक्रम्.							
बु.	वृ.	ल.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	सू.	शु.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	शु.
२	०	७	७	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	४	२	२	३	३	१	३	२८	३६	३३	२६	२६	२४	३२	३३
७	१	१	१	३	३	३	२८	४९	२८	३३	२२	२२	२४	३७	३७
३५	३९	५४	५४	२	३	३	४०	४०	३	५	४२	४२	४४	१	३५
बुधमहादशांतर्गतशनि अंतर्दशामध्ये विदशा.															
श.	ल.	शु.	चं.	वृ.	शु.	इति विदशा संपूर्ण.									
०	०	०	०	०	०	जिस प्रकारसे विदशा करके है उसी प्रकार पदशा करना. किंचिदुशा अशुभे वक्ष्यामि.									
५	३	३	३	३	३										
३०	२३	२३	३०	३०	३०										
४६	३५	३५	३३	३३	३३										
३७	२६	२६	३३	३३	३३										

उपदशा चक्रम्.

सू. म. द. सू. व्यतिस्तू. विद. शामे उपदशा.				सू. म. द. सू. व्यति मंगल विद. उपदशा चक्रम् ॥				सू. म. दशा० लग्नात० मध्ये विदशामे उपदशा चक्रम्.						
सू.	मं.	ल.	यो.	मं.	सू.	शु.	बु.	यो.	ल.	शु.	श.	सू.	चं.	यो.
४	१	०	६	१	०	०	०	२	०	०	०	०	०	०
२	४	७	३	२	४	२	३	१	५	१	१	०	१	१०
२०	२९	८	६	१५	२५	२	१०	२	६	२२	२२	२२	९	२२
३५	३१	२२	२९	४४	१४	१४	५६	१	३१	१०	१०	२१	७	२१
४६	५५	१६	५७	१६	४५	५४	४	५९	१३	२४	२४	३६	४९	२६

इसी प्रकारसे उपदशासवकरना इहां ग्रंथका बढणके भयसे तीनहीं लिख्या.

श्लोक

जगदीशेनरचिते केशवी ग्रंथे टिप्पणे ॥

दशाधिकारः पूर्णायित्वा पार्थ प्रकाशकः ॥ ८ ॥

दशाप्रवेशकालमें सावनाहर्गणसाधन.

श्लोक

शाकोब्दाजनिमध्यमार्कभयुतं मासादितद्युग्दशा
ब्दाद्यतत्रशकेसप्तादितरणीमध्योदशादौ भवेत् ॥ ९ ॥

घस्त्रीभूतदशापृथक्त्रिकुहत्तारवाकाष्टहत्तद्युतो
सास्यात्सात्रनिकादशाब्दपल्युक्तद्युग्जनिद्युग्जः ३५

अन्वयः- शाकोब्दाजनिशाकएवाब्दावत्तराकल्प्याः जनिमध्यमार्कतमूर्ध्वमासादिजन्मकालिकमध्यमार्कस्वरश्यादिकं मासादिः कल्प्यः जन्मशके एवं प्रथमदशाप्रवेशोज्ञेयः द्वितीयस्तुते नवर्षादिना युक्तं दशाब्दाधिकार्यम् दशाब्दाशके पुत्रो ज्येष्ठमासाद्ये दशमासाद्ये योज्ये एवं तत्रशकेऽधस्तमासाद्ये समासादितः रणिर्मध्यमोदशादौ भवेत् एवं तृतीयादिदशादौ मध्यमोरधिज्ञेयः ॥ तात्कालिकमासाद्यानयनंधस्त्रीभूतदशेति दिनीकृतदशापृथक्स्थाप्या एकत्र त्रयोदश १३ क्षिप्रुण्यारवाकाष्ट ९० तिर्मात्कालेन द्विशाद्येन पृथक्स्थाप्युक्ताकार्यात्तदसावनादशास्यात् कदादशाब्दपल्युक्तातदातद्युग्जनिद्युग्ज इतितयादशया युक्तः

जनिद्युत्रजो जन्मकालिका हर्गणः सावयवः सूर्योदय कालिकोऽ हर्गणः
 सूर्योदयादिष्टेन घटी फलेन युक्तस्तदा सावयवः स्यादिति ज्ञावः ॥ स ए-
 व दशाऽ हर्गणः पूर्वोक्त प्रकारेण युतावर्षा दो द्वितीयादि दशा प्रवेशका-
 लिकोऽ हर्गणो भवति ॥ एवं तृतीयादिज्ञेया ॥ ३५ ॥

अर्थ ज्ञापाः

जन्मकालीन शकको प्रथम दशावर्ष युक्त करना और जन्मकालि-
 न मध्यम राश्यादि सूर्यको प्रथम दशाका मासादि राश्यादि मानके युक्त
 करना तो वह दशावर्ष युक्त किया गया शकमें द्वितीय दशारंभमें मध्यम सूर्य
 होता है. प्रथम दशादिवसादि करके पृथक् रखके एक ठिकाने उ-
 सको १३ से गुणके ८९० से भागके जो दिवसादि फल आवेगा सो और
 दशावर्ष तुल्य फल पृथक् रखके अंशमें युक्त करना तो वह प्रथम सा-
 वन दशा होती है. अनंतर वह जन्मकालीन सावयव अहर्गणमें
 युक्त करना. तो द्वितीय दशारंभका अहर्गण होता है.

शकको दशावर्ष युक्त करनेक कालमें सर्वदशा वर्षादि रखना प्रथम
 दशाके नीचे शक रखना और शकके नीचे जन्म कालीन मध्यम सूर्य
 रखना अनंतर सूर्यको प्रथम दशामासादि युक्त करके वर्ष शकमें युक्त
 करना.

उदाहरणम्.

प्रथम सूर्य दशावर्षादि १३।७।२७।१३।२८ इस्के नीचे जन्म का-
 लीन शक १८०८ यह वर्षमें मध्यम सूर्य ०।१३।११।५६ इस्को प्रथम द-
 शामासादि युक्त करके ८।८।२५।२४ और शकमें वर्ष युक्त करके १८२१
 यह शकमें ८।८।२५।२४ मध्यम सूर्य रहते सूर्यदशा पूर्ण होयके लग्न
 दशा प्रवेश भया यही रीतिसे सर्वदशा प्रवेश करना और इसी प्रकार
 से विदशा और उपदशा प्रवेश करना. अथवा स्पष्ट सूर्य और सवत्
 युक्त करना.

दशा प्रवेश चक्रः

सू.	ल.	व.	मं.	शु.	बु.	श.	वृ.	मि.
१८०८	३८२१	१८२८	१८३७	१८३९	१८५३	१८६२	१८७८	१८८४
१९००	२५११	२५१६	२५३०	२५३९	२५५३	२५६२	२५७८	२५८४

अहर्गण करनेकी रीति.

प्रथम सूर्य्यदशा १३।७।२७।१३।२८ यह दिवसादि करके ४९।
 ७।१३।२८ यह पृथक् १३ से गुणके ६३९२३।५५।४ इस्को ८९०
 से भागके लब्धि दिवस ७१ शेष ७३३।५५।४ इस्को ६० से गुणके ४४
 ०३५।४ इस्को ८९० से भागके लब्ध घटिका ४९ शेष ४२५।४ इस्को
 ६० से गुणके २५५०४ इस्को ८९० से भागके लब्धि पल २८ और
 दशावर्षत्पल १३ युक्त करके लब्ध दिवसादि ७१।४९।४१ यह पृ-
 थक् रक्खा. जो दिवसादि दशा ४९१७।१३।२८ इस्में युक्त करके.
 ४९८९।३१ यह प्रथम सावन दशा भई जन्मकालिक अहर्गण जन्म
 कालीन इष्ट घटि सहित ११७८।३२।१ यह सावयव अहर्गण इस्को
 सावन दशा ४९८९।३।९ युक्त करके ६९६७।३५।१० यह बुध दशा
 रंभ समयमें सावयव अहर्गण भया ॥ परंतु जब यह अहर्गण-
 ४०१६ से ज्यादा आवेतव ४०१६ से भागके शेष रहै सो अहर्गण जा-
 नना और लब्धि आवे सो पूर्वमें आया जो चक्र उस्में युक्त करना अव-
 इहां अहर्गण ६९६७।३५।१० यह ४०१६ से अधिक है इस्को ४०१६
 से भागके लब्ध १ शेष २९५१।३५।१० यह अहर्गण भया पूर्वोक्त चक्र
 ३३ में लब्ध १ युक्त करके ३४ चक्र भया.

यह अहर्गणका प्रयोजन माह.

श्लोक-

तस्मात्सावयवाद्गुणात्स्वकरणात्साध्यादशादौरवगाः
 क्षेपाज्जन्मरवगान्त्रकल्पयदिवसाध्यादशासावनात् ॥
 तेष्यष्टाश्रुतिथिश्चसंक्रमवसान्मासोदशादौतनुः पूर्वो-
 क्तजडकर्मचात्रतुभयातल्लाघवं वक्षितम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः- तस्मात्सावयवाद्दुर्गणाद्दशादौ स्वकरणाज्जन्मकाले यस्मात्
 करणाद्गुहाः साधितास्तेन करणेन दशा प्रवेशाद्दुर्गणाद्गुहाः साध्याः
 यदि जन्मरवगान्क्षेपान्त्रकल्पयदिवसाध्यादशासावनात्साधि-
 ताद्गुहाजन्मकालजनिताग्रहे दोष्यास्तदाते दशादौरवगा भवति एवंचरुते
 सावनाद्दशा भवति अस्माद्दुर्गणादानीतोऽर्कः प्राक्जतिन दशा प्रवे-
 शामध्य सूर्य्येण समस्तदोर्गणः शुद्धो ज्ञेयोनान्यथा ॥ ततो दशा
 दोसाधिता चन्द्रार्कभ्यां भक्ताव्यर्क विधोर्लवा इत्यादिना तिथिः सा-
 ध्या मंक्रमवशात्मासो ज्ञेयः शुक्लादि मासेषु यास्मिन्मासे मेप

संक्रांति भवति सचैत्रो मासो ज्ञेय इत्यादि व्यपभादयो ज्ञेयाः दशाप्र-
वेशोलम्न मपिसाध्यं स्वेषु पूर्वेः पूर्वाचार्यैः श्री धराद्यैः सावनी दशानय-
ने जडकर्म महतायासेन कृतमित्यर्थः अतो मया लाघवं दर्शितम्.

अर्थभाषा.

पूर्व कथित सावयव अहर्गणसे जन्म कालमें जिस पक्षके ग्रह
किया होय उसी पक्षसे दशारंभमें ग्रह करना अथवा सावन दशा
तुल्य अहर्गणसे ग्रह करके उसमें जन्म कालीन ग्रह क्षेपक कल्याण क
रना युक्त करना तो वह दशारंभमें ग्रह होते हैं अनंतर वह स्पष्ट क
रना और सूर्य चन्द्रसे तिथी ल्यावना यह केवल पांडित्य यह साव
नी करण पूर्वाचार्यने महान् प्रयाससे किया इसवास्ते वह जड
कर्म है हमने तो उस्का इहां लाघवता कथन किया है.

उदाहरणम्.

लग्न दशारंभमें १८२१ शकमें सावयव अहर्गण २१५१ ३५११०
इस्से जो मध्यम सूर्य आवितो पूर्व सिद्ध दशा प्रवेश मध्यम सूर्य ८।
८।२५।२४ इस्के बराबर होयतो यह अहर्गण शुद्ध है अन्यथा अशु
द्ध ग्रह समजनेके वास्तु पूर्वोक्त रीति प्रमाण सारणीपरसे मध्यम
सूर्य करते हैं अहर्गण २१५१ इस्को ६०से भागके लब्धि ३५
और शेष ५१ यह शेष कोषक इस्के नीचेका सारणीमेका अंक
१।२०।१५।५७ इस्को लब्ध्यंक ३५ इस्के नीचेका राशी छोडके
भागादिअंक ४।२९।४६।० इस्सेसे प्रथमांकको ६ से भागके वा-
की ४ इस्का दुना ८ यह राश्यंक इसवास्ते ८।२९।४६।० यह लब्धि
कोषक फल और चक्र ३४ इस्के नीचेका सारणीमेका अंक
९।१७।४८।४६ और घटी कोषक ३५ और पल कोषक १० इ-
स्के नीचेका अंक ०।०।३४।३० और ०।०।०।१० यह युक्त करके
८।८।२५।२३ यह मध्यम सूर्य पूर्व मध्यम सूर्यके बराबर है.

अथवा दशा सावना अहर्गण ४९८९।३।९ इस्से चक्रांक फल मिल
येविना मध्यम सूर्य ७।२७।१३।२७ इस्को जन्म कालीन मध्यम-
सूर्य ०।११।११।५६ युक्त करके ८।८।२५।२३ यह वर्हा मध्यम-
सूर्य आया यही रीतिसे चन्द्रादि मध्यम करना.

दशा सावना अहर्गणसे मध्यम ग्रह करत बरवत उस्को सारणीमेके
चक्रके नीचेके अंक युक्त करना नहीं कारण उस्को चक्र मंकुत.

तजन्मकालीन ग्रह युक्त करना होता है सूर्य्य मीन राशीको होयके जो सूर्य्य चन्द्रसे चैत्र मासांतकी तिथी आवेतो शकमें एक युक्तकरनातो अहर्गण बराबर आवेगा.

दशारंभसमये स्पष्ट सूर्य्यादि.

इहां पूर्व कथित प्रमाण सारणी परसे दशारंभ दिवसमें प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य्य ८।७।२७।२८ गति ६१।१७ चन्द्र ४।६।१०।२ गति ७३।१।४३ इस्से आई गततिथि ०४ इसवास्ते धनका सूर्य्य रहते पोष कृष्ण पक्ष भया.

अबदशारंभसमयलिखते हैं.

संवत् १९५६ शके १८२१ मेष कृष्ण पंचमी शुक्रवार १५ इहां अहर्गण २१५१ इसादिन सूर्य्योदयके अनंतर घटी ३५ पल १० इस समयमें स्पष्ट सूर्य्य ८।८।०२।०८ चन्द्र ४।११।५३।२२ लग्न ३।२६।२२।१२ कहिये कर्के लग्नमें रवि दशा निवृत्ति समाप्ति और लग्न दशा प्रवृत्ति प्रारंभ भई यही रीतिसे सर्व ग्रहोंकी दशा अंतर्दशा विदशा उपदशा प्रवृत्ति समयमें स्पष्ट सर्व ग्रह और लग्न करके दशापतिसे फलका विचार करना.

सूर्य्यचन्द्रसे तिधिकरणनक्षत्र और योग ल्यावने का प्रकार.

स्पष्ट चन्द्रमेंसे स्पष्ट रविकम करके बाकी रहै उस्का अंश करके उस्को २२ से भागके जो भागाकार आवे वह गततिथि जानना और जो अंशादिक बाकी रहैगा वह युक्त तिथि होगी वह १२ अंश मेंसे कम करके जो बाकी रहै सो भोग्य तिथी जानना अनंतर युक्त तिथि और भोग्य तिथि इनकी विकला करके उस्को क्रमसे ६० से गुणके जो गुणाकार आवे उस्को क्रमसे रविचन्द्र स्पष्ट गतीके अंतर्से विकलासे भागके जो भागाकार घटिकादि आवेगा वही क्रमसे युक्त तिथि और भोग्य तिथी इनकी घटी जानना.

गततिथी जो होय उस्को २ से गुणके ७ से भागदेना और बाकी भागलेना ददववकरणसे तिथीके पूर्वार्धमें करण होते हैं उस्में १ युक्त करेता तिथिके उत्तरार्धमें करण होते हैं अनंतर तिथीकी युक्त भोग्यकी घटीका योग करके उस्को अर्ध करना और उस्मेंसे युक्त घटी कम करेता करणकी घटिका होती है जो तिथीकी युक्त घटि

सुमार ३० से घटिका ऊपर होयतो तिथीकी मुक्त भोग्य घटीमेंसे मुक्त घटी कम करना तो करणकी घटिका होती है कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्धमें शकुनी करण और कृष्णपक्षकी अमावस्याको पूर्वार्द्धमें चतुष्यद करण और उत्तरार्धमें नाग करण और शुद्ध प्रतिपदाको पूर्वार्धमें किंस्तुत्र करण यह स्थिर करण है. करणोंके नाम:-
 १ बालव २ कौलव ३ नैतल ४ गर ५ वणिज ६ तद्रा ७ अथवा विष्ठी अथवा कल्याणी नाम है.

स्पष्ट चन्द्रकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत नक्षत्र जानना और जो बाकी कलादि रहेगा वह गत नक्षत्रके आगेका मुक्त नक्षत्र होता है. वह ८०० से कलामेंसे कम करके जो बाकी रहेगा वह भोग्य नक्षत्र जानना. अनंतर मुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी विकला करके उसको ६० से क्रमसे गुणना उसको क्रमसे चन्द्र स्पष्ट गतीके विकलासे भाग देना जो क्रमसे भागाकार आवे सो घटिकादि आवेगी वह क्रमसे मुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इनकी घटिका जानना.

४ स्पष्ट सूर्य चन्द्रके योगकी कला करके उसको ८०० से भागके जो भागाकार आवे सो गत योग जानना और जो बाकी कलादि रहेगा सो मुक्त योग जया सो ८०० कलामेंसे कम करके जो बाकी रहेगा भोग्य योगके आगेका भोग्य योग जानना. अनंतर मुक्त योग और भोग्य योग इनकी विकला करके उसको क्रमसे ६० से गुणना और जो अनुक्रमसे गुणाकार आवे उसको सूर्य चन्द्रके स्पष्ट गतीके अंक विकलासे भाग देना जो अनुक्रमसे भागाकार आवे वह घटिकादि आवेगे वह क्रमसे मुक्त योग और भोग्य योग इनकी घटिका जानना.

उदाहरणम्.

जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्र १५।२२।३५ इस्मेंसे स्पष्ट रवि १।१३।१२०।१२२ कम करके ८।२२।११।५३ इस्के अंश २६२।११।५३ इस्में अंशको १२ से भागके २१ गत तिथि शेष १०।११।५३ यह मुक्त तिथि ७ शेषको १२ मेंसे कम करके १।१८।७ यह भोग्य तिथि सप्तमी अथवा मुक्त तिथीकी विकला ३६७१३ इस्को ६० से गुणके २२०२।७०० इस्को चन्द्र गति ७७५।१३३ रवि गति ५।०।१६ इस्का अनर ६७३।२९। इस्की विकला १०६०९ इस्से भागके ५६ घटी ३० पल ५६ सप्तमिनीकी मुक्त घटिका नई. अनंतर भोग्य तिथीकी विकला-

६४८७ इस्को ६० से गुणके ३८ ९२२० इस्को स्पष्ट रविचंद्र गति-
के अंतरकी विकला ४०६० ९ इस्से भागके ९ घटी ३८ पल यह
सप्तमीकी भोग्य घटिका भई.

गत तिथि ६ इस्की २ से गुणके १२ इस्को ७ से भागके शेष ५
इसवास्ते सप्तमीके पूर्वार्द्धमें गरकरण और उत्तरार्द्धमें वणिजकर-
ण अवतिथिकी भुक्त घटी ५४।३० और भोग्य घटी ९।३८ युक्त कर-
के ६४।८ इस्में भुक्त घटी ५४।३० कम करके ९।३८ यह गरकरण
की घटिका भई.

चन्द्र ९।५।२२।३५ इस्की कला १६५२२ विकला ३५ इस्को ८००
से भागके २० गत नक्षत्र वाकी ५२२।३५ यह भुक्त नक्षत्र उत्तराषाढ
वाकीका अंककी ८०० से कलामेंसे कम करके शेष २७७।२५ यह
भोग्य नक्षत्र उत्तराषाढ भया.

अव भुक्त नक्षत्रकी विकला ३१३५५ इस्को ६० से गुणके १८८१-
३०० इस्को चन्द्र गति विकला ४३९०३ इस्से भागके ४२ घटी ५१
पल यह उत्तराषाढ नक्षत्रकी भुक्त घटिका भई अनंतर भोग्य नक्षत्र
की विकला १६६४५ इस्को ६० से गुणके ९९८७०० इस्को चन्द्र गति-
की विकला ४३९०३ से भागके २२ घटि ४५ पल यह उत्तराषाढकी
भोग्य घटिका भई.

स्पष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ चन्द्र ९।५।२२।३५ इनका योग ९।१८।
३३।१७ इस्की कला १७३१३।१७ इस्को ८०० से भागके २१ गत योग
वाकी ५१३।१७ साध्य भुक्त योग शेष ८०० सेमेंसे कम करके २८६।
४३ यह साध्य योग भोग्य अव भुक्त योगकी विकला ३०७ ९७ इ-
स्को ६० से गुणके १८४७ ८२० इस्को रवि गति ५८।१४ चन्द्र गति
७३।१४ इनका योग ७८ ९।५७ इस्की विकला ४७३९७ इस्से
भागके ३८ घटि ५८ पल यह साध्य योगकी भुक्त घटिका भई.

अनंतर भोग्य योगकी विकला १७२०३ इस्को ६० से गुणके
१०३९८० इस्को रवि चन्द्रकी स्पष्ट गतिकी विकला ४७३९७ इस्से भा-
गके २१ घटी ४७ पल यह साध्य योगकी भोग्य घटिका भई इस प्रकार
से तिथि नक्षत्र योगकरणकी भुक्त योग्य घटी करना.

इहां जन्मदिनमें भोग्य तिथि नक्षत्र योग इनकी घटिका और ज-
न्म कालीक भुक्त नक्षत्र योग इनकी घटिका युक्त करके जन्म-

समय ३२ घटिकाबराबर मिलते-

श्लोक-

ग्रहदशामें प्रति दिनका चन्द्र फल-

चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्यसुहृदुच्चस्वर्द्धसंस्थोदशाना-
थाधीनवसप्तमोपचयगोदद्याच्छुभानीतिच ॥ य-
स्मिन्नेत्रविधुःसजन्मनितनुस्वार्थादिभावोयदात्त-
त्तदृद्धिकरोथतत्क्षयकरःप्रोक्तेतरस्यानगः ॥ ३७ ॥

अन्वय-

प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृद्भेददुश्चेतस्वांशो भवति चन्द्रस्तदाच पुनर्दशेशात्-
चम नवमसप्तम तृतीय पष्ठदशैकादशस्थानस्थ चन्द्रो भवति ॥ तदाच-
न्द्रः शुभानि दद्यात् एवं शुभ फलप्रदश्चन्द्रो दशायां यस्मिन् भावे वर्तते
सराशिर्जन्मकाले यस्मिन् भावे वर्तते तद्भावं शुभं करोति यदि चन्द्र
राशिस्तनुभावे स्यात् तदा तनु सौरव्यकरः स्यादेवं धनादि भावेषु य-
दि कथिते तरस्थान गच्छदा क्षयकरो हानिकरः स्यात् प्रोक्ते तरस्थान-
स्थायमर्थः चन्द्रः प्राप्तदशेश्वरस्य सुहृदादि स्थानादि तरस्थानगः
वैरिनीचादि स्थित इति.

अर्थभाषा-

जिस ग्रहकी दशा होय उस ग्रहके मित्र ग्रहमें उच्च ग्रहमें वा स्वग्रहमें
होकर दशापतिसे ५।१।७।३।६।१०।११ यह स्थानमें चन्द्र होयतो शुभ
फल देताहैं. सो ऐसी दशामें जिस राशीको चन्द्र होय वह राशिजन्म
कालमें तनु भाव होयतो शरीर वृद्धि कारक वह राशी धन भाव होय
तो धन वृद्धि कारक आय भाव होयतो लाभ कारक और आदि शब्द
से सहज भाव होयतो भ्रातृ सुख सुहृद्भाव होयतो मित्रसुख सुत
भाव होयतो पुत्र सुख रिपु भाव होयतो वैरिनाशकारक जाया भाव
होयतो स्त्रीसुख मृत्यु भाव होयतो मृत्यु नाशकारक धर्म भाव होयतो ध-
र्म भाग्यकारक दशम भाव होयतो कर्म फल कारक व्यय भाव होयतो
व्यय नाशकारक सहजादि भावोंका भ्रातृ सुखादि फल कथन किया
है. तैसाहि पराक्रमादि सुखभां जानना इहां शुभ सूचन कथित है.
इसवास्ते अरि मृत्युव्यह यह भावोंके फल विपरीत जानना पूर्व कथित
स्थानसे इतर स्थानमें कहिये दशेश्वरके शत्रुग्रहमें किवा नीचमें च-
न्द्र होयके दशापतीसे १।२।४।८।१२ अहं स्थानमें होयतो भाव क्षय
फल कारक होनाहै. कहिये दशामें जिस राशीको ऐसा चन्द्र है.

वह राशि जन्मकालमें तनु भाव होयतो शरीर क्लेश कारक धन भाव
होयतो धन हानि कारक यह प्रमाण सहजादि भाव फल योजना क-
रना इहा विपर्यय शत्रु मित्र व्यय भाव होयतो वह भाव शत्रु मृत्यु-
व्यय कारक ही होता है.

दशा फल दशारिष्ट और दशारिष्ट भंग.

श्लोक- } च दृष्यं स्वचरस्य भाव गृह गृह्यो गादिसर्वफलं यो-
ष्यं रुति कृतिर्वलादिह दशायां चायथो वैरियुक् ॥ पापः
पापदशां विशेत्स च विपत्कृताथ तद्भंगदस्तत्काले बल-
वान् स्वयं शुभसुहृद्दृष्टेष्टसहर्गगः ॥ ३८ ॥

अन्वयः

यस्य ग्रहस्य यद्व्यं नाम्नां स्वादित्वादि भाव फलं राशि फलं दृष्टि फलं
योग फलं आदिशब्दादुच्चनीचमूलत्रिकोण रुति कृतिर्जीविका इति
सर्वतस्य ग्रहस्य दशायां बाल्यं बलादि तिस बले यथोक्तं पूर्ण फलं
भयति मध्ये मध्यं हीन बले हीन फलदः अथो यो ग्रहो वैरियुक् शत्रु
धुगिर्यः पापग्रहः पापदशायां विशति अर्थात् पापदशायां पापस्यांतरं
मात्रे सपायो विपत्कृतां हानिकर्ता स्यात् यदि कश्चिद्ग्रहो बलवान् शुभ मि-
त्रेण दृष्टे उपवाग्निपदुर्ग गोवाइष्टाधिकः सतद्भंगदः स्यात् ॥ ३८ ॥

अर्थ भाषा.

जिस ग्रहका जोना आदि द्रव्य और भाव फल राशि फल शत्रु नीच
मूल त्रिकोणादि जीविका कर्म इत्यादि सब फल दशामें वह ग्रह देता है ब-
ल सहश अधिक बली होयतो पूर्ण फल मध्यममें मध्य फल हीन बलमें
न्यून फल होना है. पाप ग्रहोंके दशामें शत्रु युक्त पापग्रहका अंतर आ-
वेतो विपत्कृता भरण जानना परंतु यदि उस समय कोई शुभ ग्रह ब-
ली श्रेयके देखता होय या मित्र ग्रह देखता होय या शुभ मित्रोंके गृहा-
दियगोंमें रहनेवाला ग्रह देखता होय तो भंगकर्ता होता है.

अथा एकवर्ग फल माह.

श्लोक- } खेटस्तरयस्य दृष्टवर्गजफलं पूर्णं शुभं जन्मतन्विन्दो-
र्दृष्टिपुत्रस्य भोज्यस्य सुहृद्वे स्वैत्रिकोणोऽस्तियः ॥
दृष्टमध्यफलं विपर्ययगतस्यानिष्टमप्युत्कटं अस्मि-
न्मृत्यनरं रयस्य च वदं ज्ञाया बलं तवतः ॥ ३९ ॥

अन्वयः

जन्मनितविन्दोः लक्ष्मचन्द्राभ्यामित्यर्थः वृद्धिपु उपचयस्थानेषु ३।६।
 १०।११ स्वभे स्वोच्चं सुहृद्भे स्वमूल त्रिकोणोत्तियो ग्रहस्तस्वयदृष्टक वर्ग
 जफलं शुभं तत्पूर्णं उक्तस्थानान्दि नगृहस्थः शत्रुनीचादिभ्यस्तस्य
 शुभफलं मध्यम अधवा उपचय स्थान रहितः स्वोच्चादिस्थः नस्य
 शुभफलं मध्यमं दुष्टं एवमनुपचय स्थानग्रो ग्रहः शत्रुनाचादिगस्तस्या
 शुभं अप्युत्कट म शुभं स्यादित्यादि मर्व ग्रहस्य षड्वर्ग बलं ज्ञा-
 त्वा तत्पतः फलं वदेत् यथा पूर्ण बल ग्रह पूर्ण शुभा शुभफलं मध्ये म-
 ध्यं हीने हीन मित्यर्थः ॥ ३० ॥

अर्थभाषा.

जो ग्रह जन्मलग्न और जन्मके चन्द्रसे ३।६।१०।११ इस स्थानों में हो
 कर स्वग्रहमें स्वोच्चमें वा स्वमूल त्रिकोणमें होना है उसका अष्टवर्गज फ-
 ल शुभ जानना. अशुभफल स्वल्प जानना और पूर्वस्थानसे भिन्न
 स्थानोंमें अर्थात् १।२।६।५।७।८।९।१२ इन स्थानोंमें होकर शत्रु ग्रहमें
 वा नीच राशीमें रहता है. उसका अष्टवर्गजफल अशुभफल पूर्ण जानना.
 और शुभफल स्वल्प जानना. जन्म लग्नसे और जन्म राशीमें उपचय
 स्थानमें और शत्रु ग्रहमें वा नीचमें जो ग्रह रहता है उसका अष्टवर्गज
 शुभफल मध्यम और अशुभफल किंचिन्म्यून जानना अधवा
 इतर स्थानमें होयके स्वग्रहोच्चादि स्थित रहते अशुभफल मध्यम
 और शुभफल किंचिन्म्यून जानना यह अष्टवर्गजफल प्रहोके षड-
 बल प्रमाण जानना ग्रह पूर्णबल होयतो यथोक्त फल न्यून बल होय
 तो न्यूनफल और अस्तगत होयतो फल नहीं ऐसा जानना.

अथ क्वचिज्जातकफलव्यभिचारे कर्तव्यता माह.

श्लोक-

जीवेत्कापिविभंगरिष्टजडिशूरिष्टं विनाश्रीवते चा-
 द्योब्धः शिशुदुस्तरापिचपरौकाव्ययुनोपयिका ॥ का-
 र्याप्रभनिमित्तपूर्वशकुनैरक्षन्त्यमानंधिया होराज्ञे-
 नसुबुद्धिनाहिवहृद्योदकश्रकालोवली ॥ ४० ॥

अन्वय

कापिक्वचित्स्थले विभंगजोरिष्टमंगरहित इत्यर्थः जीवेत्कापिरिष्टं

विनाश्रीयते इति व्यभिचारः चाद्योब्दः प्रथमोब्दः शिशोर्दुस्तरः प्र-
 सवज्वरादि भयादित्यर्थः तथा ऽ परी द्वितीय तृतीयाब्दो दुस्तरौ दत्त
 जननं यावत् अत एषु त्रिषु वर्षेषु पत्रिकानो कार्या भंगादिकं विचा-
 रयित्वा वर्षत्रय मध्येपि पत्रिका कार्या कैः प्रभ्र निमित्त पूर्व शकुनेः प्र-
 श्ने निमित्त पूर्वे लगे बलोपश्रुत्याद्यै स्तथा शकुनेः शुभ शकुनेः शुभवस्तु
 यदि श्रुति दर्शनं ग इत्यादिभिः शुभं ज्ञात्वा पत्रिका कार्या ॥
 किंकुर्वन्स्वमान रक्षन् गणकने त्यध्याहारः किं विशेषेण होराविज्ञेन
 पुनः सुबुद्धिनाहि यस्मात् उदर्को भावो कालो बली स्यात्
 भाषा अर्थः

कभी कभी अरिष्ट भंग रहते विना बालक जीता है और कभी क-
 भी अरिष्ट योग न रहते भी मरण पावता है ऐसा जातक फल व्यभि-
 चार देखते हैं। तैसा ही प्रथम वर्ष बालक को दुस्तर है और आगे का दो-
 वर्ष यह बालक का दुस्तर है। इस वास्ते ३ वर्ष तक पत्रिका करना नहीं
 कारण भावी फल बहुत प्रकार का है और काल भी दुर्विज्ञेय है। बु-
 द्धिवान गणकने तात्कालिक लग्न बलोपश्रुत्यादि शकुनसे शुभफल
 जानके बुद्धिके योगते अपनी प्रतिष्ठा रखके सर्वदा यह तीन वर्ष में
 और आगे भी जन्म पत्रिका करना।

ग्रंथोपसंहारः

श्लोक }

नंदिग्रामे केशवो विप्रवर्यो यो भूद्धोराशास्त्रसंघं-
 विलोक्य ॥ तेनोक्तेयं पद्धतिर्जातकीया चत्वारिं-
 शहृत्तवद्वासुबोधा ॥ ४१ ॥

अन्वयः

यः केशवो विप्रवर्यो नंदिग्रामे आसीत् तेन होराशास्त्रसंघं विलोक्य
 होराएवशास्त्रं होराशास्त्रं होराशास्त्रं समूहं विलोक्य जातकीया पद्धति
 रूक्ता किं विधिषा चत्वारिंशहृत्तवद्वा पुनः कथं भूता सुबोधा ॥ ४१ ॥

अर्थभाषा

दक्षिण देउ प्रसिद्ध नंदिग्राममें केशव यह नाम करके ब्राह्मण श्रे-
 ष्ठ रहता रहा उसने जातकशास्त्र समूह देखकर उसमें सद्गुक्त असद्गुक्त
 आत्सुक्त बहुमत अस्यमत क्या है इस्का विचार करके चालीस श्लोककी
 मुद्राम ऐसी यह जातक पद्धति रचना किया ॥ ४१ ॥

ग्रंथप्रशंसा माह

श्लोक }

येसुबोधांपठंतीमामश्यांजातकपद्धतिम् ॥
होरावित्पदवीयांतिलोके मानंयशश्चते ॥४२॥

अन्वय-

येगणका इमांसुबोधांजातकपद्धतिंपठंति किंभूतामश्यांतिलोके
होरावित्पदवीयांतिमानंयशश्चलभंत ॥४२॥

अर्थभाषा-

जो ज्योतिषी इस जातक पद्धतीको अध्ययन करेंगे वहलोकमें देव-
ज्ञपदवी और गौरव कीर्ति यशको प्राप्त होंगें ॥४२॥ इति ॥

इतिकेशवीजातकसमाप्तं

चरसारणी प्रवेश पलभा.

मंद स्पष्ट सूर्यको अयनांश युक्त करके उसका भुज करके मु-
जका भाग करना इहां सारणीमें ३० अंशके अंतरसे ३ ठिकाणें ९०
अंश कोषक लिखके वह कोषकके नीचे प्रत्येक अंशका फल
विकलादि लिखाहै. उसमेंसे अभीष्ट अंश होय उसके नीचेका फल
लेके इष्टांशके नीचे जो कला विकला होय उसको अंश कोषकके सा-
मने दहने तरफजो गुणलिखाहै उससे गुणके जो गुणाकार आवे
उसकी गुणके नीचे जो हर लिखाहै उससे भागके जो फल विकला-
त्मक आवे वह लेके पूर्व फलमें युक्त करना तो चर होता है. वह चर
सायन सूर्य नेषादि ६ राशिकी होयतो ऋण और नुलादि ६ रा-
शिकी होयतो धन जानना.

चरसंस्कारसारणी.

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गु०१०	
०	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३२	हर ३	
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०		
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	गु०१०
३५	३७	३९	४२	४४	४६	४९	५१	५३	५६	५८	६०	६३	६५	६७	७०	हर ३
०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	गुण २८	
७१	७३	७५	७७	७९	८१	८३	८४	८६	८८	९०	९२	९४	९६	९८	हर १५	
५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०		
४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गुण २८	
९९	१०१	१०३	१०५	१०७	१०९	१११	११२	११४	११६	११८	१२०	१२२	१२४	१२६	हर १५	
५२	४४	३६	२८	२०	१२	०४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०		
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	गुण २३	
१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	हर ३०	
४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०		
७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	गुण २३	
१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२	हर ३०	
१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०		

उदाहरण.

जन्मकालिक मन्दस्पष्ट रवि ०१३।१२।३ इस्में अयनांशा २२।४४
 १३ यह युक्त करके १।५।५६।६ यह सायन रवि इस्का भुज १।५।५६।६
 इस्के अंश ३५।५६।६ इहां ३५ अंश हैं इसवास्ते ३५ अंशको घक
 का नीचेका विकलादिफल ७।२।२० इस्को अंशके नीचे कला ५६ और
 रविकला ६ है इस्को अंशको घकके सामने गुण २८ है इस्से गु-
 णक १५७०।४८ इस्को गुणके नीचे हर १५ इस्से भागके १०४
 प्रतिकला युक्त करके ८१।४ यह सायन सूर्य वृष राशिको है इस-
 वास्ते ऋग जानना.

बहुविध देशोंकी अक्षजा.

नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.	नगरनाम.	घ.	प.
अलवर	६	१६	कैदार	७	८	जिलौई	५	१६	नाशिक	४	२५
अमदावाद	५	२	कोन्डापुर	३	३०	जवनपुर	५	२०	नागपुर	४	३९
अहमदनगर	५	०	कोराग्राम	४	२५	जंजुतर	४	२०	नागौर	४	२१
अजमेर	५	४५	कौकण	३	१५	जलालाबाद	५	१०	नारनवल	६	१४
अयोध्या	६	७	रुष्णागढ	६	०	जालंधर	६	५१	नेपाल	५	२५
अमरकोट	५	२५	खंभाई	४	५१	जुनागढ	५	३९	नेमिधारण्य	५	५५
अपसरीला	६	१५	खांधार	०	०	जुनेर	५	०	पटियाला	७	१
अवरंगाबाद	४	३०	खमात	४	२१	जोधपुर	५	४०	पंढरपुर	४	०
अप्रपाटण	५	४०	गंगासागर	४	१६	झांसी	५	४३	प्रयाग	५	४२
अजमेर	२	६	गढा	६	६	डेकारा	५	३५	प्रकासा	४	४०
अनिबंग	५	१	गरीराट	५	६	ढोका	५	२७	प्रकाण	४	५
अमृतसर	७	२६	गहीरा	५	४५	टुडा	५	१६	पानिपत	६	२०
आग्रा	६	७	गया	५	२०	ठगनपुर	५	३	पाचप्यी	४	३०
आजमगढ	५	३२	गणशुक्ल	६	४	तेजावरु	२	७	पाडव	५	१
इंदौर	५	३०	गार्जीपूर	५	३५	तरेला	६	३५	पुणे	४	०
इटावा	६	०	ग्यान्हेर	५	५३	ताजपुर	५	४५	मुरुपीतमक्षी	५	४५
उज्जनी	५	६	उवरापुर	५	१०	तलंग	४	४	पुष्कर	५	५२
उचवानगढ	५	१०	पुजरात	४	२०	दरभंगा	५	५३	पैटण	४	३०
उदपुर	५	३०	गोमानक	३	२०	दारमल	५	०	वडावा	४	१६
उकल	५	४३	गोपाल	३	३०	सामनपुर	५	४५	वलसाड	४	४०
उमरावती	४	३४	गोलकुंडा	३	२५	हारका	६	५	वरदान	५	९
अनिकमंदु	२	२५	गोलग्राम	४	०	दिल्ली	६	३६	बन्हाणपुर	४	३०
ओछडा	५	२५	गौरखपुर	६	८	देवगढ	६	४	ब्रह्मपुरी	५	२०
ओट	४	६	गोकुल	५	१५	देवग्राम	४	४०	वजवाडा	६	५७
कलकत्ता	४	५७	धनदेवी	४	४०	दालताबाद	३	३०	वागपुर	४	३५
कपिला	६	१६	चंदेली	५	०	धवरपुर	५	१२	बाणगंगा	४	३०
कटक	४	२८	चाटसुपुर	५	४५	घालक	५	२	वितिया	६	२
कागिक्षेत्र	५	४५	चित्रोड	५	३०	धामोनिगढ	५	१०	विजापुर	३	३५

कानपुर	५	५१	चित्रकूट	५	३०	नवसरी	४	४२	बिकानेर	६	११
काश्मिर	७	५४	छपरा	५	४७	नगरकोट	७	२०	बूढ़ीकोटा	६	२
काविल	८	२०	जयपुर	६	४	नडीघाट	५	२	भविपुर	४	५२
कांची	२	३०	जंबू	७	४०	नरवर	५	४५	भरतपुर	६	१९
कान्यकुब्ज	६	०	जबलपुर	५	८	नयनीताल	६	४५	भृगुक्षेत्र	४	८
कुरुक्षेत्र	६	४६	जगन्नाथ	५	२०	नर्मदा	४	४७	भोजपुर	५	४५
भागलपुर	५	३०	महेस्वर	२	२६	बधवमगर	५	२७	सिंहज	५	०
मकसूदाबाद	५	२४	भूपाल	५	१०	बलघ	८	७	सिंधपुर	४	४०
मंडी	७	२४	रत्नागिरी	३	४१	बटीपुर	४	३	सिंहनद	७	३०
मद्रास	२	४७	रनथंभ	५	३०	बटेश्वर	५	४८	सुरत	४	३९
मगधदेश	६	९	रनद	६	६	बडाल	७	३	सौलापुर	३	४९
मथुरा	६	०	रामेश्वर	१	५८	विजयनगर	४	१२	सौमनाथ	५	३९
महल	६	३६	रामनगर	५	०	बैलगांव	३	२५	सोनपथ	६	४०
माडा	४	५०	राजो	५	३६	बैराठ	६	२७	संगमनेर	४	२०
माडनाचल	४	४७	राजापिल	४	४४	शारंगपुर	४	४६	संभल	६	३
मालपुर	५	२५	राजपुर	५	३०	स्यामगढ	४	२८	संगरपुर	५	१२
मांडवा	५	१	रायपुर	४	३९	शिरोज	४	४८	हस्तिनापुर	६	३०
मालवा	५	३०	राजमहाल	५	२५	शीतपुर	४	२०	हरिद्वार	६	५६
माडोगढ	४	१७	रीवा	५	२८	श्रीनगर	६	४६	हरदा	४	५९
मिथिल	६	८	रेवा	४	४६	खुसा	१०	३	हैद्राबादसिंध	५	४१
मिरज	३	३७	रोड़िन	६	२९	मपाडु	७	१५	हैद्राबादनिजा	३	४३
मिरजापुर	५	२५	रोहिदाबा	५	२८	समसाबाद	६	५०	विलायत लहान	१५	६
मुंबई	४	७	लखनऊ	५	४८	सहस्राव	५	१७	श्रीरंगपट्टण	२	२९
मुलानान	६	४०	लवगपुर	५	३०	सातारा	३	५१	सेतबंधरामि श्वर	२	६
मुंगेरी	५	५६	लक्ष्मवती	५	४८	सागर	५	१८	हस्ती	६	२५
सुरेर	४	३०	लक्ष्मनवास्त	३	१	सावंतवाडी	३	१	पटण	५	४५
मरठा	५	४५	लाहोर	७	१३	सिरी	५	१	तिरेरी	६	१८

लिखे है. उसमेंसे स्पष्ट सूर्य जिस राशिकी होय वह राशिके सामने सूर्य के इलाशकोष्ठके नीचे का कलादि फल लेके उसको नतघटी और पल पश्चिम होयतो युक्त करना और वह घटी ६० से अधिक होयतो उसमें से ६० कम करना और नत घटी और पल पूर्व होयतो लिखाजो अंश फल उसमेंसे कमती करना और वह अंशफलसे अधिक होयतो अंश फलके कलामें ६० युक्त युक्त करके उसमें पूर्वनत घटी पल कमती करना अगंतर जो घटी पल बाकी रहै वह कला और विकला भई अगंतर तन्मित कला विकला सारणामें जिस अंशकोष्ठके नीचे होय वह अंश और कला विकलाके बाये तरफ जो राशी होय वह दशम भावकी राशी जानना. यह सर्व देशोंका मध्यम मान है.

उदाहरणम्.

जन्मकालिक स्पष्टरवि ०१३।१०।४२ यह सूर्य मेषराशिको है इस वास्ते मेषराशिके १३ अंशकोष्ठके फल ५।२८ इसमें जन्मकालिक पश्चिमनत घटी १५ पल ४० युक्त करके २१।८ इहां कला विकला २।१३ यह कर्क राशिके १२ अंशके नीचे लिखा है. इस वास्ते दशम यह ३।१२।२१।८ भया इसमें ६ राशी युक्त करी तो १।१२।२१।८ यह चतुर्थ भाव भया.

अष्टोत्तरी महादशा.

आर्द्रासे प्रारंभ करके मृगशिरतक २८ नक्षत्र और सूर्य चन्द्र जौम-बुध-शनि गुरु राहु शुक यह ८ ग्रहोंका कोष्ठक पृथक् पृथक् किया है उसमें महादशाकी वर्ष संख्या पापग्रह नक्षत्र ४ और शुभग्रह नक्षत्र ३ जानना दशाकी वर्ष संख्या नक्षत्रोंके विभागसे सो. यह सूर्य ४ नक्षत्रकों ६ वर्ष इस वास्ते १ नक्षत्रकी १ वर्ष ६ महिना यह प्रकारका जानना. और जन्म कालिक जो दशा सो प्रथम मानके जन्म नक्षत्रकी जन्म काल तक युक्त घटिका जो होय उसको नक्षत्रके वर्षसे गुणके गुणाकारकी जन्म नक्षत्रका भुक्त भोग्य युक्त करके सर्व घटीसे भागके जो भागाकार आवे सो वर्ष और शेष रहै सो १२ से गुणके पूर्ववद्भागके भागाकार आवे सो मास और शेष रहै सो ३० से गुणके पूर्वप्रमाण भागके भागाकार आवे सो दिवस और शेष रहै सो ६० से गुणके पूर्ववत् भागके भागाकार आवे सो घटी जानना. अनं.

कात्तिकासे मरणीतक २७ नक्षत्र और दशा अंतर्दशा और प्रत्यंत
दशाके अधिपतिके नाम और उनकी वर्षादि संख्या इनके जुड़े जुड़े
कोष्ठक आगे लिखे हैं.

उदाहरणम्.

जन्म नक्षत्र इहां उत्तराषाढ है इसकी संख्या ३१ इसमें २ कम करके
शेष १९ इसमें ८ से भागके शेष १ इसवास्ते सूर्यकी दशा भई अब पू-
र्वाषाढ नक्षत्रकी घटी ४७।३६ इसको ६० में कम करके १२।२४ यह
इसमें इष्टघटी ३२ पल १ युक्त करके ४४।२५ यह भुक्त घटी भई और
अगला नक्षत्र उत्तराषाढ नक्षत्रकी घटी पल ५३।३२ इसमें १२।२४
यह युक्त करके ६५।५७ यह भोग्य भया. अब भुक्त और भोग्य-
की पल क्रमसे २६६५।३९५७ भुक्त पलको सूर्यका वर्ष ६ इससे
गुणके १५९९० इसमें भोग्यकी पलसे भागके लः ४ वर्ष शेष १६२
इसको १२ से गुणके १९४४ यह इसमें भोग्यकी पलसे भागके लः
० मास शेष १९४४ इसको ३० से गुणके ५८३२० यह इसमें भो-
ग्यकी पलसे भागके लः दिन १४ शेष २८२२ इसको ६० से गुणके
१७५३२० इसमें भोग्य पलसे भागके लः घटी ४४ शेष १२१२ इ-
सको ६० से गुणके ७२७२० इसमें भोग्य पलसे भागके लः पल १८
गणं वर्षादि रविदशा ४।०।१४।४४।१८ भुक्त भई अब इसको
सूर्यका वर्ष ६ में कम किया तो १।११।१५।१५।४२ यह भोग्यदशा
भई इसी प्रकारसे दशा विंशोत्तरी करना.

टिप्पण.

जिस दिन जन्म होय उस दिन अथवा वर्ष प्रवेश होय उस दि-
न जो नक्षत्रकी घटी पल अथवा घटी पलसे कमती होय तो
उसी नक्षत्रकी घटी पलको ६० में कम करके दो जघे ररवना एक
स्थानमें इष्ट घटी पल युक्त करना तो भुक्त घटी हो जाय दूसरी
जघा अगला नक्षत्रकी घटी पल युक्त करे तो भोग्य होता है.

दशाकांडाहरणम्.

प्रथमरविदशा वर्षादि भोग्य १।११।१५।१५।४२ इस्के नीचे जन्म कालीन संवत् १९४३ यह वर्षमें स्पष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ इस्को प्रथम दशा मासादि युक्त करके ११।२०।१६।२४ और संवत्में वर्ष युक्त करके १९४४ यह संवत्में ११।२०।१६।२४ यह स्पष्ट सूर्य रहते रवि-दशा पूर्ण होयके चन्द्र दशा प्रवेश भई. यही रीतिसे सब दशा प्रवेश करना तथा अंतर्दशा प्रत्यंतर्दशा करना.

विंशोत्तरी दशा चक्रम्.

०	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	जु.	के.	शु.	प्र.
	१	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	व.
	११	०	०	०	०	०	०	०	०	मा.
०	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	दि.
	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.
	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	प.
३८	३८	३८	३८	३८	३८	२०	२०	२०	२०	सं.
४३	४४	५४	६९	७४	९५	१४	३१	३८	५८	
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	रा.
३३	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	अं.
१०	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	क.
४२	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	वि.

टिप्पण.

अथवा जन्मके दिन वा वर्ष प्रवेशके दिन जो नक्षत्र घटीपल इष्टसे अधिक होयतो पिछला नक्षत्रको ६० में कम करके दो स्थानमें रखकर एक जघे इष्ट युक्त करनातो मुक्त घटिका होती है. दूसरी जघे जन्मका वा वर्ष प्रवेशके दिनका नक्षत्रकी घटीपल युक्त करनातो भोग्य होता है.

चन्द्रमध्येऽन्तर्दशाचक्रम्									चन्द्रमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये दशाचक्र								
चं	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	१	१	१	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	७	६	४	७	६	७	८	६	२५	१७	१०	१०	१७	१२	१७	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चन्द्रमध्ये भौमस्तन्मध्ये वि० च									चन्द्रमध्ये राहस्तन्मध्ये विदशाच								
मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	१	०	१	०	०	१	०	०	२	२	२	२	१	०	०	१	१
१२	१	२०	३	२३	१२	५	१०	१७	२१	१९	२५	१६	१	०	२७	१०	१.
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चन्द्रमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च									चन्द्रमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च								
वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं	रा.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं	रा.	वृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	२	०	२	०	१	०	२	३	२	१	३	०	१	१	२	२
४	१६	८	२०	२०	२४	१०	२०	१०	१५	४५	१५	५	२०	१७	३	२५	१६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	१५	३०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चन्द्रमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च									चन्द्रमध्ये केतुस्तन्मध्ये विदशाच								
बु.	के.	शु.	सू.	चं	मं	रा.	वृ.	श.	के.	वृ.	सू.	चं	मं	रा.	वृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	२	०	१	०	२	२	२	१	०	०	०	१	०	१	०	०
१२	२३	२५	२५	१८	२८	१६	८	२०	१२	५०	१०	१७	१२	१०	२८	१	२८
१५	४५	३०	३०	३०	४५	३०	०	१५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चन्द्रमध्ये मृगुस्तन्मध्ये वि० च									चन्द्रमध्ये सार्व्यस्तन्मध्ये वि० चक्र								
शु.	सू.	चं	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	सू.	चं	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	१	१	२	२	३	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	८	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	१
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	२४	३०	२०	३०	०

राहुमध्ये अंतर्दशा चक्रम्									राहुमध्ये राहुस्तन्मध्ये विदशा च-								
रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
२	२	२	२	१	३	०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	४	४	५	४	१	५	१	२	१
१२	२४	६	१०	१०	०	२४	०	१०	२५	८	३	१०	२६	१२	१०	२१	२६
०	०	०	०	०	०	०	०	०	४०	३६	५४	४२	४२	०	३५	०	४२

राहुमध्ये गुरुस्तन्मध्ये विदशा च-									राहुमध्ये शनिस्तन्मध्ये विदशा च-								
वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	४	४	१	४	१	२	१	४	५	४	१	५	१	२	१	५	४
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	८	१२	२५	२५	२१	२१	२५	२०	३	१६
१२	४०	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	२७	२१	५१	०	१०	३०	५१	५४	४०

राहुमध्ये बुधस्तन्मध्ये विदशा च-									राहुमध्ये केतुस्तन्मध्ये विदशा च-								
बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	४	४	४	०	२	०	१	०	१	१	१	१
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२४	२२	३	१०	१	२२	२६	२०	२०	२३
३०	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	५४	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	२३

राहुमध्ये मृगुस्तन्मध्ये विदशा च-									राहुमध्ये रवित्स्तन्मध्ये विदशा च-								
शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१	३	२	५	४	५	५	२	१६	२७	१०	१०	१	१	१	१	३४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	१२	०	५४	३६	१२	१०	५४	५४	०

राहुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये विदशा च-									राहुमध्ये ज्योतिस्तन्मध्ये विदशा च-								
चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	१	२	२	२	१	३	०	०	१	१	१	१	१	०	०	०	१
१५	१	२१	१२	१५	१६	१	२७	१२	२६	२०	२०	२२	२२	३	१०	१	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	२०

बुधमध्ये अंतर्दशा चक्रम्. बुधमध्ये बुधस्तन्मध्ये विदशाच.

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श
२	०	२	०	२	०	२	२	२	०	०	५	०	०	०	०	०	०
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	४	१	४	१	२	१	४	३	४
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	८	४८	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

बुधमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च० बुधमध्ये मृगुस्त० विदशाचक्रं.

के	शु	र	चं	मं	स	वृ	श	बु	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	२८	१७	२८	२०	२३	१७	२६	१	५	१	२	१	५	४	५	४	१
४८	३०	५१	४५	४८	३३	३६	३१	३४	२०	२१	२५	२८	३	१६	११	२४	२८
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०

बुधमध्ये रावेरस्तन्मध्ये वि० चक्रं बुधमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०

र	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	१	२	२	२	२	२	२	२	२६
४८	३०	५१	५४	४८	३७	३१	५१	०	३०	४८	३०	०	२५	१५	४८	२	३०

शुभमध्ये मीमस्तन्मध्ये वि० च० बुधमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०

म	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	मं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०	२१	१७	२६	२०	२०	१५	३७	२८	४	४	४	४	१	५	१	२	१
४८	१३	३६	३१	३४	४८	३०	५१	४५	४८	२४	२१	३	२३	३०	५४	१६	२३
३०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	४५	३०	०	३०	०	३०	३०	३३

बुधमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च० बुधमध्ये शनिलस्तन्मध्ये वि० च०

रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	३	३	१	४	३	२	१	४	५	४	१	५	१	२	२	१	४	४	४
१८	२५	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	८	८	८
४८	१०	२६	३६	४८	३६	३६	१४	२५	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	१२	१२

केतुमध्ये तर्दशा चक्रम्.								केतुमध्ये केतुरात्मध्ये वि० च०									
के	शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	बु
०	१	०	०	०	१	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	२	४	७	४	०	११	१	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	०	६	०	२७	१०	६	८	२७	८	२४	७	१२	८	२२	१८	२१	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३४	३०	२१	१५	३६	३	३६	१६	४८
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०

केतुमध्ये मृगुस्तन्मध्ये वि० च०								केतुमध्ये श्वेतान्मध्ये वि० च०								
शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	वृ	श	बु
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	०	१	०	२	१	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	२१	५	२४	३	१६	६	२८	६	१०	७	१८	१६	१८	१७	७	२१
०	०	०	०	०	०	०	०	१८	२०	२१	५४	४८	५७	२१	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०	३०

केतुमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये वि० च०								केतुमध्ये भोगस्तन्मध्ये वि० च०								
चं	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	मं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	१२	१	२८	३	२८	१२	५	८	२२	१८	२३	२०	८	२४	७	१२
३०	१५	३०	०	१५	२५	१५	०	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	३०	३०	३०

केतुमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०								केतुमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०								
रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१	१	१	१	०	२	०	१	१	१	१	०	१	०	०	१	
२६	२०	२८	२३	२३	३	१८	१	१४	२३	१७	१८	२६	१६	२८	१८	२०
४२	२४	५१	३३	३	५४	३०	३	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च०								केतुमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च०								
श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२	१	०	२	०	१	०	१	१	०	१	०	०	०	१	१	
३	२६	२३	६	१८	३	२३	२८	२०	२०	२८	१७	२८	२०	२३	१७	२६
१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	३४	१८	२०	५१	४५	४८	३३	२६	३१
३०	३०	३०	०	०	३०	०	०	३०	३०	०	०	०	३०	०	३०	३०

भृगुमध्ये अंतर्दिशा चक्रम्. भृगुमध्ये भृगुस्तन्मध्ये वि० च०

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
३	१	१	१	३	२	३	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	०	०	०	०	०	०	०	०	६	२	३	२	६	५	६	५	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये रविस्तन्मध्ये वि० च०. शुक्रमध्ये चन्द्रस्तन्मध्ये विदुशा

र.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	१	०	१	१	१	१	०	२	१	१	३	२	३	२	१	३	१
०	०	२१	२४	१०	२७	२१	२१	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये मौमस्तन्मध्ये वि० च०. शुक्रमध्ये राहुस्तन्मध्ये वि० च०

मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	३	२६	६	२०	२४	१०	२१	५	५	४	५	५	२	६	१	३	२
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रमध्ये गुरुस्तन्मध्ये वि० च०. शुक्रमध्ये शनिस्तन्मध्ये वि० च०

वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	५	४	१	५	१	२	१	६	६	५	२	६	१	३	२	५	५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	२०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
०	०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्रमध्ये बुधस्तन्मध्ये वि० च०. शुक्रमध्ये केतुस्तन्मध्ये वि० च०

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	१	५	१	२	१	५	६	५	०	२	०	१	०	०	१	२	१
२४	२०	३०	०	२५	२०	३	१६	१३	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	१०
३०	३०	०	०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	३०	३०

इति अंतरप्रत्यंतर.

योगिनी दशाक्रम.

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अक्षर युक्त करके ८ से भाग देना जो पञ्चक १।२।३।४।५।६।७।८ तक रहेगा तत्र क्रमसे मंगला-पिंगला-धान्या-भ्रामरी-भद्रिका-उल्का-सिद्धा-संकटा यह योगिनीके नाम जानना और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्ष संख्या जानना और जन्मनक्षत्रके भुक्तयोगघटीप्रमाण जन्मकालिक दशावर्ष संख्यामें से अष्टोत्तरीमें लिखे प्रमाण मुक्त भोग्य दशा बनावना.

अंतर्दशाक्रम.

दशावर्ष संख्याके दिनकरके उसको ३६ से भागके भागाकार आवेसो दिवस सर्व दशामें मंगला योगिनीकी अंतर्दशा होती है. अनंतर वही भागाकार क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ इस्से गुणितो पिंगलादि योगिनी इनके अंतर्दशादिवस होते हैं. इहां दशाधिपति और दशाअंतर्दशाके नाम उनके वर्षादि संख्या इस्के जुड़े जुड़े कोष्ठक आगे लिखे हैं. यह योगिनी दशाक्रम ३६ वर्षका सो भोगनेके अनंतर पुनः यही लेना.

मंगला मध्ये अंतरम्.							पिंगलामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
१००	२००	१००	१००	१००	२००	२००	२००	१००	२००	२००	२००	१००	२००	१००	२००
३००	३००	१००	१००	२००	३००	३००	३००	३००	३००	२००	३००	३००	३००	३००	३००
धान्यामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							भ्रामरीदशामध्ये अंतर्दशाच.								
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००
भद्रिकामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							उल्कामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								
भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००
सिद्धादशामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							संकटामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								
सिं.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सिं.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००

जन्म पत्रिका लिखनेका क्रम.

प्रथम मंगलश्लोक आशिर्वाद श्लोक रक्षार्थ श्रीरामचन्द्र जन्म कुंडली तथा कृष्णचन्द्र जन्म कुंडली अनंतर संवत् शक अथन क्रमु मास पक्ष तिथि वार नक्षत्र योगकरण दिनमान रात्रिमान इष्टकाल घटीफल इस प्रकारसे जन्म समय लिखना. अनंतर मध्यमादि स्पष्टग्रह और लगे लिखना. अनंतर जन्म कुंडली ग्रहन्धास पूर्वक लिखके संवत्सरादि फल लिखना. अनंतर चन्द्र राशि कुंडली लिखके फल लिखना. नन्वादि द्वादशभावसंधिसहित लिखके ग्रहोका क्षयचय फल लिखना. भाव कुंडली लिखके भावगतग्रहफल और भावस्वामीगतफल और भाव लग्नफल और लग्नस्वामी फल लिखना. सप्तवर्गचक्र फल सहित लिखना. ग्रहोंकी परस्परदृष्टी और भावोंपर ग्रह दृष्टी लिखना. अनंतर षड्गुणकुंडली ग्रहसहित लिखना. नैसर्गिक तात्कालिक पंचधामैत्री लिखना और ग्रह भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थानदिक काल निसर्ग चैष्टा दृग्वल और भावबल भी लिखना. तन्वादि द्वादशभाव विचार फल और ग्रहदृष्टी फल और रिष्टारिष्ट जंगराजयोग राजयोग जंगगादि सुन फा अनफा दुरधराके मद्रुमनाभसयोगादि सप्तवयोग फल और सर्वतोभद्र चक्रसूय्यकालानल चन्द्रकालानल अष्टवर्गादिचक्र. और यमदंष्ट्राचक्र. और फल और रश्मि फल और दीप्तादि और बालादि जागृतादि ग्रहोंकी अवस्थाफल सहित और इष्टकलादि और इष्टकष्ट दृष्टी और इष्टकष्ट बल और चूह दिष्टकष्ट और आयुदीय दशाविभाग फल सहित और दशमि अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फल सहित लिखना. अनंतर विंशोत्तरीदशा फल सहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फल सहित लिखना और योगिनीदशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना.

समाप्त्यर्थः

श्लोकः

जगत्पूर्वेण ईशेन नार नील निवासिना ॥

शृंगिराकेशवां कृत्वा केशवायार्पिता मुदा ॥१॥

कविवंश प्रशंसा स्रग्धरा छन्दः.

आदौ ब्रह्माततो दिग्भिर्जनिकर भवा ब्राह्मणागौहवर्ष्या
स्तन्दारद्वाजगोत्रे प्रथित गुणगणः सुन्दरो लाल युक्तः ॥

आसीत्तस्यापि पुत्री प्रकटसमुदया वासतुर्लब्धकीर्ती
यच्छोडीशील्यादि युक्तं शुभगुणानि च यंभू रिलोकागुणानि ॥१॥

अर्थभाषा: - (अथ कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धरा छन्दसे)

पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दशप्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौडहिज श्रेष्ठ भये तिनके शुभभारद्वाज गोत्रमें विख्यात गुणगुणवान् सुंदरलालजी भये और तिनके पुत्रजो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्ध कीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं. १

श्लोक } शिवदयालु युक् शिवः सहायवान् सुतावुभौ तदीय-
पुत्रतागतौ सुयुग्मकौ तु पंडितौ ॥ महद्गुरीयगौरवो-
कालवाचकावुभौ समापनुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिके यशः २

अर्थभाषा:- ऐसे शिवदयालुजी शिव सहायजी दोनोपुत्र तिनके पुत्र युग्मक जोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये. जो महाभारी गौरववान् और त्रिकालवक्ता ज्योतिर्वित् जिन्होंने पद्मालयाधीश श्रीमन्नेन्द्र सिंह महाराजके राज्यसे बहुत यशकीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया. २

श्लोक } दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतौ महदासकामौ ॥
जनाभिरामो नृपतिप्रधानो ज्योतिर्विदा वासतुरासमानो ॥ ३ ॥

अर्थभाषा:- सो दुर्गा प्रसाद और भवानीसहाय येदोनी पूरिपूर्णकाम भये जो जनोको अभिराम आनंद देनेवाले जो राज्यमें प्रधान मुख्यजोतिषी प्राप्तमान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये.

श्लोक } अथो शिवसहायस्य सुतवितौ महामती ॥
लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

अर्थभाषा:- फिर तिनशिवसहाजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्वित् जगदीशशर्मा पुत्र हैं.

श्लोक } ज्योतिर्विज्जगदीशोसौ जगदीशप्रतोपदम् ॥
केशवाथार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

अर्थभाषा:- ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसाद शर्मनं जगदीश नारायणको तुष्टिप्रसन्नता देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशव भगवान्के अर्थ समर्पण किया. अथवा केशव देवज्ञवर्यकी पुजामें अर्पण किया. यह भी श्लेष है.

श्लोक } त्रिपंचांकेन्दुवर्यसहै क्रमोयेन भास्विते ॥
नृगिरोदाहृतिः पूर्णा पूर्णिमाया रवेर्दिने ॥ ६ ॥

अर्थभाषा:- संवत् १८५३ आषण शुक्ल पूर्णिमारवि वारको शुभभारत्तृमि मण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थ आर्चिकडोलतलवर्तिनन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्याय कुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण सोमनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया. सो सबको सदा सदा सुखवादि देवो.

श्लोक } मंगललेखकानां च पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलसर्वलो-
कानां भूयो भूयोस्तु मंगलं ॥ ७ ॥ मंगलं भगवान् विष्णुमंगल-
गरुडध्वज ॥ मंगलपुण्डरीकाक्षो मंगलायतना हरि ॥ ८ ॥

अथ सूर्यसे लग्नसे इष्टकाल करनेकी रीति

श्लोक-

अर्क भोग्यस्तनो भुक्तकालन्वितो युक्त
मध्योदयोभीष्ट कालो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थ भाषा.

स्पष्ट सूर्यमें अयनांशा युक्त करके उसको राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशी ऊपर होय उसके प्रमाण स्वदेशीय लग्न मानसे गुण के भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांशा युक्त करके उसके ऊपर जो राशी होय उसके प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशीसे सायनसूर्यकी राशी तक लग्नमान स्वदेशीयका ऐक्य करके उसमें भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देना तो इष्टकाल घटी पल स्पष्ट होता है.

टिप्पणी

जो सायन सूर्यकी राशीसे सायन लग्नकी राशी तक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे जब सूधालग्न लेना और सायन लग्नकी राशीसे और सायन सूर्यकी राशी तक लग्नका ऐक्य करे जब उलटा लग्न लेना.

उदाहरण.

स्पष्ट सूर्य ०।१३।१०।४२ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इस्को ३० अंशमें कम करके १।२।४।५।१५ इस्से ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन किया तो १८५ अब लग्न ६।१।४२।२६ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२८ इस्से भुक्त पल साधन किया तो २८ अब सायन सूर्य चष राशीका है इसवास्ते मिथुनकालग्न ३०० कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६८७ इस्में युक्त भोग्य पल युक्त करीतो इस्के ६० का भाग दिया तो लब्ध ३२ शेष ० यह पल पूर्व तुल्य इष्टभया इसी प्रमाणसे सूर्य लग्नसे इष्टकाल करना.

जो सायन सूर्य और सायन लग्न एक राशीमें होयतो इनका अंतर करके उसको सायन सूर्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवे तो पलात्मक अर्भीष्ट काल होता है जो सायन सूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होयतो पूर्व प्रमाण साधन किया जो १० से कम करना तो इष्ट काल होता है.

अथ सर्वतो भद्रचक्रं.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् विख्यातं सर्वतो भद्रसद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठानवात्रचक्रे सुधिया विधेयाः ॥ स्वरक्षेत्राणां दिकमन्त्रलेख्यं प्रसिद्धं भावाच्च मयानिरुक्तम् ॥ २ ॥ अत्र मोतवेन्देऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीष्मतिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वैधेसति विभ्रमे वजंतुः कथं जीवति पंचविदे ॥ ३ ॥ अरण्यकारो रघुपञ्चनंदां भद्रात्कारं श्रवणं विशाखाम् तुलां च विदे दनलक्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं स्वरज्ञः ॥ ४ ॥ वकारभौकारमुकारदास्त्रे स्वातीरकारं मिथुनचक्रन्याम् ॥ तथा भिजित्संज्ञकमंचविदे ब्रह्मक्षीसंस्थो हिनमश्चरेन्द्रः ॥ ५ ॥ कर्कककारं च हरिपकारं चित्रां च पोष्णां च तथा लकारं अकारकं वैश्वभमत्रविदे दलं नभा मंडलं गोमृगस्थः ॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतो भद्रचक्रे सर्वक्षेत्र्यः चिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दद्याद्देधः सफलसौम्यजातोत्यंतकष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यस्मि दक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽत्यभयाति यस्मिन् ॥ काले तस्मिन् मंगलपीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

सर्वतो भद्रचक्रम्.

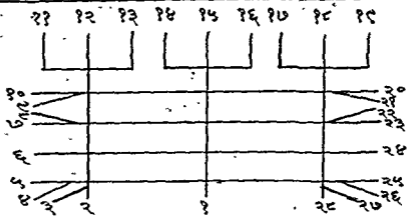
अ.	क.	रा.	घ.	आ.	उ.	पू.	आ.	आ.
म.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	२	३	४	लृ.	म.	पू.
रं.	च.	१	आ.	ने.	ओ.	५	रं.	उ.
उ.	द.	१२	रिं.	पू.	म.	६	प.	ह.
पू.	स.	११	अ.	ज.	अ.	७	रं.	चि.
श.	ग.	ए.	१०	८	८	ए.	त.	स्वा.
ध.	क.	ख.	ज.	म.	य.	न.	क.	वि.
इ.	अ.	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्य.	अ.	इ.

अथ सूर्यकालानलचक्रं.

सूर्यकालानलचक्रं स्वरशास्त्रोदितं हियत् तदहं विशदं वक्ष्ये च मत्कृतिकरं परं म् ॥ १ ॥ त्रिशूलकायाः मरलाश्च तिलः किलोर्ध्वं रेखाः परिकल्पनीयाः ॥ ररेखात्रयमध्यगतत्रयं त्रहेदे च कोणापरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तदुत्तयोः शृंगधुना विधेयम् ॥ मध्यत्रिशूलस्य च दंडमूलात्सत्यं न भान्येकमतोऽतिज्ञेयम् ॥ ३ ॥ स्वनामभयत्रयं च तत्र प्रकल्पनीयं सद्रसफलहितलस्य क्रसत्रितपक्रमेण विन्तावधश्च प्रतिवधनानि ॥ ४ ॥ शृंगहयसुकचमेव हि भृंगशृलेषु मूलं परिकल्पनीयम् शेषेषु धिष्योपुजयश्चलाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुपानयोगाम् ॥ ५ ॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमे तद्देव वादे चरणे प्रयागे ॥ अथ तत्पूर्वननुचिन्तनीयं पुरातनानां वचनप्रमाणम् ॥ ६ ॥ ॥

इति सूर्यकालानलचक्रम्.

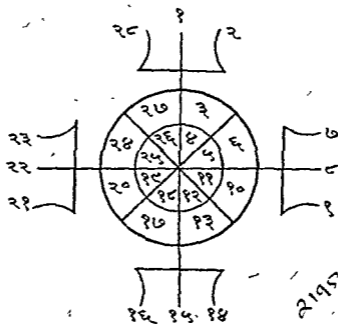
अथसूर्यकालानलचक्र.



अथचन्द्रकालानलचक्रं.

कर्कोटकेनप्रविधायचतुं तस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥ वृत्ताद्द्विहिसं
चलितेविधेयेरेखात्रिशूलाश्चतदप्रकेषु ॥ १ ॥ कोणश्चरेखाद्वितियेनसाध्या
पूर्वत्रिशूलेकिलमध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रेलिरखेन्दुतदनुक्रमेण सव्येनधिष्णा
निवहिस्तदन्ते ॥ २ ॥ कालानलचक्रमिद्विचान्द्रेणप्रयाणादिषुजन्म
भंचेत् त्रिशूलसंस्थनिधनायनूनं अंतर्वहिः स्थंत्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

अथचन्द्रकालानलचक्रम्.



२११७

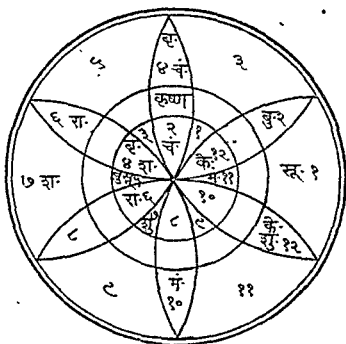
हिमांशोर्भेद्रेऽसुरगुरुरिषोराहुरनुजेऽब्धिगो-
मन्दःपुण्येशिखियुगुशनास्तेऽवनि सुतः ॥ स्वोस्व-
स्थेसौम्येशिवभवनगेमासिमधुकेसितेमध्याह्ने
भूद्रघुवरजनिर्विम्बसुरवदा ॥ १ ॥ ॥

श्लोक-

भाद्रेमासिसितेतेरेवसुतिथौ ब्राह्मेचपेद्रे-विधौ-
लग्नस्थेसशनौशुरोसहजगेम्बुस्थरवोसेन्दुजे ॥
राहौपंचमगेभृगोरिपुगतेभौभेनृपस्थेध्वजेला-
भेरात्रिदलेबभूवकमलाधीशावतारोबुधे ॥ २ ॥

इतिकृष्णाचन्द्रजन्मलग्नम्.

॥ उभयोर्जन्मलग्नम् ॥



॥ इति उभयोर्जन्म लग्नम् ॥

योगिनी दशाक्रम.

जन्मनक्षत्र जो होय उसमें ३ अक्षर युक्त करके ८ से भाग देना जो पञ्चक १।२।३।४।५।६।७।८ तक रहेगा तत्र क्रमसे मंगला-पिंगला-धान्या-भ्रामरी-भद्रिका-उल्का-सिद्धा-संकटा यह योगिनीके नाम जानना और उनकी क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ यह वर्ष संख्या जानना और जन्मनक्षत्रके भुक्तयोगघटीप्रमाण जन्मकालिक दशावर्ष संख्यामें से अष्टोत्तरीमें लिखे प्रमाण मुक्त भोग्य दशा बनावना.

अंतर्दशाक्रम.

दशावर्ष संख्याके दिनकरके उसको ३६ से भागके भागाकार आवेसो दिवस सर्व दशामें मंगला योगिनीकी अंतर्दशा होती है. अनंतर वही भागाकार क्रमसे १।२।३।४।५।६।७।८ इस्से गुणितो पिंगलादि योगिनी इनके अंतर्दशादिवस होते हैं. इहां दशाधिपति और दशाअंतर्दशाके नाम उनके वर्षादि संख्या इस्के जुड़े जुड़े कोष्ठक आगे लिखे हैं. यह योगिनी दशाक्रम ३६ वर्षका सो भोगनेके अनंतर पुनः यही लेना.

मंगला मध्ये अंतरम्.							पिंगलामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								
मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.
१००	२००	१००	१००	१००	२००	२००	२००	१००	२००	२००	२००	१००	२००	१००	२००
३००	३००	१००	१००	२००	३००	३००	३००	३००	३००	२००	३००	३००	३००	३००	३००
धान्यामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							भ्रामरीदशामध्ये अंतर्दशाच.								
धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००
भद्रिकामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							उल्कामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								
भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००
सिद्धादशामध्ये अंतर्दशाचक्रम.							संकटामध्ये अंतर्दशाचक्रम.								
सिं.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सं.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सिं.
१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००	१००
२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००	२००

जन्म पत्रिका लिखनेका क्रम.

प्रथम मंगलश्लोक आशिर्वाद श्लोक रक्षार्थ श्रीरामचन्द्र जन्म कुंडली तथा कृष्णचन्द्र जन्म कुंडली अनंतर संवत् शक अथन ऋतु मास पक्ष तिथि वार नक्षत्र योगकरण दिनमान रात्रिमान इष्टकाल घटीफल इस प्रकारसे जन्म समय लिखना. अनंतर मध्यमादि स्पष्टग्रह और लगे लिखना. अनंतर जन्म कुंडली ग्रहन्धास पूर्वक लिखके संवत्सरादि फल लिखना. अनंतर चन्द्र राशिकुंडली लिखके फल लिखना. नन्वादि द्वादशभावसंधिसहित लिखके ग्रहोका क्षयचय फल लिखना. भाव कुंडली लिखके भावगतग्रहफल और भावस्वामीगतफल और भावलग्नफल और लग्नस्वामी फल लिखना. सप्तवर्गचक्र फल सहित लिखना. ग्रहोंकी परस्परदृष्टी और भावोंपर ग्रह दृष्टी लिखना. अनंतर षड्गुणकुंडली ग्रहसहित लिखना. नैसर्गिक तात्कालिक पंचधामैत्री लिखना और ग्रह भाव सप्तवर्गचक्र और ग्रहोंके स्थानदिक काल निसर्गचैष्टा दृग्बल और भावबल भी लिखना. तन्वादि द्वादशभाव विचार फल और ग्रहदृष्टी फल और रिष्टारिष्ट जंगराजयोग राजयोग जंगगादि सुन फा अनफा दुरधराके मद्रुमनाभसयोगादि संभवयोग फल और सर्वतोभद्र चक्र सूख्यकालानल चन्द्रकालानल अष्टवर्गादिचक्र. और यमदंष्ट्राचक्र. और फल और रश्मि फल और दीप्तादि और बालादि जागृतादि ग्रहोंकी अवस्था फल सहित और इष्टकलादि और इष्टकष्ट दृष्टी और इष्टकष्ट बल और चह दिष्टकष्ट और आयुदीय दशाविभाग फल सहित और दशमि अंतर्दशा और विदशा और उपदशा फल सहित लिखना. अनंतर विंशोत्तरीदशा फल सहित लिखके अंतर प्रत्यंतर फल सहित लिखना और योगिनीदशा अंतर्दशा लिखके फल लिखना अष्टोत्तरी दशा लिखना.

समाप्त्यर्थः

श्लोकः

जगत्पूर्वेण ईशेन नार नील निवासिना ॥
शृंगिराकेशवीरुत्वा केशवायार्पिता मुदा ॥१॥

कविवंश प्रशंसा स्रग्धरा छन्दः.

आदौ ब्रह्मान्तो दिग्भिर्जनिकर भवा ब्राह्मणागौडवर्षा
स्तन्दारद्वाजगोत्रे प्रथित गुणगणः सुन्दरो लाल युक्तः ॥
आसीत्तस्यापि पुत्री प्रकट समुद्रया वासतुल्लब्धकीर्ती
यच्छोडीश्यादि युक्तं शुभगुणानि च यंभू रिलोकागुणानि ॥१॥

अर्थभाषाः - (अथ कविके वंशकी प्रशंसा कही जाती है स्रग्धरा छन्दसे)

पहिले ब्रह्माजी भये तिनसे दशप्रकारके ब्राह्मण भये तिनमें गौडहिज श्रेष्ठ भये तिनके शुभभारद्वाज गोत्रमें विख्यात गुणगुणवान् सुंदरलालजी भये और तिनके पुत्रजो प्रकटित भाग्योदयवाले और लब्ध कीर्तिवान् जिनके सुशीलपन आदिसे युक्त शुभगुणोंका बहुतसे लोग गान कर रहे हैं. १

श्लोक } शिवदयालु युक् शिवः सहायवान् सुतावुभौ तदीय-
पुत्रतागतौ सुयुग्मकौ तु पंडितौ ॥ महद्गुरीयगौरवो-
कालवाचकावुभौ समापनुर्नरेन्द्रसिंहराज्यतोऽधिके यशः २

अर्थभाषा:- ऐसे शिवदयालुजी शिव सहायजी दोनोपुत्र तिनके पुत्र युग्मक जोडीवाले पंडित प्रसिद्ध भये. जो महाभारी गौरववान् और त्रिकालवक्ता ज्योतिर्वित् जिन्होंने पद्मालयाधीश श्रीमन्नेन्द्र सिंह महाराजके राज्यसे बहुत यशकीर्ति तथा महान् आजीवनोदय पाया. २

श्लोक } दुर्गाप्रसादश्च तथा भवानीसहाय एतौ महदासकामौ ॥
जनाभिरामो नृपतिप्रधानो ज्योतिर्विदा वासतुरासमानो ॥ ३ ॥

अर्थभाषा:- सो दुर्गा प्रसाद और भवानीसहाय येदोनी पूरिपूर्णकाम भये जो जनोको अभिराम आनंद देनेवाले जो राज्यमें प्रधान मुख्य ज्योतिषी प्राप्तमान सन्मान अर्थात् भारी प्रतिष्ठित भये.

श्लोक } अथो शिवसहायस्य सुतवितौ महामती ॥
लक्ष्मीनारायणश्चाथ ज्योतिर्विज्जगदीशकः ॥ ४ ॥

अर्थभाषा:- फिर तिन शिव सहाजीके महान् बुद्धिवान् लक्ष्मीनारायण और ज्योतिर्वित् जगदीशशर्मा पुत्र हैं.

श्लोक } ज्योतिर्विज्जगदीशोसौ जगदीशप्रतोपदम् ॥
केशवाथार्पयत्कृत्वा केशवीजातकं स्फुटम् ॥ ५ ॥

अर्थभाषा:- ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसाद शर्मानें जगदीश नारायणको तुष्टिप्रसन्नता देनेवाले इस केशवीजातकको स्फुट अर्थात् प्रकट मनुष्य भाषासे विभूषित करके केशव भगवान्के अर्थ समर्पण किया. अथवा केशव देवज्ञवर्यकी पुजामें अर्पण किया. यह भी श्लेष है.

श्लोक } त्रिपंचांकेन्दुवर्यसहै क्रमोयेन भास्विते ॥
नृगिरोदाहृतिः पूर्णा पूर्णिमाया रवेर्दिने ॥ ६ ॥

अर्थभाषा:- संवत् १८५३ आषण शुक्ल पूर्णिमा रविवारको शुभभारतृप्तमि मण्डलांतर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थ नगरसे पश्चिम कोणस्थ आर्चिकडोलतलवर्तिनन्दग्रामनिवासी भारद्वाज गोत्र उपाध्याय कुलोद्भव ज्योतिर्वित् जगदीश प्रसादका बनाया यह नव्य उदाहरण सो मनुष्य भाषासे विभूषित समाप्त भया. सो सबको सदा सदा सुखवादि देवो.

श्लोक } मंगललेखकानां च पाठकानां च मंगलं ॥ मंगलसर्वलो-
कानां भूयो भूयोस्तु मंगलं ॥ ७ ॥ मंगलं भगवान् विष्णुमंगल-
गरुडध्वज ॥ मंगलपुण्डरीकाक्षो मंगलायतना हरि ॥ ८ ॥

अथ सूर्यसे लग्नसे इष्टकाल करनेकी रीति

श्लोक-

अर्कभोग्यस्तनो भुक्तकालन्वितो युक्त
मध्योदयोभीष्ट कालो भवेत् ॥ १ ॥

अर्थभाषा.

स्पष्टसूर्यमें अयनांशा युक्त करके उसको राशि विना ३० अंशमें कम करके जो राशी ऊपर होय उसके प्रमाण स्वदेशीय लग्न मानसे गुण के भोग्य पल करना और लग्नमें अयनांशा युक्त करके उसके ऊपर जो राशी होय उसके प्रमाणसे भुक्त पल करके फिर लग्नकी राशीसे सायनसूर्यकी राशी तक लग्नमान स्वदेशीयका ऐक्य करके उसमें भुक्त और भोग्य पल युक्त करके ६० से भाग देना तो इष्टकाल घटी पल स्पष्ट होता है.

टिप्पणी

जो सायन सूर्यकी राशीसे सायन लग्नकी राशी तक स्वदेशीय लग्नका ऐक्य करे जब सूधालग्न लेना और सायन लग्नकी राशीसे और सायन सूर्यकी राशी तक लग्नका ऐक्य करे जब उलटा लग्न लेना.

उदाहरण.

स्पष्टसूर्य ०१३१३०१४२ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके १।५।५४।४५ इस्को ३० अंशमें कम करके १।३।४।५।१५ इस्से ऊपरके कहे प्रमाण भोग्य साधन किया तो १८५ अब लग्न ६।१।४२।२६ इस्में अयनांशा २२।४४।३ युक्त करके ७।२।२६।२८ इस्से भुक्तपल साधन किया तो २८ अब सायन सूर्य वृष राशीका है इसवास्ते मिथुनकालग्न ३०० कर्कका ३४६ सिंहका ३५५ कन्याका ३४८ तुलका ३४८ इनका ऐक्य १६८७ इस्में भुक्त भोग्य पल युक्त करीतो इस्के ६० का भाग दिया तो लब्ध ३२ शेष ० यह पल पूर्व तुल्य इष्टभया इसी प्रमाणसे सूर्य लग्नसे इष्टकाल करना.

जो सायन सूर्य और सायन लग्न एक राशीमें होयतो इनका अंतर करके उसको सायनसूर्यके उदयसे गुणके ३० से भाग देना जो भागाकार आवेसो पलात्मक अर्भीष्ट काल होता है जो सायनसूर्यके अपेक्षा सायन लग्न कमती होयतो पूर्व प्रमाण साधन किया जो १० से कम करना तो इष्टकाल होता है.

अथ सर्वतो भद्रचक्रं.

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् विख्यातं सर्वतो भद्रसद्यः
प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥ याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठानवात्रचक्रे सुधिया विधे-
याः ॥ स्वरक्षेत्राणां दिकमन्त्रलेख्यं प्रसिद्धं भावाच्चमयानिरुक्तम् ॥ २ ॥ अत्र मो-
नवेन्देऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीत्यतिथौ निरुक्ता ॥ राशौ च वैधेसति विभ्रमे-
व जंतुः कथं जीवति पंचविद्धे ॥ ३ ॥ अरण्यकारो रघुपञ्चनंदो भद्रात्कारं श्रवणं
विशाखाम् तुलां च विद्धे दनलक्षसंस्थो ग्रहोक्तचक्रे गदितं स्वरज्ञः ॥ ४ ॥ वकार-
रभौ कारमुकारदास्त्रे स्वातीरकारं मिथुनं च कन्याम् ॥ तथा भिजित्संज्ञकं
च विद्धे ब्रह्मक्षी संस्थो हिनमश्चरेन्द्रः ॥ ५ ॥ कर्कककारं च हरिंपकारं चित्रां
च पोष्णं च तथा लकारं अकारकं वैश्वभमत्र विद्धे दलं नभा मंडलं गोमृगस्थः
॥ ६ ॥ एवं वेधः सर्वतो भद्रचक्रे सर्वक्षेत्रैः चिन्तनीयः सुधीभिः ॥ दद्या-
द्देधः सफलं सीम्यजातोत्यंतं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥ यस्मिं दक्षे सं-
स्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽत्यर्थाति यस्मिन् ॥ काले तस्मिन् मंगल-
पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

सर्वतो भद्रचक्रम्.

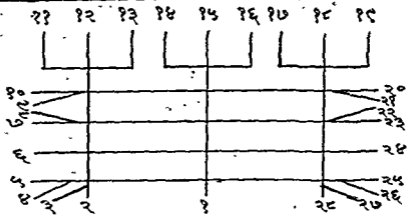
अ.	क.	रा.	घ.	आ.	उ.	पू.	आ.	आ.
म.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	२	३	४	लृ.	म.	पू.
रं.	च.	१	आ.	ने.	ओ.	५	रं.	उ.
उ.	द.	१२	रिं.	पू.	म.	६	प.	ह.
पू.	स.	११	अ.	ज.	अ.	७	रं.	चि.
श.	ग.	ए.	१०	८	८	ए.	त.	स्वा.
ध.	क.	ख.	ज.	म.	य.	न.	क.	वि.
इ.	अ.	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्य.	अ.	इ.

अथ सूर्यकालानलचक्रं.

सूर्यकालानलचक्रं स्वरशास्त्रोदितं हियत् तदहं विशदं वक्ष्ये च मत्कृतिकरं परं मू-
॥ १ ॥ त्रिशूलकायाः मरलाश्च तिलः किलोर्ध्वं रेखाः परिकल्पनीयाः ॥ ररेखात्रय-
मध्यगतं तत्र हेतुकोणापरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणांतरगान्यरेखा तद-
प्रयोः शृंगधुना विधेयम् ॥ मध्यत्रिशूलस्य च दंडमूलात्सत्यं न भान्येकमतोऽ-
तिज्ञेयम् ॥ ३ ॥ स्वनाममयत्रगतं च तत्र प्रकल्पनीयं सद्रसफलं हितलं स्य क्रस-
त्रितपक्रमेण विन्तावधश्च प्रतिवधनानि ॥ ४ ॥ शृंगहयं रुक्चमेव हि भृंगश-
ले मूलं परिकल्पनीयम् शेषे शुधिष्योपुजयश्चलाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहु-
धानयोगाम् ॥ ५ ॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमे तदहं देव वादे चरणे प्रयागे
॥ प्रयत्नपूर्वननुचिन्तनीयं पुरातनानां वचनप्रमाणम् ॥ ६ ॥ ॥

इति सूर्यकालानलचक्रम्.

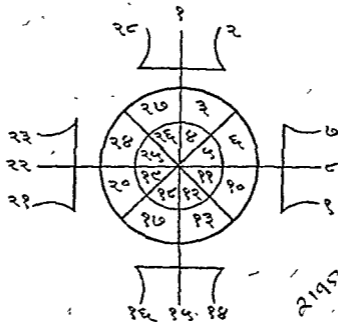
अथसूर्यकालानलचक्र.



अथचन्द्रकालानलचक्रं.

कर्कोटकेनप्रविधायवृत्तं तस्मिंश्चपूर्वापरयाम्यसौम्यैः ॥ वृत्ताद्द्विहिसं-
चलितेविधेयेरेखात्रिशूलाश्चतदप्रकेषु ॥ १ ॥ कोणश्चरेखाद्वितियेनसाध्या
पूर्वत्रिशूलेकिलमध्यसंस्थम् ॥ चान्द्रेलिरखेन्द्वतदनुक्रमेण सव्येनधिष्णा-
निवहिस्तदन्ते ॥ २ ॥ कालानलचक्रमिदं हि चान्द्रेण प्रयाणादिषु जन्म-
भंचेत् त्रिशूलं संस्थं निधनाय नूनं अंतर्वहिः स्थंत्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

अथचन्द्रकालानलचक्रम्.



21953

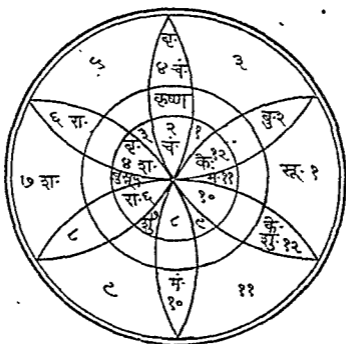
हिमांशोर्भेद्रे ङोऽसुरगुरुरिपौराहुरनुजेऽब्धिगो-
मन्दःपुण्येशिखियुगुशनास्तेऽवनि सुतः ॥ रवौ स्व-
स्थेसौम्येशिवभवनगेमासिमधुकेसितेमध्याह्ने
भूद्रघुवरजनिर्विम्बसुरवदा ॥ १ ॥ ॥

श्लोक-

भाद्रेमासिसिते तरे वसुतिथौ ब्राह्मे चपेद्रे विधौ-
लग्नस्थे सशनौ गुरौ सहजगे म्बुस्थे रवौ सेन्दुजे ॥
राहौ पंचमगे भृगौरिपुगते भौमे नृपस्थे ध्वजे ला-
भे रात्रिदले बभूव कमलाधीशावतारो बुधे ॥ २ ॥

इतिकृष्णाचन्द्रजन्मलग्नम्.

॥ उभयोर्जन्मलग्नम् ॥



॥ इति उभयोर्जन्म लग्नम् ॥